श्रीराम-वन-गमन

के

पावन-पथ पर

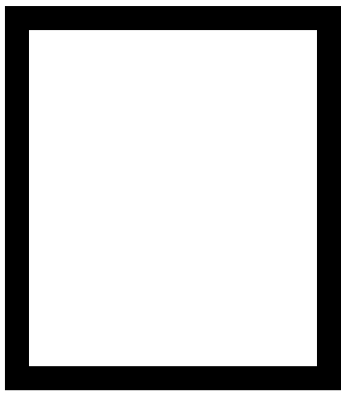

राम सागर शुक्ल

सोपान-सूची

(१) रामो हि विग्रहवान् धर्मः

(२) राम कथा की ऐतिहासिकता

(३) अवध तहां जहं राम निवासू

(४) रामवनगमन के पावन पथ पर

(५) मध्य प्रदेश में श्रीराम

(६) छत्तीसगढ+ में श्रीराम

(७) राम-पथ के मंदिर

(८) श्री रामवनगमन स्थलों की संक्षिप्त सूची

(९) स्वामी रामभद्राचार्य की रामकथा

(१०) रामचरितमानस के प्रक्षिप्त अंश

(११) जौं पांचहि जन लागहु नीका

(१२) तुलसी भक्त कामिल बुल्के

(१३) मानस प्रेमी वाराञ्निकोव

(१४) सन्दर्भ सामग्री

रामो हि विग्रहवान् धर्मः

प्रसन्नताम् या न गताभिषेकतः, तथा न मम्ले वनवास दुखतः।

मुखाम्बुजश्रीरघुनन्दनस्य में, सदास्तु सा मंजुलमंगलप्रदा।।

जिन रघुनाथ जी की मुख की शोभा राज्याभिषेक के समाचार से न तो प्रफुल्लित हुई और न ही वनवास की सूचना से मलिन हुई, वे श्रीराम हमारे लिए सदा मंगलकारी हों। रघुकुल शिरोमणि रघुनाथ की कथा पावन है। जनमन रंजक मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीराम आदर्श पुरुष हैं। वे भारतीय संस्कृति के समस्त श्रेष्ठ तत्वों और मानव मूल्यों के प्रतिमान हैं। दशरथ नन्दन रघुनाथ जी के रूप में मानव धर्म ने स्वयं शरीर धारण किया हो-''रामो हि विग्रहवान् धर्मः

कौशल्यानन्दन श्रीराम धैर्यवान हैं, क्षमाशील है, सत्यवादी हैं, वासनाओं का दमन करने वाले हैं और प्रजा के हित के लिए सर्वस्व त्याग करने वाले हैं। आदि कवि वाल्मीकि ने श्रीराम को इन्ही गुणों से अलंकृत किया है।

इक्ष्वाकुवंशः, प्रभवो रामोनाम जनैः श्रुतः।

नियतात्मा महावीर्यो द्युतिमान् धृतिमान् वशी।।

धर्मज्ञः सत्यसंधश्च, प्रजानाम् च हिते रतः

यशस्वी ज्ञान सम्पन्नः, शुचिर्वश्यः समाधिमान।।

श्रीराम के आलौकिक गुणों के कारण उनके जीवनकाल में ही लोगों ने उन्हें भगवान का अवतार मान लिया था। भारतीय इतिहास के सूत्रकाल तक आते-आते वे निश्चित रूप से ब्रह्म के रूप में प्रतिष्ठित हो गये थे। पाणिनि की अष्ठाध्यायी पर वार्तिक की रचना करने वाले महर्षि आत्यायन ने कहा-

रमन्ते योगिनारे इति रामः। सैष दाशरथि रामः।

अर्थात योगीजन जिनका ध्यान करते हैं वही राम हैं और वही दशरथ के पुत्र भी हैं। वाल्मीकि रामायण से रामचरित मानस तक आते-आते श्रीराम साक्षात्कार ब्रह्म के अवतार में मान लिये गये। तुलसीदास ने भगवान शिव के मुख से कहलाया कि -

राम ब्रह्म व्यापक जग जाना, परमानन्द परेस पुराना।

ब्रह्म अजन्मा है, गोचर है, अतीन्द्रीय है, निर्गुण है, परन्तु संसार के कल्याण के लिए समय-समय पर निर्गुण ब्रहम् ही सगुण रूप में प्रकट होता है।

जब-जब होय धर्म के हानी, बाढ+` असुर अधम अभिमानी।

तब-तब धरि प्रभु विविध शरीरा, हरै कृपानिधि सज्जन पीरा।।

भारतीय आध्यात्मिक चिन्तन के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति का शरीर ही अयोध्या है जहां जीवात्मा के रूप में ब्रह्म प्रकट होता है- 'नवद्वारे पुरेदेही-इन्द्रीद्वार झरोखा नाना।' परन्तु लौकिक रूप में आज से हजारों वर्ष पूर्व पवित्र सरयू के तट पर अयोध्या में राजा दशरथ पुत्र के रूप में

भगवान राम प्रकट हुए। अयोध्या से राम का सम्बन्ध अविच्छिन्न है। श्री राम साक्षात् ब्रह्म हैं इसी आस्था और विश्वास के कारण अयोध्या में आज भी कनक भवन में श्रद्धालुओं को राजा राम के दर्शन होते हैं। राम नवमी के अवसर पर तो अयोध्या जीवन्त हो उठती है। ऐसा लगता है कि राम नवमी के अवसर पर श्री राम पुण्य सलिला सरयू की उत्ताल तरंगों से पुन: प्रकट होकर अयोध्या में विचरण करने लगते हैं। अयोध्या भक्तों को ही नहीं, श्रीराम को भी प्रिय है- ''जन्मभूमि ममपुरी सुहावन। उत्तर दिसि बह सरजू पावन।''

इतिहास के विभिन्न काल खण्डों में, एक से बढ+ कर एक प्रतापी सम्राटों की राजधानी अयोध्या रही है। परन्तु वे सब आज अतीत की गर्त में समाहित हो गये हैं। जबकि श्रद्धालु आज भी अयोध्या में श्रीराम के अस्तित्व का अनुभव करते हैं। राम नवमी के अवसर पर उल्लासमय वातावरण का निर्माण हो जाता है। पूरी अयोध्या राम जन्म की खुशी से झूम उठती है।

श्रीराम का जन्म जिस दिन हुआ, वह चैत शुक्ल पक्ष की नवमी तिथि थी।

नवमी तिथि मधुमास पुनीता, सुकल पक्ष अभिजित हरि प्रीता।
मध्य दिवस अतिसीत न घामा, पावन काल लोक विश्रामा।।
(रामचरित मानस बालकाण्ड)

बाल्यकाल से लेकर जनकपुर में धनुष यज्ञ और जनक नन्दिनी सीता जी के साथ विवाह से सम्बन्धित रामकथा की घटनाओं में कुछ असामान्य नहीं है। यह घटनायें एक क्षत्रिय राजकुमार की वीरता और उसके शौर्य की गाथा हैं। परन्तु राम का लोकोत्तर चरित्र उनके राज्याभिषेक की घोषणा के बाद दिखाई देने लगता है। गृह कलह से परिवार को बचाने और पिता के वचनों की रक्षा के लिए श्रीराम का वन जाने का निर्णय सबको आश्यर्चचकित कर देता है। वास्तव में वनवासी राम द्वारा किये गये कार्यो से ही वे महापुरूषों की श्रेणी में पहुँच जाते हैं। सामाजिक परिवर्तन का जो आन्दोलन देश में बीसवीं सदी में महात्मा गांधी और अन्य लोगों ने शुरू किया, उसका सूत्रपात श्रीराम ने अपने समय में ही कर दिया था। श्रृंगवेरपुर में निषाद राज को गले लगाना, भील नारी शबरी का अस्तित्व स्वीकार करना और वनवासियों को अपनाना- जैसे कार्य श्रीराम को क्रान्तिकारी महापुरूष के रूप में प्रतिष्ठित कर देते हैं। श्रीराम का व्यक्तित्व इतना प्रभावशाली था कि उनके सम्पर्क में आने पर, सामान्य आदमी भी वन्दनीय बन जाता था-

कपटी कायर मुमति कुजाती, लोक बेद बाहेर सब भांती।
राम कीन आपन जबहिं ते, भयऊ भुवन भूषण तबही ते।।
(रामचरित मानस अयोध्या काण्ड)

वनवास का अधिकांश समय श्री राम ने चित्रकूट और आसपास के वनों में बिताया। इस दौरान उन्होंने सामान्य जन ही नहीं अपितु तपस्या के धनी ऋषियों के आश्रमों में जाकर उन्हें राक्षसों से अभयदान दिया। श्री राम ने कहा-

निसिचर हीन करूँ महि, भुज उठाई पन कीन।

सकल मुनिन्ह के आश्रमन्हि जाईजाई सुखदीन।।

शबरी और श्रीराम का प्रसंग अनूठा है। शबरी के मन में शंका थी कि क्षत्रिय राजकुमार राम क्या उन्हें अपनी कृपा का पात्र बनायेंगे। श्रीराम ने उन्हीं शंकाओं का निराकरण करते हुए कहा-

कह रघुपति सुन भामिनि बाता, मानउ एक भगति कर नाता।

जाति पांति कुल धरम बड+ ाई, धन बल परिजन गुन चतुराई।

भगति हीन पर सोहइ कैसा, बिनु जल बारिद पेखिए जैसा।।

श्रीराम के इन्ही लोकोत्तर के गुणों के कारण राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने कहा- 'हे राम तुम्हारा चरित स्वयं ही काव्य है। कोई कवि बन जाय सहज सम्भाव्य है।' वाल्मीकि रामायण से रामकथा की जो सरिता प्रवाहित हुई, उसने सभी भारतीय भाषाओं के कविओं को राम कथा लिखने के लिए प्रेरित किया। धीरे-धीरे राम कथा एशिया के अन्य देशों में फैल गयी जिसके प्रमाण आज भी उपलब्ध हैं।

श्रीराम का व्यक्तित्व सार्वदेशिक और सार्वजनीय है। वास्तव में यह भारत राष्ट्र का चरित है। तभी तो अल्लामा इकबाल ने कहा-

है राम के वजूद पर हिन्दोस्तां को नाज+
अहले नज+ र कहते हैं उनको इमामे हिन्द।।

श्रद्धालु की दृष्टि में अयोध्या में श्रीराम जन्म की घटना एक बार नहीं हुई है। रामजन्म हर कल्प में होता है। इतना ही नहीं, मनुष्य सच्चे हृदय से श्रीराम को जब भी पुकारता है वह प्रकट हो जाते हैं।-

हरि व्यापक सर्वत्र समाना, प्रेमते प्रगट होई हम जाना।।

महर्षि वाल्मीकि ने भविष्यवाणी की थी, कि जब तक पृथ्वी पर पहाड+ हैं और नदियां हैं, तब तक राम कथा लोगों में विद्यमान रहेगी। यही कारण है कि राम नवमी के अवसर पर अयोध्या में श्रद्धालुओं को श्री राम के अस्तित्व का अनुभव होता है-

राम नमामि नमामि नमामी।

अस्तु।

,,,,,,,,,,,,,,,,,,,

रामकथा की ऐतिहासिकता

बहुत प्रचीन काल से रामकथा जन के मन में बसी हुई है। यहां तक कि जो लोग नास्तिक है, भगवान को नहीं मानते है वे भी श्रीराम के उदार और आदर्श चरित्र के प्रशंसक है। दूसरे धर्मो के लोग भी श्रीराम का सम्मान करते है, और रामकथा की प्रशंसा करते है। वाल्मीकि रामायण की रचना के पहले से ही रामकथा पीढ+ी दर पीढ+ी भारतीय समाज में घुल मिल गई है। विदेश में भी रामकथा लोकप्रिय हैं। यही कारण है कि वाल्मीकि रामायण और रामचरित मानस का विश्व की सभी प्रमुख भाषाओं में अनुवाद किया गया। इसके अलावा रामकथा पर आधारित हजारों रचनायें की गई। इस तथ्य के बावजूद आज भी ऐसे लोगों की कमी नहीं जो रामकथा को कपोल कल्पित मानते हैं। उनकी राय में भगवान श्रीराम नाम के व्यक्ति का कभी जन्म नहीं हुआ था और पूरी रामकथा कवियों की कल्पना है।

इस प्रकार का भ्रम पैदा करने में हमारे देश के कथा वाचकों और प्रवचन देने वालों का योगदान कम नहीं। हालांकि कुछ लोगों को यह बात अटपटी लगेगी। परन्तु गंभीरता से विचार करने के बाद यह बात स्पष्ट हो जायेगी, कि रामकथा की व्याख्या करने वालों की व्याख्या भी रामकथा की ऐतिहासिकता पर प्रश्न चिन्ह लगाती है।

रामकथा के मूर्धन्य कथाकार पं० राम किंकर उपाध्याय का प्रवचन सुनने के बाद यही लगता है कि रामकथा ऐतिहासिक नहीं है। रामकिंकर जी की व्याख्या इतनी उत्तम कोटि की होती थी, कि उसे सुनने के लिए लाखों की संख्या में लोग जुटते थे। इतनी अनुपम व्याख्या रामकथा की, कोई और नहीं कर सकता। उनका प्रवचन सुनने के बाद यही लगता है कि रामकिंकर जी वाल्मीकि और तुलसीदास से भी अधिक महान व्यक्ति थे। रामकिंकर जी ने पूरी रामकथा को एक आध्यात्मिक कथा बनाकर प्रस्तुत किया। उनकी रामकथा के राम ब्रह्म के अवतार हैं। साक्षात परमेश्वर है। रावण अहंकार का प्रतीक है। लक्ष्मण जी वैराग्य है। विभीषण जीव का प्रतीक है। मेघनाथ काम का प्रतीक है। शबरी भक्ति है। भरत प्रेम के प्रतीक है। इसी प्रकार मानस के सभी पात्र किसी न किसी मानवीय गुण अवगुण के प्रतीक है। रामकथा की इस प्रकार की व्याख्या से श्रोता प्रभावित तो होता है और राम किंकर जी की विद्वत्ता स्थापित होती है, परन्तु इस प्रकार की व्याख्या से रामकथा की ऐतिहासिकता पर प्रश्न चिन्ह लग जाता है। मैं स्वयं, जब कभी अवसर मिलता था, सारा काम छोड+ कर रामकिंकर जी का प्रवचन अवश्य सुनता था। उनका प्रवचन सुनने में बड+ा आनन्द मिलता था। इसी प्रकार अन्य प्रवचन देने वाले भी करते हैं। कुछ लोग तो गीत, संगीत यहां तक कि फिल्मी गीतों का सहारा लेकर रामकथा पर प्रवचन करते हैं और उन्हें सुनने के लिए हजारों, लाखों की संख्या में लोग इकट्ठे होते हैं। कुल मिलाकर रामकथा धर्म का व्यवसाय करने का माध्यम बन गई है।

भारत में विद्वानों की इसमें कम रूचि है कि रामकथा के प्राचीनतम स्रोत, वाल्मीकि की रामायण में कितनी मौलिक रचना है और कितनी प्रक्षिप्त। यह कार्य विदेशी विद्वानों ने किया। वाल्मीकि रामायण संस्कृत में है। इसलिए आम आदमी इसे कम ही पढ+ ता है। परन्तु तुलसीकृत रामचरितमानस तो अवधी में हैं। यह पुस्तक हर घर में पाई जाती है। अब यह तय हो गया है कि रामचरित मानस में कपितय ऐसे प्रसंग और चौपाइयां है, जिन्हें तुलसीदास की रचना नहीं माना जाता है। उदाहरण के तौर पर सभी विद्वान इस पर एकमत है कि लवकुश काण्ड तुलसीदास का लिखा हुआ नहीं है।

रामकथा पर प्रवचन देकर धन और यश कमाने वाले तो बहुत है, परन्तु किसी भी कथाकार को मैने विवादित प्रसंगों पर प्रवचन देते हुये नहीं सुना। उदाहरण के तौर पर रामचरितमानस के

बालकाण्ड में पार्वती के मुख से कहलाया गया है कि महिलाओं को रामकथा सुनने का अधिकार नहीं है-Þयदपि जोषिता नहीं अधिकारीß

परन्तु कोई भी कथावाचक इस शास्त्र वाक्य का पालन नहीं करता। सच्चाई तो यह है कि रामकथा सुनने वालों में महिलाओं की संख्या पुरूषों से अधिक होती है। कथा वाचकों को चाहिये कि वे रामकथा के उन प्रक्षिप्त प्रसंगों का खण्डन करें जिससे भगवान राम, वाल्मीकि और तुलसीदास की प्रतिष्ठा पर आंच आती है। शायद कथा वाचकों को यही सुविधाजनक लगता है कि रामकथा की ऐतिहासिकता संदिग्ध बनी रहे। परन्तु रामकथा ऐतिहासिक है। यह एक ध्रुव सत्य है।

लखनऊ में न्यायमूर्ति हरिनाथ तिलहरी के पास भारतीय संविधान की मौलिक प्रति है। इसमें श्रीराम के अलावा देश के कई महापुरूषों यथा गुरूगोविन्द सिंह, शिवाजी, राणा प्रताप के चित्र अंकित है। अगर श्रीराम कल्पित पात्र होते तो इनका चित्र भारतीय संविधान के पृष्ठों पर अंकित नहीं किया जाता। श्रीराम के आदर्श चरित्र से प्रेरित होकर प्रख्यात समाजवादी चिन्तक डॉ० राम मनोहर लोहिया ने चित्रकूट में रामायण मेला का आयोजन प्रारम्भ किया, जो अब भी हर वर्ष आयोजित होता है।

रामकथा की ऐतिहासिकता के प्रमाण की बात का क्या कहें, रामचरितमानस के रचयिता गोस्वामी तुलसीदास के जीवन के बारे में भी पर्याप्त प्रमाण उपलब्ध नहीं है। यहां तक कि उनके हाथ की लिखी मानस की कोई पाणुलिपि भी मौजूद नहीं हैं। इस हिसाब से तुलसीदास की ऐतिहासिकता भी सन्देह के घेरे में आ जाती है। परन्तु यह सच है कि तुलसीदास हुये थे और उन्होंने ४४० वर्ष पहले रामचरितमानस की रचना की थी। इसके लिये एक ही प्रमाण है और वह है रामचरितमानस।

इतिहासकार रामायण को ऐतिहासिक ग्रंथ नहीं मानते है। उनके अनुसार राम ऐतिहासिक पुरूष नहीं हैं उनके अनुसार श्रीराम बहुत प्राचीनकाल से हमारी सामूहिक चेतना के अंग है। अत: इस कारण से भी उनकी ऐतिहासिकता सिद्ध नहीं की जा सकती। अभी तक वे एक पौराणिक चरित्र हैं। पुराणों में भी इतिहास के तथ्य दिये हुए हैं, परन्तु उस तथ्य को भी सिद्ध करने के लिए सबूत नहीं है। इतिहासकारों को रामकथा की ऐतिहासिकता सिद्ध करने के लिये उस समय के भवनों के अवशेष तथा अन्य पुरातात्विक सबूत चाहिये, जो अभी तक नहीं मिले हैं।

'डेट्स एण्ड लाइफ ऑफ राम' पुस्तक के लेखक पुष्कर भटनागर का विचार है कि अगर हमें इस तरह के सबूत नहीं मिलते हैं तो क्या हम कह सकते है कि श्रीराम काल्पनिक चरित्र है और रामकथा ऐतिहासिक नहीं हैं। उन्होंने कहा है कि अब समय आ गया है कि इस बात पर विचार किया जाये कि अगर रामकथा जैसी घटना के बारे में पुरातात्विक सबूत नहीं हैं, तो उसे काल्पनिक मानना

उचित होगा या नहीं। इधर सितम्बर २००९ में सेतु समुद्रम परियोजना के निर्माण के खिलाफ उठाई गई आपत्तियों के सिलसिले में, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग ने उच्चतम न्यायालय में हलफनामा देकर रामकथा की ऐतिहासिकता पर प्रश्न चिन्ह लगा दिया।

+ रामकथा की ऐतिहासिकता के बारे में गोस्वामी तुलसीदास ने रामचरितमानस में जो संकेत दिया है वह सत्य प्रतीत होता है। उत्तरकाण्ड में कागभुसुंडि गरूण संवाद के अन्तर्गत कौवे का शरीर धारण करने के बारे में पक्षिराज गरूड+ द्वारा पूछे गये प्रश्न के उत्तर में कागभुसुंडि ने वह सारा वृतान्त सुनाया, जिससे उन्हें कौवे का शरीर धारण करना पड+ ।।

इहां बसत मोहि सुनहु खगेसा

बीते कलप सात अरू बीसा।।

जब जब अवधपुरी रघुवीरा।

धरहिं भगत हित मनुज सरीरा।।

तब तब जाइ रामपुर रहऊँ।

सिसुलीला विलोकि सुख लहऊ।।

(मानस उत्तरकांड दोहा ११३ चौपाइ १० और १२)

तात्पर्य यह है कि प्रत्येक कल्प में त्रेतायुग में, भगवान श्रीराम का अवतार होता है। इस पृथ्वी पर वर्तमान में २८वां कलयुग चल रहा है। २८ बार त्रेतायुग बीत चुका है। इसका मतलब यह है कि भगवान राम का जन्म इस पृथ्वी पर एकबार नहीं अपितु २८ बार हो चुका है। हमारी पृथ्वी की उम्र लगभग १२ करोड+ २५ लाख ४५ हजार वर्ष हो चुकी है। यह संख्या कपोल कल्पित नहीं। आज के वैज्ञानिक भी पृथ्वी की उम्र लगभग इतनी ही बताते है।

वैज्ञानिकों का यह भी कहना है कि एक निश्चित अन्तराल पर पृथ्वी पर हिमयुग आता है, सब कुछ समाप्त हो जाता है। हिमयुग की समाप्ति के बाद फिर सृष्टि प्रारम्भ होती है। वैज्ञानिकों के अनुसार इस प्रकार का हिमयुग कम से कम १० बार बीत चुका है। इस प्रकार रामकथा की ऐतिहासिकता सिद्ध करना इतिहासकारों के वश की बात नहीं।

कबीरदास ने भी राम शब्द का प्रयोग किया है। परन्तु उनके राम निर्गुण राम है। कबीरदास को भी यह पता था कि Pचन्दा मरिंहै, सूरज मरिंहै, मरिंहै जगत संसाराß। चाँद और सूरज के मरने

की घटना एकाध दिन में तो होती नहीं है। कबीरदास को यह विज्ञान कहां से मिला। वैज्ञानिक इस बात का प्रमाण कहां से लाते हैं और कहते हैं कि हमारा सूरज एक दिन समाप्त हो जायेगा। इस तरह की वैज्ञानिक घोषणाओं पर हम विश्वास कर लेते हैं, परन्तु जब राम की बात आती है तो हम रामकथा की ऐतिहासिकता पर संदेह करते हैं।

कई विद्वानों ने ज्योतिष और खगोल शास्त्र के आधार पर श्रीराम को ऐतिहासिक महापुरूष सिद्ध करने का प्रयास किया है। टाइम्स ऑफ इण्डिया में प्रकाशित एक लेख में लेखक सौरभ क्वात्रा ने वाल्मीकि रामायण में श्रीराम जन्म के समय पर नक्षत्रों की स्थिति के आधार पर रामकथा की विभिन्न घटनाओं की तिथि निर्धारित की है। वाल्मीकि का उल्लेख करते हुए क्वात्रा ने लिखा है कि श्रीराम का जन्म उत्तरायण चैत्र मास शुक्ल पक्ष नौमी तिथि पुर्नवसु नक्षत्र सोमवार को कर्क लग्न में हुआ था। उस समय आकाश में ग्रहों की स्थिति इस प्रकार थी। सूर्य मेष राशि में, १० डिग्री पर। मंगल कैप्रिकार्न राशि में २८ डिग्री पर, वृहस्पति कर्क राशि में ५ डिग्री और शनि तुला राशि में २० डिग्री पर थे। नक्षत्रों का यह संयोंग मानव इतिहास में एक ही बार हुआ है। इसके आधार पर कहा जा सकता है कि श्रीराम का जन्म चार दिसम्बर ७३२३ वर्ष ईसा पूर्व हुआ था।

क्वात्रा ने वाल्मीकि रामायण के आधार पर रामकथा की अन्य घटनाओं की तारीखें इस प्रकार दी है।

श्रीराम जन्म- ४ दिसम्बर ७३२३ ई.पू.

राम विवाह- ७ अप्रैल ७३०७ ई.पू.

राम वनवास- २९ नवम्बर ७३०७ ई.पू.

हनुमान का लंका प्रवेश- एक सितम्बर ७२९२ ई.पू.

हनुमान सीता भेंट- २ सितम्बर ७२९२ ई.पू.

राम सेतु निर्माण- २६-३० अक्टूबर ७२९२ ई.पू.

युद्ध प्रारम्भ- ३ नवम्बर ७२९२ ई.पू.

कुंभ कर्ण मृत्यु- ७ नवम्बर ७२९२ ई.पू.

रावण वध- १५ नवम्बर ७२९२ ई.पू.

राम की वापसी- ६ दिसम्बर ७२९२ ई.पू.

बर्कले विश्व विद्यालय के संस्कृत विभाग के प्रोफेसर आर.पी. गोल्डमैन ने एक व्याख्यान में कहा कि रामायण की कथाओं पर अविश्वास करने का कोई कारण नहीं है। इससे पहले भारत में भी नागोजी भट्ट, गोविन्द राज, महेश्वर तीर्थ, सत्यतीर्थ और माधव योगेन्द्र जैसे भारतीय विद्वानों ने प्राचीन भारतीय कथाओं को विज्ञान की कसौटी पर कसने की कोशिश की थी। (अमर उजाला कानपुर- २८.१०.२००४)

भारतीय राजस्व सेवा की एक वरिष्ठ अधिकारी सरोज बाला ने, जो अब सेवा निवृत्त हैं, दैनिक जागरण में तीन नवम्बर २००७ को प्रकाशित एक लेख में बताया है कि भारतीय राजस्व सेवा के ही एक अधिकारी पुष्कर भटनागर ने अमेरिकी अन्तरिक्ष एजेंसी नासा द्वारा विकसित एक साफ्टवेयर की सहायता से वाल्मीकि रामायण में दी गई ग्रहों की स्थिति के आधार पर रामकथा की तिथियों का निर्धारण किया है। उन्होंने वाल्मीकि रामायण बालकांड सर्ग १८ के ८वें और ९वें श्लोक की सहायता से निश्चित किया कि श्रीराम का जन्म दस जनवरी ५११४ ई.पू. हुआ था। इससे पहले सौरभ क्वात्रा ने रामजन्म की तारीख ४ दिसम्बर ७३२३ ई.पू. निश्चित की है।

दिल्ली प्रदेश भारतीय इतिहास संकलन योजना समिति के तत्कालीन अध्यक्ष पं० रघुनन्दन प्रसाद शर्मा ने (दैनिक जागरण लखनऊ ३०.१२.२००३) माना है कि श्रीराम का जन्म वैवस्वत मन्वन्तर के २७वें त्रेता में होने पर ५२ लाख वर्ष होते है। अगर उनका जन्म २७वें त्रेता के २३वें मन्वन्तर में हुआ तो उनका जन्म २२५ लाख वर्ष पूर्व हुआ होगा। शर्मा जी ने सुप्रसिद्ध विद्वान पी. एन.ओक की पुस्तक 'भारतीय इतिहास की भयंकर भूलें' का उल्लेख किया है। अयोध्या में प्रोफेसर बी.बी.लाल द्वारा खोदाई के बाद मिली पुरातात्विक सामग्री के आधार पर इस शहर को २७०० वर्ष पुराना माना है। इतना ही नहीं श्रीकृष्ण की द्वारका में पुरातत्व के आधार पर इसे १४०० ई.पू. माना गया। इसी आधार पर कुछ चिद्वान यह कहते है कि श्रीराम का काल श्रीकृष्ण के बाद आता है। परन्तु इलाहाबाद हाईकोर्ट के आदेश पर की गई खोदाई के बाद रामजन्मभूमि को ३५०० ई.पू. पूर्व का नगर माना गया। पुराणों के अनुसार श्रीराम के बाद सारी अयोध्या जलमग्न होकर नष्ट हो गई। वर्षो बाद विक्रमादित्य द्वारा इसे फिर आबाद किया गया। इसके पहले यहां जैन तीर्थकर भी राज्य कर चुके थे। ऐसी परिस्थिति में श्रीराम के समय की पुरातात्विक सामग्री यहां मिलने का प्रश्न ही नहीं उठता है। प्रोफेसर कानूगो के अनुसार श्रीराम का जन्म ईसापूर्व ग्यारह अप्रैल ४४३३ वर्ष को हुआ था। (रामकथा के मंदिर पृष्ठ १२)

नागपुर के तत्कालीन पुलिस आयुक्त और भाजपा के वर्तमान सांसद डॉ० सत्यपाल सिंह ने एक शोध पत्र में मर्यादा पुरुषोत्तम राम की ऐतिहासिकता पर विस्तार से विचार किया है। उन्होंने ज्योतिष के आधार पर डॉ० पुष्कर भटनागर द्वारा रामकथाओं की तिथियों के निर्धारण से असहमति

व्यक्त की है। डॉ०सत्यपाल सिंह कहना है कि पुष्कर भटनागर ने नक्षत्रों की स्थिति पर कम्प्यूटर की सहायता से रामजन्म की तारीख १० जनवरी ५११४ ई.पू. निर्धारित की है। यह अवैज्ञानिक है, क्योंकि नक्षत्रों की यह स्थिति हर २६००० वर्ष बाद फिर पहले जैसी हो जाती है। अत: श्रीराम का जन्म राशियों के किस चक्र में हुआ, कहा नहीं जा सकता है। डॉ० सत्यपाल सिंह ने पुराणों का साक्ष्य देते हुए कहा है कि श्रीराम का जन्म वर्तमान चतुर्यगी, जो २८वीं है, के त्रेतायुग में हुआ। भारतीय काल गणना के अनुसार कलियुग ४३२००० वर्ष, द्वापर ८६४००० वर्ष, त्रेता १२९६००० वर्ष और सतयुग १७२८०० वर्ष का होता है। इस हिसाब से श्रीराम का जन्म ८६९१०८९ वर्ष पहले होना चाहिए। कुछ इसी प्रकार की गणना नागपुर के पास रामगिरि आश्रम पर दी गई है।

इलाहाबाद स्थित राज्य पाण्डुलिपि संग्रहाय में मुझे 'कूमायूं डायरी' नामक एक पाण्डुलिपि देखने को मिली। इसमें रघुवंश के नाम से विख्यात राजवंश के प्रथम राजा ज्योति स्वरूप भगवान सूर्य को बताया गया हैं। रघुवंश में सूर्यवंश की वंशावली में भगवान राम को ६४वें नम्बर पर बताया गया। सत्यकेतु विद्यालंकार ने अपनी पुस्तक 'प्राचीन भारत का वैदिक युग' में बताया कि इक्ष्वाकु की पीढ+ी में मांधाता हुये। इसी वंश में ३१वीं पीढ+ी में राजा हरिश्चन्द्र, ४१वीं में सगर, ४५वीं में भगीरथ, ६० वीं पीढ+ी में दिलीप और ६५वीं पीढ+ी में श्रीराम हुये। इक्ष्वाकु का उल्लेख ऋग्वेद में आता है। सुप्रसिद्ध विद्वान पं० हृदयनारायण दीक्षित ने प्रति पीढ+ी १०० वर्ष की मानते हुए श्रीराम का समय अपने वंश के प्रारम्भ होने से ६५०० वर्ष बाद माना है। अब राम का जन्म आज से कितने वर्ष पूर्व हुआ इसका निर्णय दीक्षित जी ने पाठकों पर छोड+ दिया है। परन्तु उन्होंने अपने लेख में यह सिद्ध करने में सफलता पाई है कि श्रीराम ऐतिहासिक पुरुष थे।

डॉ० सत्यपाल सिंह ने अपने लेख में स्पेस एजेन्सी नासा के जैमिनी-११ स्पेएक्रप्स्ट द्वारा वर्ष २००२ में लिये चित्रों के वैज्ञानिक परीक्षण का भी उल्लेख किया है। एजेन्सी ने पहले बताया कि रामसेतु लगभग साढे+ सत्रह लाख वर्ष पुराना ओर मानव निर्मित लगता है। बाद में न जाने किन कारणों से यह कहा कि पुल १७.५ लाख वर्ष पुराना तो है परन्तु मानव निर्मित नहीं लगता है। डॉ० सिंह ने रामायण, महाभारत, जैन और बौद्ध, तिब्बती रामायण, थाइलैण्ड, इन्डोनेशिया, म्यांमार आदि देशों के प्राचीन साहित्य में राम कथा के उल्लेख का विस्तृत विवरण दिया है। लेखक ने रामकथा से संबंधित विभिन्न स्थानों पर मिली मूर्तियों, सिक्कों और मन्दिरों का उल्लेख करके यह निष्कर्ष निकाला है कि रामकथा काल्पनिक नहीं हो सकती है।

रामकथा का प्राचीनतम साहित्यिक स्रोत वाल्मीकि रामायण है। इसकी रचना भी श्रीराम के आविर्भाव के ५०० वर्ष बाद की गई। वाल्मीकि रामायण की रचना पाणिनी से पहले की है।

वाल्मीकि रामायण के इस समय पांच पाठ प्रचलित है। इनमें एकरूपता नहीं है।

(१) दाक्षिणात्य पाठ- निर्णयसागर प्रेस मुम्बई और अन्य स्थानों से प्रकाशित।

(२) गौडीय पाठ- कोलकाता संस्कृत सिरीज के प्रकाशन।

(३) पश्चिमोŸारीय पाठ- दयानन्द महा विद्यालय लाहौर से प्रकाशित।

(४) गीता प्रेस-गोरखपुर से प्रकाशित

(५) बड+ ोदरा विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित संस्करण।

प्रत्येक संस्करण में ऐसे श्लोक मिलते है जो दूसरे संस्करणों में नहीं है। पाठभेद का कारण यह है कि वाल्मीकि रामायण, जिसे आदि रामायण कहा जाता है, बहुत दिनों तक मौखिक रूप से प्रचलित थी। एक बात जो इन पाठों के तुलनात्मक अध्ययन से निकल कर आती है वह यह है कि उत्तरकाण्ड बहुत बाद में जोड+ ा गया।

जर्मनी के विद्वान ए.श्लेजेल के अनुसार रामायण की रचना ग्यारहवीं शताब्दी ईसा पूर्व में हुई थी, जबकि जी- गोरेसियों के अनुसार १२वीं शताब्दी ईसा पूर्व हुई थी। परन्तु अन्य विद्वानों ने आदि रामायण और वर्तमान में प्रचलित वाल्मीकि रामायण का काल अलग-अलग निर्धारित किया। कामिल बुल्के के अनुसार बालकाण्ड और उत्तरकाण्ड बाद में जोड+` गये। एम. विन्टरनित्स और याकोबी वाल्मीकि रामायण का रचना काल दूसरी शताब्दी मानते है। परन्तु सी.वी. वैध जैसे विद्वान रामायण का रचनाकाल दूसरी शती ईसापूर्व मानते है। कामिल बुल्के ने अपनी पुस्तक रामकथा में इस पर विस्तार से विचार किया है। उनका मत है कि रामकथा को रूपक मानने का कोई समीचीन कारण नहीं दिखाई देता। उन्हें ऐसा लगता है कि वाल्मीकि राम के उदाŸागुणों, सीता की पतिव्रतता और लक्ष्मण के भातृ प्रेम से पूरी तरह अवगत थे। अत: रामकथा को काल्पनिक कथा मानने का कोई आधार नहीं है।

वैदिक साहित्य में रामकथा के पात्रों इक्ष्वाकु जो श्रीराम के पूवर्ज थे, दशरथ, अश्वपति, सीता, जनक तथा अगस्त्य, याज्ञवल्य आदि ऋषियों का उल्लेख मिलता है। ऋग्वेद में राम का एक प्रतापी राजा के रूप में उल्लेख है।

प्रतद्दु:शीमे पृथवाने

वेने प्र रामे वोन्पमसुरे मधवस्तु

ये युक्तवचाय यज्च

शताश्भयु यथा विश्राव्येषाम् (ऋक २०, ९३ १४)

मैने दु:शी, पृथवान् वैन और राम इन यजमानों के लिये सह सूक्त गाया है। इन्होंने पांच सौ घोड+े या रथ जुतवाये जिससे उनका मुझ पर अनुग्रह चारों ओर फैल गया है।' इसके अतिरिक्त वैदिक साहित्य में कई अन्य स्थलों पर भी राम शब्द का उल्लेख है। यह सच है कि रामकथा का वर्णन वेद में नहीं हैं परन्तु इसका तात्पर्य यह कतई नहीं हो सकता कि रामकथा कपोल कल्पित है। यद्यपि रामकथा के विद्वान श्रीराम मेहरोत्रा ने अपनी पुस्तक 'राम कौन' में ऋग्वेद के एक मंत्र १०/३/३ का उल्लेख किया है और कहा है कि इस मंत्र में संक्षेप में रामकथा का वर्णन है। 'भद्रो भद्रया सचमान आगात् स्वसार जारो अभ्पूर्ति पश्चात्। सुद्रकरै: धुमिराग्नि: वितिष्ठन् रुशद्रभि: वणैरमि रामस्थात्।। (ऋग्वेद १०-३-३)

यह बात सभी जानते है कि ऋग्वेद के तीन चौथाई मंत्र अनेक कारणों से लुप्त हो गये। वर्तमान में जो मंत्र हैं, वे केवल एक चौथाई है। क्या यह संभव नहीं कि बेद के जो मंत्र विलुप्त हो गये हैं उनमें रामकथा भी होगी।

वेदों के बाद वाल्मीकि रामायण आदि काव्य का युग आता है। यह तो रामकथा का ही चित्रण है। इसके बाद महाभारत में रामोपाख्यान है। बौद्ध और जैन साहित्य में रामकथा का वर्णन है। पुराणों और बाद के संस्कृत तथा अन्य भारतीय भाषाओं में तो रामकथा पर आधारित हजारों ग्रन्थ हैं।

विदेश में भी तिब्बती रामायण, तुर्किस्तान का खोतानी रामायण, इन्डोनेशिया की ककबिन रामायण, जावा का सेरतराम, वर्मा की यूतो रामयागने, थाइलैण्ड की रामकियेन में रामकथा का वर्णन है। विश्वसाहित्य में इतना विस्तृत वर्णन जिस कथा का हो क्या वह काल्पनिक हो सकती है।

देश और विदेश में राम, सीता, लक्ष्मण, हनुमान, भरत ओर शत्रुघ्न के हजारों मन्दिरों के निर्माण कराये गये। गुरुमूर्ति ने अपनी पुस्तक 'राम पथ के मन्दिर' में इन मन्दिरों का विस्तार से सचित्र वर्णन किया है।

कम्बोडिया में ११वीं शती में निर्मित अंकोरवाट मन्दिर की दीवारों पर रामायण और महाभारत के चित्र अंकित हैं। इसी प्रकार ९वीं शताब्दी में जावा के परमबनन शिव मन्दिर की दीवारों पर रामायण की चित्रावली अंकित है। रामायण से संबंधित सैकड+ों टेराकोटा-मिट्टी की मूर्तियां हरियाणा के हिसार, जिन्द, उ.प्र. के कौशाम्बी, अहिछत्र (बरेली), एटा, राजस्थान के श्रीगंगानगर से मिली है। इन पर रामकथा के दृश्य अंकित है। इतना विस्तृत साहित्य और पुरातात्विक प्रमाण होने के बाद भी रामकथा को काल्पनिक कैसे कहा जा सकता हैं।

कात्यायन का समय ईसा से ८०० वर्ष पूर्व माना जाता है। उस समय तक श्रीराम को साक्षात् ब्रह्म मान लिया गया था। स्पष्ट है कि श्रीराम नामक महापुरुष को उनके गुणों के कारण ब्रह्म के अवतार के रूप में प्रतिष्ठित किया गया। ऐसा व्यक्ति काल्पनिक नहीं हो सकता।

श्रीराम सम्वत्

कुछ दिनों पहले राजस्थान के नागौर जिले के कुचालन के निकट एक गांव मवान्ता में रामकथा के विशेषज्ञ पंडित घनश्याम शर्मा ने एक पुरानी जीर्ण शीर्ण पाण्डुलिपि विद्वानों को दिखाई थी, जिसके अनुसार विक्रम संवत् के बहुत पहले, रामसम्वत् प्रचलित था। राम संवत् के अनुसार भगवान राम का जन्म उन्नीस हजार ५२० साल पहले हुआ था। (यूनाइटेड भारत लखनऊ १४.५. २०१२) भारतीय नव संवतत्सर चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से प्रारंभ होता है, क्योंकि इसी तिथि को लगभग एक अरब ९५ करोड+ ५८ लाख ८५ हजार एक सौ १५ वर्ष पूर्व पृथ्वी का जन्म हुआ था। अब वैज्ञानिक भी इस बात को मानने लगे हैं। भारतीय वैज्ञानिकों ने समय की सबसे बड+ी इकाई कल्प माना है। एक कल्प में ४३२ करोड+ वर्ष होते है। एक कल्प में एक हजार महायुग होते है। इसी आधार पर मन्वन्तर या चतुर्युगी की समय सारिणी बनाई गई। इस समय श्वेत वाराह कल्प चल रहा है। इस कल्प का वर्तमान वैवस्त मन्वन्तर है, जो इस कल्प का सातवां मन्वन्तर है। इस मनवन्तर के ७१ महायुगों में से २७ महायुग बीत चुके है। २८वीं चतुर्युगी में सतयुग, त्रेता, द्वापर के बाद कलियुग का ५१२१ वां वर्ष चल रहा है। इस बात का उल्लेख रामचरितमानस में गोस्वामी तुलसीदास ने भी किया है। कागभुसुंडी ने गरूण जी को बताया कि उन्हें कैलाश पर्वत पर रहते हुए २७ महायुग बीत चुके है। वे २८वें कलियुग में यहां रह रहे है।

कोलकाता विश्वविद्यालय के प्राचीन भारतीय इतिहास विभाग के प्रोफेसर डॉ० असीम कुमार चटर्जी ने ४ अगस्त, १९७६ को गाजियाबाद हिस्टारिकल सोसायटी द्वारा आयोजित कार्यक्रम में कहा था कि रामायण और महाभारत ऐतिहासिक दस्तावेज हैं, कपोल कल्पित नहीं हैं। उन्होंने कहा कि रामायण की रचना भगवान राम के ५०० वर्ष बाद हुई थी। डॉ० चटर्जी ने कहा कि वाल्मीकि रामायण के उत्तरकाण्ड की रचना बहुत बाद में की गई। उन्होंने कहा कि अन्य काण्डों में भी बाद में प्रक्षिप्त अंश जोड+े गये। श्री चटर्जी ने कहा कि किष्किन्धा काण्ड में भारत की जिस भौगोलिक स्थिति का वर्णन किया गया है, वह बाद में जोड+ा गया लगता है। आदि रामायण के रचयिता की वास्तव में दक्षिण भारत के राज्यों के बारे में पूरी जानकारी नहीं थी, परन्तु उत्तर भारत के राज्यों के बारे में आदि रामायण में जो कुछ भी मिलता है, वह ऐतिहासिक तथ्य है। डॉ० चटर्जी ने कहा कि वाल्मीकि रामायण में उत्तरकाण्ड ईसा से लगभग ६०० वर्ष पहले जोड+ा गया। उन्होंने

कहा कि आदि रामायण की रचना बौद्ध काल के बहुत पहले हुई होगी। डॉ० चटर्जी के अनुसार दशरथ जातक की रचना मौर्यकाल में की गई और सनातन हिन्दू धर्म को नीचा दिखाने के लिए हिन्दू देवी-देवताओं के बारे में तथ्यहीन बातें जोड+ी गई। डॉ०चटर्जी ने कहा कि इसका सबसे बड+ा प्रमाण यह है कि वसन्त तारा जातक में सीता जी को राम की पत्नी के रूप में चित्रित किया गया है। यह रचना मौर्यकाल के पहले की है। इस जातक कथा को सांची स्तूप पर उकेरा गया है। इसे देखने से लगता है कि यह चित्र सीता जी का है और बोधिसत्व भगवान राम से मिलते जुलते है। उन्होंने कहा कि वाल्मीकि रामायण की रचना पाणिनि और कौटिल्य के पहले हुई। डॉ० चटर्जी के अनुसार वाल्मीकि रामायण निश्चित रूप से बौद्धकाल के पहले की रचना है और इसके रचनाकार वाल्मीकि बहुत मेधावी व्यक्ति थे।

इसी प्रकार महाभारत युद्ध १४५० वर्ष ईसा पूर्व हुआ था। महाभारत युद्ध के बाद हुए राजा परीक्षित और महापदमनन्द के बीच १००० वर्षो का अन्तराल है, जिसे सभी मानते है। इस प्रकार जो लोग वाल्मीकि रामायण को बौद्धकाल के बाद की रचना मानते हैं, वे सही नहीं है।

(टाइम्स ऑफ इण्डिया- ०५.०८.१९७६) में प्रकाशित खबर पर आधारित

बरेली की रामलीला

आमतौर पर विश्वास किया जाता है कि श्रीराम ने दशहरा के दिन रावण वध किया था। परन्तु बरेली के बभनपुरी मुहल्ले में होने वाली रामलीला कुछ और कहानी बताती है। यहां के लोगों का विश्वास है कि श्रीराम ने रावण का वध चैत्र शुक्लपक्ष की दशमी को किया था। इसी घटना की स्मृति में बरेली के बभनपुरी मुहल्ले में प्रतिवर्ष फागुन मास की एकादशी से शुरू होकर चैत्र शुक्ल की दशमी तक रामलीला का आयोजन किया जाता है। बरेली के प्रतिष्ठित नागरिक और वरिष्ठ पत्रकार जनार्दन आचार्य ने मुझे बताया कि यह रामलीला पिछले लगभग डेढ+ सौ वर्षो से खेली जा रही है। १० दिनों की इस रामलीला में रावण वध के बाद भव्य शोभा यात्रा, राजगद्दी यात्रा निकाली जाती है। आधी रात को भरत मिलाप के बाद रामलीला समाप्त हो जाती है। शोभा यात्रा में श्रीराम दरबार सहित अनेक देवी-देवताओं की आकर्षक झांकिया सजाई जाती है। शोभायात्रा में हजारों की संख्या में लोग शामिल होते है।

चीन के खगोलविदों ने अब तक के सबसे बड+े 'क्वासर'-ब्लेकहोल से बनी चमकदार वस्तु का पता लगाया है। इसका भार १२०० करोड+ सूर्यो के बराबर है। इसमें ४३०० खरब सूर्यो के बराबर ऊर्जा है। यह पथ्वी से १२८ अरब प्रकाश वर्ष दूर है। यह जानकारी विज्ञान पत्रिका 'नेचर' में प्रकाशित की गई। इस क्वासर को देखने के लिए चीनी खगोलविदों ने २.४ मीटर लम्बे दूरबीन का

प्रयोग किया। इस शोध के मुख्य लेखक बीजिंग विश्वविद्यालय के प्रोफेसर शुविंग ने बताया कि बिग बैंग के ९० लाख साल के बाद इस क्वासर का पता लगा है। वैज्ञानिकों ने अब तक २००० से अधिक क्वासरों का पता लगाया है। यह वर्णन क्या हमारे पुराणों की तरह नहीं लगता है। पुराणों को हम कपोल कल्पित मानते हैं, जबकि उनसे मिलता हुआ विवरण वैज्ञानिक शोध माना जा रहा है।

हमारी आकाश गंगा में पृथ्वी के समान अगणित पिण्ड है। सम्भव है, उनमें से कई पिण्डों पर वर्तमान में रामकथा जीवन्त रूप में चल रही है। किसी पिण्ड पर श्री राम का जन्म हो रहा होगा, तो कहीं रावण वध हो रहा होगा। ऐसी परिस्थिति में रामकथा की ऐतिहासिकता के बारे में कुछ कह पाना क्या सम्भव है, परन्तु इतना तय है कि हमारी राम कथा काल्पिनक नहीं हो सकती।

,,,,,,,,,,,,,,,,,,,

अवध तहां जहं राम निवासू

रामकथा से संबंधित सबसे प्रमुख नगर का नाम है- अयोध्या। या यूँ कहें कि राम कथा का पर्याय है अयोध्या, तो गलत नहीं होगा। इसी नगर से राम कथा आरम्भ होती है, और यहीं सम्पन्न हो जाती है। यहीं भगवान राम का जन्म हुआ था। आज इस नगर की स्थिति उत्तर प्रदेश में लखनऊ से लगभग एक सौ तीस कि०मी० पूर्व फैजाबाद के पास है।

रामकथा को आधार बनाकर प्राचीन काल से लेकर अब तक कई भाषाओं में हजारों पुस्तकें लिखी गई, परन्तु महर्षि वाल्मीकि कृत रामायण, जो संस्कृत में है और गोस्वामी तुलसीदास कृत रामचरितमानस जो अवधी में है, इन ग्रन्थों में सबसे महत्वपूर्ण ग्रन्थ हैं। राम कथा के प्रचार प्रसार में इन दो ग्रन्थों की प्रमुख भूमिका रही है। इनकी लोकप्रियता का कोई जवाब नहीं।

अयोध्या के सम्बन्ध में अक्सर यह सवाल उठाया जाता है कि क्या आज की अयोध्या ही वह अयोध्या है, जहां भगवान राम का जन्म हुआ था ? लोक मानस में यह विष्वास घर कर गया है कि वर्तमान अयोध्या ही रामायणकालीन अयोध्या है। आम तौर पर लोग ऐसा सोचते भी नहीं है कि रामायणकालीन अयोध्या वर्तमान अयोध्या से भिन्न हो सकती है। इसके बावजूद इस प्रश्न पर बराबर विचार मन्थन हो रहा है। वाल्मीकि और तुलसीदास के ग्रन्थों को ध्यान में रखकर अयोध्या की स्थिति के बारे में निम्नलिखित बातें विचार करने लायक हैं।

गोस्वामी तुलसीदास ने रामचरितमानस में 'अयोध्या' शब्द का प्रयोग एक बार भी नहीं किया है, जबकि वाल्मीकिरामायण और अन्य ग्रन्थों में अयोध्या शब्द का प्रयोग बार-बार हुआ है। ऐसा लगता है कि तुलसीदास ने अयोध्या शब्द का प्रयोग नहीं करके किसी तथ्य की तरफ संकेत किया है, जो कि खोज का विषय है। रामचरितमनास में अयोध्या के लिए तुलसीदास ने अवध, कोसल और रामपुर शब्दों का प्रयोग किया है। वर्तमान में अवध और कोसल नगर के नाम नहीं है। एक क्षेत्र विशेष के लिए इनका प्रयोग किया जाता है, जबकि तुलसीदास ने इन दोनों ही शब्दों का प्रयोग एक शहर के लिए किया है। गोस्वामी जी ने साकेत शब्द का भी प्रयोग नहीं किया है, जबकि राष्ट्रकवि मैथिली शरण गुप्त ने इसी शब्द का प्रयोग मुख्य रूप से किया है। उनके एक प्रमुख काव्य-ग्रन्थ का नाम ही साकेत है, जिसमें उन्होंने कहा-Þदेख लो साकेत नगरी है, यही स्वर्ग से मिलने गगन को जा रहीß।

गोस्वामी तुलसीदास अयोध्या के लिए बार-बार अवध और कोसल शब्दों का प्रयोग करते है और वे इन्हें तत्कालीन राज्य की राजधानी मानते हैं। बालकाण्ड दोहा २५ के अन्तर्गत

चौपाई- 'राजा राम अवध रजधानी। गावत गुन सुर मुनि बर बानी।।' इसी प्रकार अयोध्या काण्ड के दोहा ७३ के अन्तर्गत चौपाई- 'राजा राम, जानकी रानी। आनन्द अवधि अवध रजधानी।।'

गोस्वामी तुलसीदास ने उत्तर-काण्ड में केवल एक स्थान पर 'अजोद्धा' शब्द का प्रयोग किया है- (उत्तरकाण्ड- दोहा २७, चौपाई-एक)

'दिन प्रति सकल अजोद्धा आवहिं। देखि नगर विराग विसरावहिं।।' इस चौपाई में अजोध्या के स्थान पर मानस के कई संस्करणों में अवधपुर शब्द मिलता है। इसके अतिरिक्त हिन्दी के कई विद्वान उत्तर काण्ड के इस अंश को प्रक्षिप्त मानते हैं, जो भी हो अगर यह मान भी लें कि गोस्वामी जी ने इस शब्द का प्रयोग किया है, तो भी इस प्रश्न का समाधान नहीं मिलता कि आखिर गोस्वामी जी ने अयोध्या शब्द का प्रयोग एक बार ही क्यों किया ?

तुलसीदास ने रामचरितमानस में अवध शब्द का प्रयोग ९२ बार किया है और कोसल शब्द का प्रयोग ४६ बार किया है। अवध शब्द का सबसे अधिक ५७ बार प्रयोग अयोध्या काण्ड में और उसके बाद १९ बार उत्तर काण्ड में किया गया है, जबकि कोसल शब्द का सबसे अधिक लंका काण्ड में २२ + बार और उत्तर काण्ड में ९ बार किया गया है। इसके मुकाबले केवल एक बार अजोद्धा शब्द का प्रयोग करना कोई मायने नहीं रखता। ऐसा लगता है कि तुलसीदास का भी अभिप्राय यही था कि वर्तमान अयोध्या रामायणकालीन अयोध्या से भिन्न है। वैसे कवितावली में गोस्वामी जी ने अयोध्या के लिए 'औध' शब्द का प्रयोग किया है।

कीर के कागर ज्यों नृप चीर, विभूषण उप्पन अंगनि पाई।

औध तजि वनवास के रूखे ज्यों लंका के साथ ज्यों लोग लुगाई।।

गोस्वामी जी ने रामायणकालीन अयोध्या के लिए दो बार रामपुर शब्द का भी प्रयोग किया है। उदाहरण के तौर पर- पहुँचे दूत रामपुर पावन। हरषे नगर बिलोकि सुहावन।।' (बालकाण्ड दोहा २० के अन्तर्गत) इसी प्रकार उत्तर काण्ड में दोहा १२४ के अन्तर्गत निम्न चौपाई-

'तब तब जाई रामपुर रहॅहू। शिशु लीला बिलोकि सुख लॅहहूॅ।'

तो क्या उ०प्र० की वर्तमान रामपुर नगरी भी रामायण कालीन अयोध्या हो सकती है। इस क्षेत्र में सरयू नाम की नदी भी विद्यमान है। परन्तु वह रामपुर से दूर है।

रामपुर के पास रामगंगा नदी बहती है। कुछ विद्वानों का मत है कि रामगंगा नदी ही प्राचीन काल में सरयू नदी के नाम से जानी जाती थी, जिसके किनारे अयोध्या स्थित थी। परन्तु केवल इसी तथ्य के आधार पर यह नहीं माना जा सकता कि वर्तमान रामपुर रामायणकालीन अयोध्या है।

अयोध्या की स्थिति के बारे में कुछ और तथ्य विचारणीय है। वाल्मीकि रामायण और रामचरितमानस के अनुसार रामायणकालीन अयोध्या सरयू नदी के किनारे बसी हुई थी।

कालिदास के रघुवंशम् में भी ऐसा वर्णन आया है कि अयोध्या सरयू के तट पर बसी हुई थी। अगर इस तथ्य को ध्यान में रखें तो रामायण कालीन अयोध्या वर्तमान अयोध्या से उत्तर गोण्डा जिले के परसपुर के पास होनी चाहिए।

गोस्वामी तुलसीदास ने अपनी एक रचना कवितावली में कहा है कि-

‘उत्तर दिसि सरजू बह, निर्मल जल गंभीर।

बॉधे घाट मनोहर, स्वल्प पंक नहिं तीर।।

(उ० का०दोहा-२८)

इसके अतिरिक्त बालकाण्ड दोहा १६ के अन्तर्गत उन्होंने कहा-

‘बन्दउॅ अवधपुरी अति पावन, सरजू सरि कलि कलुस नसावन।।’

इसमें ध्यान देने की बात यह है कि तुलसीदास जिस अयोध्या का वर्णन करते हैं, वह सरयू नदी के किनारे होनी चाहिए। परन्तु वर्तमान अयोध्या घाघरा के किनारे है, सरयू के नहीं।

वाल्मीकि रामायण में अयोध्या का वर्णन भी इसी ओर संकेत करता है-

‘कोशलो नाम मुदितः स्फीतो जनपदो महान्।

निविष्टः सरयूतीरे प्रभूतधनधान्यवान्।।

(बालकाण्ड, पंचमसर्ग, ९ॉ श्लोक)

वर्तमान में अयोध्या आने वाले तीर्थ यात्रियों के लिए पंच कोसी और चौरासी कोसी की परिक्रमा का विधान है। इसे अयोध्या की परिक्रमा कहा जाता है। इस परिक्रमा पथ पर वे ही स्थान आते है, जिनका सम्बन्ध रामकथा से है। ये स्थान बस्ती, फैजाबाद, बाराबंकी और गोण्डा जिलों में स्थित है। यहां ध्यान देने की बात यह है कि अगर वर्तमान अयोध्या ही रामायण कालीन अयोध्या है

तो इतनी दूर से परिक्रमा का विधान क्यों किया गया है? ऐसा लगता है कि रामायण कालीन अयोध्या इतनी बड+ी नगरी होगी, जिसकी बाहरी सीमा को आधार मानते हुए वर्तमान में चौरासी कोस की परिक्रमा का विधान किया गया है। वाल्मीकि ने रामायण में अयोध्या नगर का विस्तार इस प्रकार बताया है-

अयोध्या नाम नगरी, तत्र आसीत् लोकविश्रुता।

मनुना मानवेन्द्रेण, या पुरी निर्मिता स्वयम्॥

आयता दश च द्वे च, योजनानि महापुरी।

श्रीमती त्रीणि विस्तीर्णा, सुविभक्ता महापथा।

(बालकाण्ड, पंचम सर्ग, छठवां श्लोक)

अर्थात् वाल्मीकि के अनुसार अयोध्या नगर का घेरा एक सौ बीस कोस आता है, जो वर्तमान चौरासी कोस की परिक्रमा से लगभग मेल खाता है। इस प्रकार इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि रामायणकालीन अयोध्या चौरासी कोस की परिक्रमा के अन्तर्गत आने वाली कोई नगरी रही होगी, जो काल के थपेड+ो से आहत होकर भूगर्भ में चली गई है। इस प्रकार यह संभव है कि वर्तमान अयोध्या, रामायणकालीन अयोध्या का एक हिस्सा रही होगी।

वाल्मीकि ने सरयू नदी के गुप्तार घाट (गोप्रतार घाट) के बारे में जो विवरण दिया है, वह इस प्रकार है :-

अध्यर्धयोजनं गत्वा, नदीं पश्चान्मुखाश्रिताम्।

सरयूं पुण्यसलिलां, ददर्श रघुनन्दनः॥

पश्यताम् सर्वदेवानाम् स्वान् पितृन प्रतिपेदिरे।

तथा ब्रुवति देवेशे ग्रोप्रतारमुपागतः॥

(उत्तर काण्ड, सर्ग-११०,श्लोक-एक तथा २२)

अर्थात भगवान राम अन्तिम समय में अपने महल से निकल कर लगभग १९ कि०मी० दूर गोप्रतार घाट गये, जहां सरयू नदी पश्चिम दिशा की ओर बहती थी। वर्तमान में अयोध्या शहर से गोप्रतार घाट की, जो स्थिति है वह इससे मेल नहीं खाती है।

नन्दीग्राम जहां पर रहकर भरत ने चौदह वर्षो तक शासन चलाया अयोध्या से बहुत दूर नहीं रहा होगा, जबकि वर्तमान अयोध्या से नन्दीग्राम की स्थिति लगभग इक्कीस कि०मी० है। रामचरितमानस में ऐसा वर्णन है कि हिमालय से संजीवनी बूटी लेकर हनुमान जी अवध नगर के ऊपर से होते हुए लंका जा रहे थे। भरत ने उन्हें कोई राक्षस समझकर अपने बाणों से हनुमान जी को जमीन पर गिरा दिया था। इससे भी यही सिद्ध होता है कि नन्द्रीग्राम तत्कालीन अयोध्या महानगर का एक मोहल्ला रहा होगा-

‘गहि गिरि निसि नभ धावत भयऊ।

अवधपुरी ऊपर कपि गयऊ॥

वाल्मीकि रामायण में ऐसा वर्णन है कि भरत श्रीराम की चरण पादुका लेकर गुरूजनों के साथ पूर्व की ओर नन्दिग्राम गये-

‘अग्रतो गुरवः सर्वे, वशिष्ठ प्रमुखाद्विजाः।

प्रययुः प्राड.मुखा सर्वे, नंदिग्रामो यतो भवेत्॥

भरतस्तु ततः क्षिप्रम्, नंदिग्रामं प्रविश्य सह।

अवतीर्य रथात् तूर्णम्, गुरून् इदम् अभिभाषत्॥

(वाल्मीकि रामायण-अयोध्याकाण्ड-१५वां सर्ग- १०वां व १३वां श्लोक)

इससे स्पष्ट है कि नंदीग्राम रामायणकालीन अयोध्या के पूर्व स्थित था और बहुत दूर नहीं था, जबकि वर्तमान में नन्दिग्राम अयोध्या से इक्कीस कि०मी० दूर दक्षिण में स्थित है। वाल्मीकि रामायण युद्धकांड सर्ग १२५ श्लोक २९ के अनुसार नन्दीग्राम अयोध्या से १ कोस यानी २ मील दूर था :-

स्त्रीभिः सपुत्रैः पौत्रैष्च रममाणैः स्वलंकृतैः।

क्रोशमात्रे तु अयोध्यायाः चीरकृष्णाजिनाम्बरम्॥

श्लोक- २९

इसी प्रकार लंका से अयोध्या जाते समय हनुमान जी ने नन्दिग्राम के पहले वालुकिनीम् नदी को भी देखा-

सः अपश्यत् रामतीर्थम् च नदीम् वालुकिनीम् तथा।

वरूथीं गोमतीं चैव भीमम् शालवनं तथा।।

इन श्लोकों को ध्यान में रखकर अयोध्या और नंदीग्राम की स्थिति खोज का विषय है।

वर्तमान में वह स्थान जहां भगवान राम ने वन जाते हुए तमसा नदी को पार किया वर्तमान अयोध्या से बहुत दूर नहीं है, जबकि राम कथा के अनुसार भगवान राम भोर काल में ही उठकर चले गये थे ताकि अयोध्या के अधिक लोग उनके साथ न जाने पायें। परन्तु रथ से तमसा तीर तक की दूरी तय करते-करते शाम हो गई और वहीं उन्हें विश्राम करना पड+ ।। ऐसा लगता है कि उस समय की अयोध्या और तमसा के बीच की दूरी काफी रही होगी और यह तभी सम्भव है, जब रामायण-कालीन अयोध्या वर्तमान अयोध्या से कुछ उत्तर कहीं गोण्डा जिले में हो।

गोस्वामी तुलसीदास ने रामचरितमानस के बालकाण्ड के प्रारम्भ में रामकथा का एक रूपक प्रस्तुत किया है, जिसमसें रामकथा की तुलना एक सरोवर से की है :-

‘सप्त प्रबंध सुभग सोपाना। ग्यान नयन निरखत मन माना।

रघुपति महिमा अगुन अबाधा। बरनब सोइ बर बारि अगाधा।।’

इत्यादि

(बालकाण्ड- दोहा-३६ के नीचे की चौपाई)

इसी प्रकार तुलसीदास ने राम कथा का एक और रूपक प्रस्तुत किया है, जिसमें कहा है कि रामकथा की धारा तिमुहानी से निकलती है। इस तिमुहानी में तीन नदियों के संगम का उल्लेख है, वे हैं सरयू, सोन और गंगा :-

‘रामभगति सुरसरितहि जाई। मिली सुकीरति सरजु सुहाई।।

सानुज राम समर जस पावन। मिलेउ महानदु सोन सुहावन।।

जुग बिच भगति देवधुनि धारा। सोहति सहित सुबिरति बिचारा।।

त्रिबिध ताप त्रासक तिमुहानी। राम सरूप सिंधु समुहानी।।’

(बालकाण्ड-दोहा- ३९ के नीचे)

गोंडा जिले के पसका के पास तिमुहानी है, जहां सरयू, घाघरा और एक और नदी का संगम होता है। तीसरी नदी को बाण कहा जाता है, जो अब सूख गई है। गोस्वामी तुलसीदास ने जिस तिमुहानी का वर्णन रूपक में किया है, वहां गंगा, सरयू और सोन का उल्लेख है।

इसी सन्दर्भ में यह तथ्य भी विचारणीय है कि लंका से लौटते समय भगवान राम ने अयोध्या का वर्णन किन शब्दों में किया है :-

पुनि देखु अवधपुरी अति पावनि। त्रिबिधताप भव रोग नसावनि।।

इन दोनों ही प्रसंगों में कितनी समानता है। ऐसा लगता है कि ये दोनों वर्णन एक ही शहर के हैं, जबकि पहला वर्णन गोण्डा या किसी अन्य जिले में स्थित तिमुहानी का है और दूसरा वर्णन अयोध्या का है। इससे भी स्पष्ट है कि दोनों स्थान एक ही हैं।

इस प्रसंग से यह संकेत मिलता है कि रामकथा की सरिता यहीं से प्रवाहित होती है। इससे पहले गोस्वामी जी ने स्पष्ट लिखा है कि उन्होंने रामचरितमानस की रचना विक्रम संवत् १६३१ में अयोध्या में की-

'संबत सोरह सौ एकतीसा। करउँ कथा हरि पद धरि सीसा।

नौमी भौम वार मधु मासा। अवधपुरी यह चरित प्रकासा।।'

(बालकाण्ड-दोहा-३३ के बाद)

उपरोक्त विवरण से ऐसा लगता है कि कि रामायणकालीन अयोध्या गोण्डा जिले में तिमुहानी के पास रही होगी। यहीं पास में वर्तमान में नरहरिदास का आश्रम है जो गोस्वामी जी के गुरू थे। ऐसी लोक कथा है कि गोस्वामी जी ने इसी आश्रम में रामचरितमानस की रचना की थी। इस सम्बन्ध में एक रोचक कथा यह है कि सीता के स्वयंवर का वर्णन करते समय तुलसीदास ने जब यह लिखा-

'बूड+ ा सकल समाज' तब उनके गुरू ने उन्हें टोकते हुए कहा कि तुमने यह क्या लिख दिया ? जब सब लोग डूब ही जायेंगे तो कथा आगे कैसे बढ+`गी ? लोगों का ऐसा विश्वास है कि उस समय हनुमान जी ने जो आश्रम में स्थित वृक्ष पर विराजमान होकर तुलसीदास को प्रेरित करते थे, इस समस्या के समाधान के लिए सुझाव दिया कि उपरोक्त दोहे को इस प्रकार पूरा करों-

'बूड+ ा सकल समाज, चढ+ ा जो प्रथमहिं मोहबस'

(बालकाण्ड-दोहा- २६१)

इसी सन्दर्भ में यह भी विचारणीय है कि तुलसीदास ने कवितावली में भगवान राम से कहा कि मैं तुम्हारे घर पैदा हुआ हूँ :-

'तुलसी तिहारो घर जायो-

तुलसीदास का जन्म अयोध्या में तो हुआ नहीं था। परन्तु कवितावली के वर्णन से माना जा सकता है कि अयोध्या तुलसी जन्म स्थान के पास होनी चाहिए।

गोस्वामी तुलसीदास ने रामचरितमानसकी पांच हजार एक सौ चौपाइयों, एक हजार से अधिक दोहों, सोरठों, श्लोकों और छन्दो में 'अयोध्या' शब्द का प्रयोग एक बार भी नहीं किया है। रामचरितमानस के अधिकांश संस्करणों में एक काण्ड का नाम 'अयोध्या काण्ड' अवश्य मिलता है। परन्तु राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित रामचरितमानस में अयोध्याकाण्ड को 'अवधकाण्ड' के नाम से अभिहित किया गया है। राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान के तत्कालीन कुलपति प्रख्यात संस्कृत विद्वान कुटुम्ब शास्त्री ने रामचरितमानस के इस संस्करण की भूमिका में लिखा है, कि यह संस्करण महामना पण्डित मदन मोहन मालवीय की प्रेरणा से नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित रामचरितमानसपर आधारित है। इसकी प्रति अब उपलब्ध नहीं है। चित्रकूट के राजापुर में तुलसीमंदिर में अयोध्याकाण्ड की हस्तलिखित पाण्डुलिपि उपलब्ध है। मैने स्वयं उस पाणुलिपि को देखा है, उसमें 'अयोध्या' शब्द नहीं लिखा गया है। केवल संकेत मात्र काण्ड का नाम 'अ०' लिखा गया है, जो वास्तव में अवध काण्ड का संक्षिप्त रूप है जैसा कि राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान ने लिखा है। परन्तु अन्य प्रकाशकों ने वाल्मीकि के रामायण के प्रभाव में यह समझ लिया कि रामचरितमानस के दूसरे काण्ड का नाम तुलसीदास ने अयोध्या काण्ड ही लिखा होगा। तुलसीदास द्वारा 'अयोध्या' शब्द की उपेक्षा और 'अवध' शब्द से उनके प्रेम को देखते हुए यही सही लगता है कि गोस्वामी जी ने रामचरितमानस के दूसरे काण्ड का नाम अगर लिखा होगा तो अवध काण्ड ही लिखा होगा।

यह संयोग भी हो सकता है कि गोस्वामी जी ने 'अयोध्या' शब्द का प्रयोग न करके 'अवध', कोसल और रामपुर शब्दों का प्रयोग किया। परन्तु अयोध्या शब्द का एक बार भी प्रयोग नहीं करना और बदले में क्षेत्र वाचक शब्दों अवध और कोसल के प्रयोग का कोई निहितार्थ भी हो सकता है। संभवत: गोस्वामी जी भी इस तथ्य से परिचित थे कि वर्तमान अयोध्या रामायण कालीन अयोध्या नहीं है, श्रीराम की अयोध्या तो अवध क्षेत्र में कहीं भी हो सकती है। अत: उन्होंने क्षेत्र वाचक शब्द का प्रयोग किया।

'अवध' शब्द संस्कृत का शब्द नहीं है। यह पाली और प्राकृत भाषाओं में भी नहीं मिलता है। अवध श्ब्द मुगल शासकों की देन है। बाबरनामा में सबसे पहले १५२६ ई० में 'अयोध्या' को अउध

या 'औध' के रूप में लिखा गया। उसके बाद सन् १५९६ में बाबर के पोते अकबर ने अपने राज्य के प्रान्तों को पुनर्गठित किया और उसने अयोध्या के पास के क्षेत्र को 'अवध' नाम दिया। इस क्षेत्र का यही नाम ब्रिटिश काल तक चलता रहा। आजादी के पहले तक उत्तर प्रदेश का नाम था 'संयुक्त प्रान्त आगरा व अवध'। तुलसीदास के समय में भी 'पूर्वी हिन्दी' में और जनमानस में अयोध्या को अजोधा या अजोधाजी के नाम से जाना जाता था। परन्तु तुलसीदास ने मुगलों द्वारा दिये गये शब्द अवध का ही बार-बार प्रयोग रामचरितमानस में किया। वैसे गोस्वामी तुलसीदास ने अपनी रचना 'कवितावली' में 'अवध' या अयोध्या के लिये 'औध' शब्द का प्रयोग किया है।

तुलसीदास के बाद ई० सन् १६४३ में संत लालदास ने अपनी रचना 'अवध विलास' में अयोध्या के लिए 'अउध' शब्द का प्रयोग किया। स्पष्ट है कि तुलसीदास और लालदास दोनों ने 'औध' या 'अउध' शब्द का जो प्रयोग किया वह बाबरनामा और अकबर द्वारा अयोध्या क्षेत्र के नाम करण से प्रभावित है। हम लोग तुलसीदास की भाषा को अवधी कहते है परन्तु उन्होंने स्वयं अपनी भाषा को अवधी नहीं केवल 'भाषा' कहा है-

देखे बालकांड रामचरित मानस,

भाषाबद्ध करब मै सोई। मोरे मन प्रबोध जस होई।।

(बालकांड दोहा ३१, चौपाई-१)

भगवान राम के स्वर्गारोहण के बाद पूरी अयोध्या जल-प्लावित हो गई थी। वर्षो बाद श्रीराम के पुत्र कुश ने पुन: उसका जीर्णोद्धार कराया था। उसके बाद पुन: अयोध्या उजड+ गई। इस बीच वहां जैन और बौद्धधर्म से संबंधित राजाओं का शासन रहा। एक बार पुन: अयोध्या को वर्षो बाद विक्रमादित्य द्वारा जीर्णोद्धार कराया गया, जो आज तक किसी न किसी रूप में विद्यमान है। संस्कृत ग्रन्थों में रामायण से लेकर आधुनिक काल तक अयोध्या को अयोध्या ही नाम से जाना गया। बौद्ध धर्म के पालिग्रन्थों में इसे अयोझदा, जैन ग्रन्थों में अयुज्झा या उज्झा कहा गया। चीनी यात्री ह्वेनसांग ने इसे 'अयुज' कहा। १०३२ ई० में अल्वेरूवी ने इसे अजोदह लिखा। इस प्रकार साहित्य में अयोध्या के लिए कई नामों का उल्लेख मिलता है, परन्तु 'अवध' नाम मुगल शासक बाबर और अकबर की देन है।

रामायण, महाभारत यहां तक कि रामचरितमानस में भी यह उल्लेख किया गया है कि अयोध्या सरयू नदी के किनारे स्थित है। परन्तु वर्तमान में अयोध्या में जो नदी है वह सरयू नहीं घाघरा नदी है। कुछ लोगों द्वारा यह प्रचार किया जाता है कि घाघरा और सरयू एक ही नदी के नाम है।

परन्तु यह सच नहीं है। पुराणों के अनुसार घाघरा और सरयू दो अलग-अलग नदियां है। दोनों प्राचीन नदियां है। स्कन्दपुराण में उल्लेख किया गया है-

दशकोटिसहस्राणि, दश कोटिशतानिच।

तीर्थानि सरयूनद्या: घर्घरोदक संगमें।।

इसी प्रकार रूद्रयामल तंत्र में दोनों नदियों का उल्लेख है-

संगमे वर्तते देवि सर्वपापप्रणाशन:

तत्र स्नात्वा तु तत्पुण्यं, ऋणु तत्कथयामि ते।

दशकोटि सहस्राणि, दशकोटि शतानिच।

सरयूघर्घरे संगे, तीर्थानि सन्ति तु पार्वति।।

आज सरयू और घाघरा नदियों का संगम गोण्डा जिले के पसका से लगभग चार कि०मी० दूर होता है। कुछ वर्षो पहले तक यह संगम पसका में ही होता था। गोस्वामी तुलसीदास के समय सरयू और घाघरा नदियों का संगम वर्तमान अयोध्या से लगभग १९ कि०मी० दूर होता था। ऐसा लगता है कि तुलसीदास के समय सरयू नदी अयोध्या के उत्तर में बहती थी, जो आगे चलकर घाघरा में मिल जाती है। इसका उल्लेख बाबरनामा में भी मिलता है।

रामचरितमानस में लक्ष्मण की माँ सुमित्रा जी ने लक्ष्मण जी से कहा कि अवध वहां है, जहां श्रीराम है।

'अवध तहाँ जहँ राम निवासू और

श्रीराम कहाँ निवास करते है इसका विस्तार से वर्णन तुलसीदास ने ऋषि वाल्मीकि के माध्यम से किया। जब श्रीराम ने वाल्मीकि ऋषि से पूछा कि उनके रहने के लिए कौन सा स्थान ठीक रहेगा, वाल्मीकि ने कहा कि-

पूंछेहु मोहि कि रहौं कहं, मैं पूछत सकुचांउ।

जहं न होहु तहं देहु कहि तुम्हहि देखावौं ठाउ।।

(अयोध्या काण्ड दोहा १२७)

सुनि मुनि बचन प्रेम रस साने।

सकुच राम मन महुं मुसुकाने।।

वाल्मीकि हंसि कहहिं बहोरी।

बानी मधुर अमिय रस बोरी।।

सुनहु राम अब कहउं निकेता।

जहां बसहु सिय लखन समेता।।

जिन्ह के श्रवन समुद्र समाना।

कथा तुम्हारि सुभग सरि नाना।।

भरहिं निरंतर होहिं न पूरे।

तिन्ह के हिय तुम्ह कहुं गृह रूरे।।

लोचन चातक जिन्ह करि राखे।

रहहिं दास जलधर अभिलाखे।।

निदरहिं सरित सिंधु सर भारी।

रूप बिन्दु जल होहिं सुखारी।।

तिन्ह के हृदय सदन सुखदायक।

बसहु बंधु सिय सह रघुनायक।।

जसु तुम्हारि मानस विमल हंसिनि जीहा जासू।

मुकताहल गुन गन चुनइ राम बसहु हिय तासु।। १२८

प्रभु प्रसाद सुचि सुभग सुबासा।

सादर जासु लहइ नित नासा।।

तुम्हहि निवेदित भोजन करहीं।

प्रभु प्रसाद पट मूषन धरहीं।।

सीस नवहिं सुर गुरू द्विज देखी।

प्रीति सहित करि विनय विसेखी।।

कर नित करहि राम पद पूजा।

राम भरोस हृदय नहिं दूजा।।

चरन राम तीरथ चलि जाहीं।

राम बसहु तिन्ह के मन मांही।।

मंत्रनाम नित जपहिं तुम्हारा।

पूजहिं तुम्हहि सहित परिवारा।।

तरपन होम करहिं बिधि नाना।

बिप्र जेवांइ देहि बहु दाना।।

तुम्ह ते अधिक गुरहिं जिय जानी।

सकल भांय सेवहिं सनमानी।।

सब करि मागहिं एक फलु राम चरनरति होउ।

तिन्ह के मन मंदिर बसहु सिय रघुनन्दन दोउ।। दोहा १२९

काम कोह मद मान न मोहा।

लोभ न छोभ न राग न दोहा।।

जिन्ह के कपट दंभ नहि माया।

तिन्हके हृदय बसहु रघुराया।।

सबके प्रिय सबके हितकारी।

दुख सुख सरिस प्रशंसा गारी।।

कहहिं सत्य प्रिय बचन बिचारी।

जागत सोवत सरन तुम्हारी।।

तुम्हहिं छाडि+ गति दूसर नाहीं।

राम बसहु तिन्ह के मन माही।।

जननी सम जानहि परनारी।

धन पराव विष ते विष भारी।।

जे हरषहिं परसंपति देखी।

दुखित हौहिं पर विपति बिसेखी।।

जिन्हहिं राम तुम प्रान पिआरे।

तिन्ह के मन सुभ सदन तुम्हारे।।

स्वमि सखा पितु मातु गुर जिन्ह के सब तुम्ह तात।

मन मंदिर तिन्ह के बसहु सीय सहित दोउ भ्रात।। दोहा १३०

अवगुन तजि सब के गुन गहहिं।

बिप्र धेनु हित संकट सहहीं।।

नीति निपुन जिन्ह कइ जगलीका।

घर तुम्हार तिन्ह कर मनु नीका।।

गुन तुम्हार समुझइ निज दोसा।

जेहि सब भांति तुम्हारि भरोसा।।

राम भगति प्रिय लागहि जेही।

तेहि उर बसहु सहित बैदेही।।

जाति पांति धनु धरम बड+ ाई।

प्रिय परिवार सदन सुखदाई।।

सब तजि तुम्हहिं रहउ दर लाई।

तेहि के हृदय रहहु रघुराई।।

सरग नरक अपवरगु समाना।

जहं तहं देख धरे धनु बाना।।

करम बचन मन राउर चेरा।

राम करहु तेहि के उर डेरा।।

जेहि न चाहिअ कबहुं कछु तुम्हसन सहज सनेह।

बसहु निरन्तर तासु मन सो राउॅर निज गेह।। दोहा १३१

एहि विधि मुनिवर भवन देखाये।

बचन सप्रेम राम मन भाये।।

इस प्रकार वाल्मीकि ने उन भवनों का उल्लेख किया, जहां श्रीराम को रहना चाहिये। परन्तु श्रीराम चूंकि वनवास में थे, तो वाल्मीकि ने कहा-

'चित्रकूट गिरि करहु निवासू', तंह तुम्हार सब भांति सुपासू।

वनवास के बाद श्रीराम उन्हीं भवनों में रहते हैं, जिनका उल्लेख रामचरितमानस में अयोध्याकाण्ड के दोहा १२७ से लेकर १३२ में किया गया है।

वाल्मीकि के बाद कालिदास ने राघुवंशचरितम् लिखा, उसमें भी उन्होंने लिखा कि दशरथ ने तमसा और सरयू के तट पर अश्वमेघ यज्ञ किया।

‘ऋतुषु तेन विसर्जितमौलिना, भुजसमादृतदिग्वसुनाकृता:।

कनकयूपसमुच्छ्रयशोभिनो, वितमसा तमसासरयूतटा:।।

(रघुवंशम् नवां सर्ग-बीसवां श्लोक)

कालिदास के इस वर्णन से भी संकेत मिलता है कि रामायणकालीन अयोध्या वर्तमान अयोध्या से उत्तर में स्थित होगी। वर्तमान अयोध्या को सन् १८८५ में राजा मानसिंह ने बसाया था। इस लिहाज+ से नयी अयोध्या केवल १६० वर्ष पुरानी है। उसी समय से यहां के राजा ब्राह्मण ही होते रहे हैं। उन्हें सिंह की उपाधि दी गयी। कालान्तर में दत्तक पुत्र को राजा बनाने के बाद सिंह की उपाधि समाप्त हो गयी। वर्तमान में राजा विमलेन्द्र प्रताप मोहन मिश्र अयोध्या के राजा हैं जो वर्ष १९८१ से इस पद पर हैं।

अयोध्या मूल रूप से मिल्कीपुर तहसील क्षेत्र में पड+ ने वाले मेहदौना स्टेट का हिस्सा थी जिसे शाहगंज के रूप में जाना जाता था। अयोध्या राज परिवार के पूर्वज सदाशिव पाठक भोजपुर के शाकद्विपीय ब्राह्मण थे जो बस्ती जिले के धनगवां में बस गये थे। उनके पुत्र सुरेन्द्र पाठक का विवाह शाहगंज बाजार के निकट पलिया में, एक जमींदार परिवार में हुआ और उन्हें जमीदारी दे दी गयी। उसी समय उन्हें सिंह की उपाधि दी गई। सुरेन्द्र पाठक के पॉच पुत्रों में से एक पुत्र दर्शन सिंह ने १८४३ में मेहदौना स्टेट की कमान संभाली। नवाबों ने दर्शन सिंह को राजा का खिताब दे दिया। राजा दर्शन सिंह का बनाया सूर्य मन्दिर मशहूर है। दर्शन नगर किला भी मौजूद है। १८५५ में अंग्रेजों ने अयोध्या शहर उन्हें उपहार में दिया। उन्होंने ही नयी अयोध्या का निर्माण कराया। (दैनिक जागरण, लखनऊ ०३.०४.२०१५ में प्रकाशित कृष्ण कान्त की रिपोर्ट पर आधारित)

:- निष्कर्ष :-

रामचरितमानस में रामायणकालीन अयोध्या के लिए कोसल, अवध और रामपुर शब्दों का प्रयोग किया गया है। इनमें से कोसल और अवध न तो वर्तमान में नगरवाचक शब्द हैं और न ही कभी रहे हैं। रामपुर नामक नगर वर्तमान है, परन्तु उसे रामायण कालीन अयोध्या मानना तर्कसंगत नहीं लगता है। तुलसीदास के जन्मस्थान और अयोध्या के समीप उत्तर में रामपुर नामक एक कस्बा है। क्या वही रामायणकालीन अयोध्या का अवशेष है, कुछ कहा नहीं जा सकता। अयोध्या मनुष्यों को मोक्ष प्रदान करने वाली नगरियों में प्रथम नगरी है-‘अयोध्या, मथुरा, माया (हरिद्वार) काशी,

कांची, अवन्तिका (उज्जैन) पुरी (जगन्नाथपुरी) द्वारावती (द्वारका) मोक्ष प्रदान करने वाली नगरी है। आध्यात्मिक दृष्टि से मनुष्य का शरीर ही अयोध्या है, जिसमें ईश्वर का अंश विद्यमान है- 'अष्टचक्रा, नवद्वारा देवानां पुरी अयोध्या तथा 'नवद्वारे- पुरेदेही' कथनों से अथर्ववेद इसी की ओर संकेत करता है। अयोध्या का तात्पर्य उस नगर से है जिस पर युद्ध के द्वारा विजय नहीं प्राप्त की जा सकती है। अयोध्या में श्रीराम का जन्म प्रत्येक कल्प में होता है। भारतीय काल गणना के अनुसार इस पृथ्वी पर श्रीराम का जन्म २८ वार हो चुका है। इस प्रकार अब तक पृथ्वी पर वर्तमान अयोध्या को मिलाकर २८ अयोध्या नगर रहे होंगे।

अयोध्या जिस क्षेत्र में स्थित है, उसे मुगल काल के पहले 'बैसवारा' के नाम से जाना जाता था। वैसवारा कब और कैसे बदल कर अवध हो गया, किसी को पता नहीं। किन्तु इस क्षेत्र के लोगों ने ही वैसवारा को भुलाकर अवध को अपना लिया। तुलसीदास ने भी रामचरितमानस के माध्यम से मुगलों द्वारा दिये गये शब्द अवध को प्रधानता दी। आज इस क्षेत्र के कम लोग जानते हैं कि वे जहां रहते हैं, उसे कभी बैसवारा कहा जाता था। तुलसीदास को उनके विरोधी 'धूत, अवधूत', रजपूत और जोलहा (जुलहा) तक कहते थे। यह स्वयं तुलसीदास ने स्वीकार किया है। तुलसीदास को जोलहा कहने का एक कारण संभवत: उनका 'अयोध्या' के स्थान पर 'अवध' शब्द से लगाव भी हो सकता है। हम भी यही मान लेते हैं कि तुलसी का 'अवध' से तात्पर्य 'अयोध्या' ही रहा होगा। वैसे वास्तविकता यही है कि अवध या अयोध्या वही है, जहां श्रीराम रहते हैं- 'अवध तहां जहं राम निवासू'। हम भी श्रीरामवनगमन के पावनपथ पर अयोध्या से ही यात्रा प्रारम्भ करते हुए सिंगरौर पहुंचे। आगे की यात्रा अगले पृष्ठों में। भगवान राम तो अपने पूर्व अवतारों में इस मार्ग पर २८ बार जा चुके हैं हम तो प्रत्यक्षत: एक ही बार जा सके हैं।

इस बीच आल इण्डिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड के सदस्य अब्दुल रहीम कुरैशी ने अभी प्रकाशित अपनी पुस्तक अयोध्या का तनाज+ ा में लिखा है कि अयोध्या पाकिस्तान में थी, जिसे रामडेरी कहा जाता था। विभाजन के बाद इसका नाम बदल कर रहमानडेरी कर दिया गया है। उन्होंने यह भी लिखा है कि वास्तविक राम जन्मभूमि पाकिस्तान के हड+ प्पा में थी।

,,,,,,,,,,,,,,,,,,,

श्रीरामवनगमन के पावन पथ पर

अयोध्या से वन के लिये प्रस्थान करने के बाद, वाल्मीकि रामायण में जिस स्थान का सबसे पहले उल्लेख है, वह है Þतमसाß नदी का तीर। अयोध्या से तमसा तीर पहुंचते-पहुंचते सूर्यास्त का समय हो गया था। श्रीराम रथ द्वारा जा रहे थे, उनके साथ भारी संख्या में अयोध्या के नागरिक भी थे, जो उन्हें वन न जाने के लिए मना रहे थे।

एवं विक्रोशतां तेषां द्विजातीनां निवर्तने।

ददृशे तमसा तत्र वारयन्तीव राघवम्॥

(वा.अयो.सर्ग ४५ श्लोक ३२)

कवि का कहना है कि मानो तमसा नदी भी भगवान श्रीराम को वन जाने से रोक रही थी। श्री राम ने उस रात तमसा तीर पर विश्राम किया। यह स्थान अयोध्या से बहुत दूर नहीं होना चाहिये। तमसा नदी आज भी अयोध्या के दक्षिण में बहती है। यद्यपि इस नदी में वर्षा ऋतु के अलावा अन्य समय में बहुत कम जल होता है। तमसा नदी के किनारे वह स्थान कहां है, जहां श्रीराम ने विश्राम किया, कहना मुश्किल है। अकबरपुर जिले के पूर्व मंत्री सीताराम निषाद का मानना है कि यह स्थान बीकापुर तहसील के गवासपुर में है, जिस स्थान पर श्रीराम ने तमसा को पार किया था। प्रातःकाल, कुछ रात रहते ही वे उठ कर वहां से आगे निकल गये। उन्होंने तमसा नदी को रथ से ही पार किया, नाव से नहीं। ऐसा लगता है कि उस समय भी तमसा में अधिक पानी नहीं रहता होगा। लोगों का विश्वास है कि तमसा का वह तट वर्तमान मंडाह या मंडार गांव है, जिस स्थान पर श्रीराम ने नदी पार किया। वहीं गौरा गांव है, जो अयोध्या से लगभग २० किलोमीटर है। तमसा नदी के बाद श्रीराम ने वेद श्रुति नदी को पार किया।

ततो वेदश्रुंति नाम शिववारिवहां नदीम्।

उत्तीर्यामिमुखः प्रायाद् अगस्त्याध्युषितां दिशाम्॥

(वा. अ.सर्ग ४९ श्लोक १०)

आजकल वेद ऋुति नदी का अस्तित्व लगभग समाप्त हो गया है। एक छोटी सी नदी है, जिसे 'बेसुई नाला' कहा जाता है। लोगों का मानना है कि यही बेसुई नालाß रामायण कालीन 'वेदश्रुति' नदी है। तमसा नदी बाराबंकी जिले के भभौली तालाब से निकलती है। श्रवण क्षेत्र अम्बेडकरनगर में दोनों नदियां मिलकर टोंस नदी बन जाती है। वेदश्रुति से काफी देर तक चलने के बाद श्रीराम ने गोमती नदी को पार किया।

गत्वा तु सुचिरं कांल ततः शीतवहां नदीम्।

गोमतीं गोयुतानूपामतरत् सागरांगमाम्॥

(अयो. सर्ग ४९ श्लोक ११)

यहां ध्यान देने की बात यह है कि वाल्मीकि ने गोमती नदी को समुद्रगामिनी नदी कहा है, जबकि वर्तमान में यह नदी समुद्र में नहीं मिलती है। परन्तु इतना तो तय है कि रामायण काल में यह

एक बड+ी नदी होगी। परन्तु श्रीराम ने इस नदी को भी घोड+ों से युक्त रथ द्वारा पार किया। गोमती पार करने के बाद श्रीराम ने Þस्यन्दिकाß नदी को पार किया, जिसे आजकल Þसईß नाम से जाना जाता है।

गोमतीं च अपि अतिक्रम्य राघवः शीघ्रगैः हयैः।

मयूरहंसाभिरूतां ततार स्यन्दिकां नदीम्।।

(अयो. सर्ग ४९ श्लोक १२)

ऐसा लगता है कि स्यन्दिका नदी उस समय कोसल देश (अयोध्या राज्य) की दक्षिणी सीमा थी। क्योंकि उसको पार करने के बाद श्रीराम ने कहा कि न जाने कब पुनः लौट कर आऊँगा। स्यन्दिका नदी को आजकल सई नदी कहते हैं। मैने इसका उद्गम स्थान भी देखा है। रायबरेली की दक्षिणी सीमा पर सई नदी बहती है। यहां भगवान कीनाराम का आश्रम है। रायबरेली के हमारे मित्र रामेन्द्र सिंह की —पा से मुझेरायबरेली में सई नदी के किनारे स्थित भगवान कीनाराम का आश्रम देखने को मिला। ऐसी मान्यता है कि भगवान ने चित्रकूट जाते समय सई नदी पार कर इसी आश्रम में रात्रि विश्राम किया था। यद्यपि इसका उल्लेख वाल्मीकि रामायण में नहीं है। परन्तु इतना तो अवश्य संभव है कि सई नदी पार कर भगवान श्रीराम ने वहां विश्राम किया और तद्नुसार गंगा किनारे श्रृंगवेरपुर चले गये थे। श्रीराम के समय भगवान कीनाराम का प्रादुर्भाव नहीं हुआ था, अतः यह आश्रम भी नहीं रहा होगा। परन्तु जब भगवान कीनाराम का विश्वास है कि श्रीराम ने यहां विश्राम किया था तो यह गलत नहीं होगा।

विशालान् कोसलान्रम्यान्, यात्वा लक्ष्मणपूर्वजः।

अयोध्यांम् उन्मुखो श्रीमान्, प्रांजलिः वाक्यम् अब्रवीत्।।

(अयो. सर्ग ५० श्लोक१)

इसके बाद मध्य मार्ग से होते हुए श्रीराम आगे बढ+ने लगे। रास्ते में सुखःसुविधा से सम्पन्न वत्स राज्य था। उस राज्य में श्रीराम ने गंगा नदी का दर्शन किया।

तत्र त्रिपथगां दिव्यांशीततोयाम् अशैलवाम्।

ददर्श, राघवो गंगां रम्यां ऋषिनिषेविताम्।।

(अयो. सर्ग ५० श्लोक १२)

समुद्रमहिषीं गंगा सारसक्रौंचनादिताम्।

आससाद महाबाहुः श्रृंगवेरपुरं प्रति।।

(अयो. सर्ग ५०श्लोक २६)

अविदूरादयं नद्याः बहुपुष्पप्रवालवान्।

सुमहान् इंगुदीवृक्षो वसामो अत्रैव सारथे॥

(अयो. सर्ग ५० श्लोक २८)

रामः अभियाय तं रम्यं वृक्षम् इक्ष्वाकुनन्दनः।

रथात् अवतरत् तस्मात् सभार्यः सहलक्ष्मणः॥

(अयो. सर्ग ५० श्लोक ३१)

तत्र राजा गुह्यो नाम रामस्य आत्मसमः सखा।

निषादजात्यो बलवान् स्थपितश्चेति विश्रुतः॥

(अयो. सर्ग ५० श्लोक ३३)

श्रीराम ने इंगुदी वृक्ष के पास रथ से उतर कर सुमन्त से कहा कि आज रात्रि विश्राम यही करेंगे। वहां का राजा निषाद राज गुह्म श्रीराम का परम प्रिय सखा था।

इस प्रकार अयोध्या से चलकर दूसरे दिन सांयकाल श्रीराम श्रृंगवेरपुर पहुंच गये। परन्तु श्रीभरत अयोध्या से चलकर पहले दिन ही शाम तक श्रृंगवेरपुर पहुंच गये, उनके जाने के लिए सड+ क का निर्माण कराया गया, उनके साथ नौ हजार हाथी और साठ हजार रथ थे। श्री भरत ने भी सिंगरौर में रात्रि विश्राम किया।

श्रृंगवेरपुर में जिस वृक्ष के नीचे श्रीराम और सीता जी ने रात्रि विश्राम किया, उसे वाल्मीकि ने इंगुदी वृक्ष बताया है, जबकि तुलसीदास ने उसे सिसुंपा वृक्ष कहा है। इंगुदी एक औषधि का वृक्ष है। उत्तर रामचरितम् (१/१४) में 'इंगुदी पादपः' ऐसा कहा गया है कि कुछ लोग इसे हिंगोट का वृक्ष बताते हैं। कालिदास ने भी इंगुदीफल का प्रयोग अभिज्ञान शाकुन्तलम् में किया है।

रामचरित मानस में तुलसीदास ने अयोध्या से श्रीराम के प्रस्थान के बाद वाल्मीकि की तरह पहली रात तमसा के किनारे विश्राम करने का उल्लेख किया। वाल्मीकि रामायण की तरह रामचरित मानस में कहा गया कि तमसा के तट से दो जुग रात बीत जाने के बाद श्रीराम चल देते हैं और उसके बाद दूसरे दिन श्रृंगवेरपुर पहुंच जाते हैं। बीच में किन-किन नदियों को पार किया इसका उल्लेख नहीं हैं।

बालक वृद्ध विहाइ गृह लगे लोग सब साथ

तमसा तीर निवासु किय प्रथम दिवस रघुनाथ

(मानस अयो. दोहा- ८४)

जबहि जाम जुग जामिनि बीती

राम सचिव सन कहेउ सप्रीती।

खोज मारि रथु हांकहु ताता। आन उपाय बनिहि नहि बाता।

(मानस अयो. दोहा- ८५)

सीता सचिव सहित दोउ भाई

सृंगबेरपुर पहुंचे जाई।

उतरे राम देवसरि देखी,

कीन्ह दडवत हरषु विसेषी।

(मानस अयो. दोहा- ८६)

निषादराज गुह्म ने श्रीराम से अपने नगर में चलने का आग्रह किया, किन्तु श्रीराम ने अपनी विवशता बताई कि उन्हें पिता के वचन के अनुसार वन में ही रहना है। इसके बाद निषादराज ने दु:खी मन से उन्हें एक सुन्दर सिंसुपा वृक्ष दिखाया, जहां उन्होंने रात्रि विश्राम किया।

तब निषादपति उर अनुमाना।

तरू सिंसुपा मनोहर जाना।।

लै रघुनाथहि ठांव देखावा।

कहेउ राम सब भाति सुहावा।।

(मानस अयो. दोहा- ८९)

वाल्मीकि रामायण में इस वृक्ष का नाम इंगुदीवृक्ष दिया है, जबकि तुलसीदास ने इसे सिसुंपा कहा है। श्रृंगवेरपुर में इस समय जिस वृक्ष को आरोपित किया गया है, वह शीशम का वृक्ष है। मैने स्वयं देखा है।

श्रृगंवेरपुर को वर्तमान में सिंगरौर के नाम से जाना जाता है। यह हिन्दुओं का एक पवित्र तीर्थ स्थल है। श्रृंगवेरपुर का उल्लेख स्कंध पुराण, वाल्मीकि रामायण, राम चरित मानस और महाभारत में मिलता है। कहते हैं, कि ऋषि श्रृंगी ने यहां तपस्या की थी। श्रृंगवेरपुर धाम की परिक्रमा पांच घंटों में की जाती है। परिक्रमा में गऊघाट, मौनीघाट, श्रृंगवेरपुर घाट, रामचौरा घाट और कुरई घाट शामिल है। पुराणों के अनुसार भगवान राम ने रामचौरा घाट पर विश्राम किया था। यहीं पर उन्होंने लक्ष्मण जी को उपदेश दिया था।

सीताजी ने गंगा पार करते समय एक अंजुलि मिट्टी ली थी और उस पार जाने के बाद उसे करई घाट पर छोड+ दिया था। इसी के प्रभाव से यहां बाढ+ की विभीषिका नहीं आती है तथा श्रृंगवेरपुर से करई घाट तक गंगा निर्मल रहती हैं।

रामायण और महाभारत काल में श्रृंगवेरपुर प्रसिद्ध नगर था। सुप्रसिद्ध वैयाकरण नागोजी भट्ट ने यहीं रहकर 'शेखर' और 'मनोरमा' नामक महाभाष्य की रचना की थी। १९ नवम्बर १९८२ को तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी भी यहां आयीं थीं। इसके बाद २३ फरवरी १९८६ को शंकराचार्य श्री जयेन्द्र सरस्वती भी यहां पधारे थे। सुप्रसिद्ध कथा वाचक मुरारी बापू ने भी यहां कथा

सुनाई है। स्वामी रामभद्राचार्य के एक शिष्य ने इस स्थान का जीर्णोद्धार करा कर उसे आधुनिक रूप दिया है।

दिल्ली विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग की देखरेख में यहां उत्खनन कार्य कराया गया। यहां पर एक महल के अवशेष मिले हैं, जिसका संबंध निषादराज से जोड+ ा जाता है। उत्खनन में जो सामग्री मिली है वह सिंधु घाटी की सभ्यता के समकालीन बताई जाती है। पूरे राम वन गमन मार्ग में श्रृंगवेरपुर ही एक स्थान है, जहां इतने प्राचीन अवशेष मिले है, जिन्हें रामायणकालीन कहा जा सकता है। श्रीराम से संबंधित अन्य स्थानों पर इतनी प्राचीन सामग्री कहीं नहीं मिली है। श्रृंगवेरपुर के प्रधान पुरोहित से हमारी मुलाकात हुई। उनके आश्रम में भगवान शिव के प्राचीन लिंग और अन्य सामग्री मौजूद है। श्रृंगवेरपुर की ऐतिहासिकता देखने के बाद यह सिद्ध हो जाता है कि श्रीराम काल्पनिक नहीं बल्कि ऐतिहासिक पुरूष थे। इतना सब होते हुए भी श्रृंगवेरपुर का विकास नहीं है। श्रृंगवेरपुर इलाहाबाद से ३५ कि०मी० पश्चिम है। पं० रामावतार शर्मा ने इलाहाबाद से सिगरौर की दूरी २० कि०मी० बताई है, जबकि वास्तव में दोनों स्थानों के बीच दूरी ३५ कि०मी० है।

कथा वाचक मुरारी बापू और स्वामी रामभद्राचार्य की प्रेरणा से इस स्थान का कुछ विकास किया गया है।

तुलसीदास ने श्रीराम वन गमन के समय सई और गोमती नदियों का उल्लेख नहीं किया। परन्तु श्रीराम को मनाने के लिए जब भरत प्रस्थान करते है, तो उनकी यात्रा में तुलसीदास ने कुछ नदियों का उल्लेख किया-

तमसा प्रथम दिवस करिवासू,

दूसरि गोमती तीर निवासू

सई तीर वसि चले विहाने

सृंगवेरपुर तब निअराने

(मानस अयो. दो १८८ के ऊपर तथा नीचे)

एहि विधि भरत सेनु सब संगा,

दीखि जाइ जग पावनि गंगा।

रामघाट कह कीन्ह प्रनामू,

भा मनु मगनु मिले जनु रामू।।

(अयोध्या दोहा- १९६ के नीचे)

जहंसिसुपा पुनीत तट,

रघुवर किय विश्राम।

अति सनेह सादर भरत,

कीन्हेउ दंड प्रनाम।।(अयो. दोहा- १९८)

परन्तु चित्रकूट से भरत के लौटते समय तुलसीदास ने कुछ नदियों का उल्लेख किया-

जमुना उतरि पार सब भयऊ।

सो बासर बिनु भोजन गयऊ।।

उतरि देवसरि दूसर बासू,

राम सखा सब कीन्ह सुपासू।।

सई उतरि गोमती नहाये,

चौथे दिवस अवधपुर आये।।

चित्रकूट से चलकर पहले दिन भरत ने जमुना पार कर रात्रि विश्राम बिना भोजन किया। दूसरी रात्रि श्रृंगवेरपुर में तथा तीसरी रात श्रृंगवेरपुर के बाद कहीं की होगी और चौथे दिन अयोध्या आ गये, जबकि अयोध्या से जाते समय एक दिन में ही वे श्रृंगवेरपुर पहुंच गये। तुलसीदास ने वेदश्रुति (विसई) नदी का उल्लेख नहीं किया है। लौटते समय तमसा का भी उल्लेख नहीं किया। श्रृंगवेरपुर और अयोध्या के बीच भरत ने तीसरी रात कहां बिताई इसका उल्लेख मानस में नहीं है। तुलसीदास ने सीधे यही कह दिया कि वे चौथे दिन अयोध्या पहुंच गये। संभवत: भरत ने लौटते समय गोमती के किनारे तीसरी रात बिताई, जहां उन्होंने अयोध्या से चित्रकूट जाते समय विश्राम किया था। ऐसा लगता है भरत ने चित्रकूट से लौटते समय रायबरेली में सई नदी के तट पर रात बिताई थी, जहां आज बाबा कीनाराम का आश्रम है। तुलसीदास ने अपनी रचना अवधी भाषा में की है। अत: उन्होंने देहाती शब्दों का प्रयोग किया। परन्तु श्रृंगवेरपुर शब्द का प्रयोग करने में उन्हें कोई संकोच नहीं लगा, जबकि तुलसी के समय में इस स्थान का नाम सिंगरौर हो चुका था, जो आज भी लोक में विख्यात है।

श्रीराम और निषादराज गुह्म के मिलन की घटना के वर्णन में वाल्मीकि और तुलसी पर उनके समय का प्रभाव स्पष्ट दीखता है। वाल्मीकि का निषाद राज गुह्म, श्रीराम का आत्मीय सखा है, जबकि तुलसी का निषाद राज एक निम्न वर्ग का व्यक्ति है, जिसे अपनाकर भगवान राम ने महान समाज सुधार का कार्य किया।

तत्र राजा गुहो नाम रामस्य आत्मसम: सखा।

निषादजात्यो बलवान् स्थपतिश्चेति विश्रुत:।।

(अयोध्या सर्ग ५० श्लोक ३३)

नाथ कुसल पद पंकज देखे,

भयउँ भाग भाजन जन लेखे।

देव धरनि धमु धान तुम्हारा,

मैं जनु नीच सहित परिवारा।।

(मानस अयो. दोहा- ८८ के ऊपर)

श्रृंगवेरपुर से गंगा पार करते समय भगवती सीता ने नदी के बीच नाव पहुंचने पर गंगा जी से प्रार्थना की। इस घटना की याद में आज भी नदी के बीच स्थित एक द्वीप में आसपास के गांवों की महिलायें आकर नदी की पूजा करती है।

मध्यं तु समनुप्राप्य

भागीरथ्याः तु अनिन्दिता।

वैदेही प्रांजलिः भूत्वा

तां नदीम् इदम् अब्रवीत्॥ (अयो. सर्ग ५२ श्लोक ८२)

थोड+ी देर बाद ही वे नदी पार कर वत्स देश में प्रवेश कर गये।

सलोकपालम् अप्रतिमप्रभावः,

तीर्त्वा महात्मा वरदो महानदीम्।

ततः समृद्धान शु+ भसस्यमालिनः,

क्रमेण वत्सान् मुदितान् उपागमत्॥

(अयो.सर्ग ५२ श्लोक १०१)

भारद्वाज आश्रम पहुंचने से पहले श्रीराम ने एक वृक्ष के नीचे रात्रि विश्राम किया। यह वृक्ष श्रृंगवेरपुर से ज्यादा से ज्यादा १५ किलोमीटर दक्षिण होना चाहिए, क्योंकि श्रीराम सीता जी के साथ पैदल चल रहे थे और इससे अधिक दूरी तय नहीं कर सकते थे।

सः तं वृक्षं समासाद्य सन्ध्याम्, अन्वास्य पश्चिमाम्।

रामो रमयतां श्रेष्ठः इति होवाच लक्ष्मणम्॥

(अयो. सर्ग ५३ श्लोाक १)

ततस्तत्र समासीनौ नातिदूरे, निरीक्ष्य ताम्।

न्यग्रोधे सुकृताम् शय्याम्, भेजाते धर्मवत्सलौ।

(अयो. सर्ग ५३ श्लोाक ३३)

इसके बाद श्रीराम और सीता थोड+ी ही दूर पर वट वृक्ष के नीचे लक्ष्मण द्वारा बनाई गई शैया पर जाकर सो गये।

श्रृंगवेरपुर से संगम की दूरी आजकल ३५ किलोमीटर पूरब है। वहां पहुंचने में श्रीराम को दो दिन का समय लग गया क्योंकि वे लोग पैदल चल रहे थे। श्रृंगवेरपुर में गंगा पार कर उन्होंने बीच में न्यग्रोध वृक्ष के नीचे रात्रि बिताई। गोस्वामी तुलसीदास ने भी रामचरित मानस में इस वृक्ष का उल्लेख किया है।

तेहि दिन भयउ विटप तर बासू।

लखन सखा सब कीन सुपासू॥

इस संबंध में वहां स्थानीय लोगों ने मुझे बताया कि खिलजी राज्य तक वहां एक वट वृक्ष था, जिसकी लोग पूजा करते थे, किन्तु कहा जाता है अलाउद्दीन खिलजी ने इस वृक्ष को कटवा दिया।

प्रात प्रातकृत करि रघुराई,

तीरथराजु दीख प्रभु जाई॥

(अयो. दोहा- १०४ के नीचे)

तब प्रभु भरद्वाज पहिं आये

करत दंडवत मुनि उर लाये। (अयो.दो. १०५ के नीचे)

वहां भारद्वाज आश्रम में उन्होंने रात्रि विश्राम किया।-

राम कीन्ह विश्राम निसि प्रात प्रयाग नहाइ।

चलेसहित सिय लखन जन मुदित मुनिहि सिरुनाइ॥

(अयो. दोहा १०८)

मुनि बटु चारि संग तब कीन्हे।

जिन्ह बहु जनम सुकृत सब कीन्हें॥

(दोहा- १०८ के बीच)

भारद्वाज ऋषि ने श्रीराम के साथ कुछ विद्यार्थियों को लगा दिया, जिन्होंने उनका मार्ग दर्शन किया। उसी दिन श्रीराम ने यमुना नदी पार किया अर्थात यह स्थान प्रयाग से १५ किलोमीटर से ज्यादा नहीं होना चाहिए, क्योंकि इससे ज्यादा वे एक दिन में नहीं चल सकते थे।

बिदा किये बटु विनय करि

फिरे पाइ मनु काम।

उतरि नहाये जमुन जल

जो सरीर समस्याम। (अयो. दोहा- १.९)

वहीं पर एक तापस आया जो श्रीराम को अपना इष्ट मानता था। वहीं से श्रीराम ने निषाद राज गुह को वापस लौटा दिया-

तब रघुवीर अनेक विधि, सखहि सिखावनु दीन्ह।

राम रजायसु सीस धरि, भवन गवन तेइं कीन्ह।।

(अयो. दोहा १११)

वाल्मीकि ने श्रृंगवेरपुर के बाद स्थित उस वृक्ष (न्यग्रोध) को बड+ ा महत्व दिया है जहां श्रीराम ने रात बिताइ।

ते तु तस्मिन् महावृक्षे

उषित्वा रजनीं शुभाम्

विमले अभ्युदिते सूर्ये

तस्मात् देशात् प्रतस्थिरे। (अयो. सर्ग ५४ श्लोाक १)

धन्विनौ तौसुखं गत्वा

लम्बमाने दिवाकरे।

गंगायमुनयो: संधौ

प्रापतु: निलयं मुने:।। (अयो. सर्ग ५४ श्लोाक ८)

गंगा यमुना का संगम आज भी श्रृंगवेरपुर से लगभग ३५ किलोमीटर पूर्व हैं। सिंगरौर में गंगापार करने के बाद संगम तक पहुंचने में श्रीराम को दो दिन लगे अर्थात लगभग तीस कि०मी० चलना पड+ ा। परन्तु वाल्मीकि रामायण के अनुसार गंगा और यमुना के बीच न्यग्रोध वृक्ष के नीचे उन्होंने रात बिताई। चित्रकूट संगम से पश्चिम में है। अयोध्या से चित्रकूट जाने के रास्ते में संगम नहीं है। परन्तु ऐसा लगता है कि श्रीराम भारद्वाज ऋषि से मिलकर ही चित्रकूट जाना चाहते थे। इसीलिए

वे पहले संगम गये। यह भी हो सकता है कि उस समय अयोध्या से चित्रकूट जाने का मार्ग संगम से होकर जाता था। उस समय संगम की स्थिति भी कहीं और हो सकती है।

श्रीराम ने भारद्वाज मुनि से मिलकर अपना परिचय दिया। श्रीराम के पूछने पर पहले तो भारद्वाज ने उन्हें आश्रम में ही वनवास की अवधि बिताने की सलाह दी परन्तु बाद में उन्हें चित्रकूट पर्वत पर जाने को कहा।

दशक्रोश इतस्तात, गिरि: यस्मिन् निवत्स्यसि।

महर्षिसेवित: पुण्य:, पर्वत: शुभदर्शन:॥

गोलांगूलानुचरितो वानरर्क्षनिषेवित:।

चित्रकूट इति ख्यातो गंधमादनसंनिभ:॥

(अयो. सर्ग ५४ श्लोक २८+ २९)

भारद्वाज के इस कथन के अनुसार संगम से चित्रकूट की दूरी दश कोस अर्थात बीस मील या ३२ मिलोमीटर होनी चाहिए, जबकि यह दूरी इन दिनों १३० कि०मी० है। अयोध्या कांड के ५५वें सर्ग में ऋषि भारद्वाज ने श्रीराम को चित्रकूट पहुंचने के मार्ग का विस्तार से वर्णन किया। उन्होंने कहा कि संगम पर जाना और घाट पर एक बेड+ ा बनाकर यमुना पार करना। उसके बाद 'श्यामवट' के पास जाकर सीताजी उससे प्रार्थना करेगी। कुशल क्षेम के लिये आज भी संगम तट पर किले में एक श्यामवट है, परन्तु यह यमुना इस पार ही है। भारद्वाज ने कहा कि श्यामवट से एक कोस पर अर्थात दो मील पर 'नीलवन' मिलेगा जहां सल्लकी अर्थात चीड+ और बेर के पेड+ मिलेंगे। वर्तमान में इस प्रदेश में चीड+ के पेड+ नहीं मिलते हैं। चीड+ के पेड+ पहाड+ी और शीतल जलवायु में होते हैं। संभवत: उस समय चित्रकूट के आसपास की जलवायु ऐसी ही होगी।

क्रोश मात्र ततो गत्वा, नीलं प्रेक्ष्य च काननम्।

सल्लकीं बदरीमिश्रं, रम्यं बंशैश्च यामुनै:॥

(अयो. सर्ग ५५ श्लोाक ८)

यहां ऐसा लगता है कि भारद्वाज ऋषि श्रीराम को रास्ता बताने के लिए स्वयं आये थे, जबकि मानस के अनुसार उन्होंने उनके मार्ग दर्शन के लिये कुछ छात्रों को श्रीराम के साथ कर दिया था।

इसके बाद श्रीराम ने भारद्वाज मुनि को धन्यवाद दिया और उन्हें आश्रम लौट जाने के लिए कहा। थोड+ी देर में वे यमुना तट पर आ गये, एक बेड+ा बनाया और यमुना जी को पार किया। यहां भी भगवती सीता ने यमुना की बीच धारा में उनकी पूजा की और कहा कि सकुशल लौटने पर वे उनकी पुन: पूजा करेंगी। यमुना पार कर वे थोड+ी देर में 'श्यामवट' पहुंच गये-

ते तीर्णा: प्लवम् उत्सृज्य, प्रस्था यमुनावनात्।

श्यामं न्यग्रोधमासेदु:, शीतलं हरितच्छदम्॥

न्यग्रोधं समुपागम्य, वैदेही चाभ्यवन्दत।

नमस्ते अस्तु महावृक्ष, पारयेन् में पति:व्रतम्॥

(अयोध्या सर्ग ५५श्लोक २३, २४)

वाल्मीकि रामायण के अनुसार सबसे आगे लक्ष्मण, बीच में सीताजी और उनके पीछे श्रीराम चलते थे, परन्तु तुलसी के रामचरित मानस में श्रीराम आगे सीताजी बीच में और लक्ष्मण जी अन्त में चलते थे।

सीतामादाय गच्छ त्वमग्रतो भरतानुज।

पृष्ठतो अनुगमिष्यामि सायुधो द्विपंदा वर ॥

(अयो. सर्ग ५५ श्लोाक २७)

यही बात श्रीराम ने श्रृंगवेरपुर पार करने के बाद न्यग्रोध वृक्ष तक आने पर कहा।

अवश्यं रक्षणं कार्यम्, मद्विधै विजने वने।

अग्रतो गच्छ सौमित्रे, सीतां त्वाम् अनुगच्छतु।

(अयो. सर्ग ५२ श्लोाक ९५)

परन्तु राम चरित मानस में-

आगे राम लखुन बने पाछे।

तापस बेस विरात काछें॥

उभय बीच सिय सोहति कैसी

व्रहम जीव बिच माया जैसी।।

(मानस अयो. दोहा १२२ के नीचे)

वाल्मीकि रामायण के अनुसार श्रीराम यमुना नदी पार करने के बाद श्याम वट का दर्शन करके एक क्रोश तक चलकर यमुना के तटवर्ती वन में विचरण करने लगे तथा नदी के समतल तट पर आकर वहीं रात्रि विश्राम किया।

क्रोशमात्रं ततो गत्वा, भ्रातरौ रामलक्ष्मणौ।

बहून मेध्यान् मृगान् हत्वा, चेरतु: यमुना वने।।

(अयो. सर्ग ५५ श्लोाक ३२)

विहृत्य से बर्हिणपूगनादिते, शुभे वने वारणवानरायुते।

समं नदीवप्रमुपेत्य सत्वरं, निवासमाजग्मुरदीनदर्शना:।।

(अयो. सर्ग ५५ श्लोाक ३३)

तुलसीदास का मानस पढ+ ने से ऐसी धारणा बनती है कि लक्ष्मण जी पूरे वनवास काल में सोये ही नहीं। परन्तुं वाल्मीकि रामायण में ऐसा कुंछ नहीं है। यमुना तट पर रात्रि विश्राम के समय प्रात: काल होने पर स्वयं श्रीराम ने लक्ष्मण को जगाया। यद्यपि यह स्वाभाविक नहीं लगता है। घनघोर जंगल में रात्रि विश्राम के समय श्रीराम या लक्ष्मण जी कोई तो जागकर वन्य जीवों से रक्षा कर रहा होगा। यमुना का यह समतल स्थान चित्रकूट से लगभग १५ किलोमीटर उत्तर होना चाहिए। क्योंकि यहां से चलकर वे लोग उसी दिन चित्रकूट पहुंच गये, अर्थात यमुना तट से चित्रकूट की दूरी १५ किलोमीटर होनी चाहिए।

वाल्मीकि रामायण में ऋषि भारद्वाज ने श्रीराम को चित्रकूट में रहने की सलाह दी, जबकि तुलसीदास कृत रामचरित मानस में ऋषि वाल्मीकि ने उन्हें चित्रकूट में रहने की सलाह दी।

श्रीराम का भारद्वाज आश्रम पहुंचने का समय वसन्त या शरद ऋतु का होगा। वैसे श्रीराम आश्विन मास में शुक्ल पक्ष की पंचमी को चौदह वर्ष पूरा होने पर भारद्वाज आश्रम आये थे।

(अयो. सर्ग ५६ श्लोाक ६) के अनुसार शिशिर काल समाप्त हो गया। वनों और पर्वतों पर फूल खिले हुये थे। यमुना के समतल से चलकर वे चित्रकूट पहुंच गये। वहां वे

वाल्मीकि आश्रम गये। वहीं उन्होंने मुनि के आदेश से अपनी पर्णशाला बनाई। वर्तमान में वाल्मीकि आश्रम चित्रकूट के पास लालापुर में माना जाता है, जो चित्रकूट नगर से लगभग १५ किलोमीटर है।

तत्स्तौ पादचारेण गच्छन्तौ सह सीतया।

रम्यम् आसेदतु: शैलम्, चित्रकूटं मनोरमम्॥

(अयो. सर्ग ५६ श्लोाक १२)

इति सीता च रामश्च, लक्ष्मणश्च कृतांजलि:।

अभिगम्य आश्रमम् सर्वे, वाल्मीकिम् अभिवादयन्॥

(अयो. सर्ग ५६ श्लोाक १६)

गोस्वामी तुलसीदास ने यमुना पार करने पर श्याम वट का उल्लेख नहीं किया। उन्होंने संगम तट पर ही अक्षय वट का उल्लेख किया है। परन्तु तुलसीदास ने यमुना पार करने के बाद श्रीराम आदि का वट वृक्ष के नीचे विश्राम करने का उल्लेख किया है। गोस्वामी जी के समय यही स्थिति थी। वाल्मीकि के अनुसार श्रीराम अयोध्या से चलने के बाद पांच रातें बिताकर छठे दिन चित्रकूट पहुंच गये। रामचरितमानस के अनुसार यमुनापार के बाद चित्रकूट का पूरा क्षेत्र ग्रामीण क्षेत्र लगता है, जबकि वाल्मीकि के अनसार पूरा क्षेत्र घनघोर वनों से आच्छादित था। मानस में भी वाल्मीकि आश्रम पहुंचने से पहले श्रीराम ने वट वृक्ष के नीचे रात्रि विश्राम किया।

तब रघुवीर श्रमित सिय जानी, देखि निकट बट सीतल पानी।

तंह बसि कन्दमूल फल खाई, प्रात नहाइ चले रघुराई॥

(दोहा १२४ के ऊपर)

सुचि सुन्दर आश्रमु निरखि, हरषे राजीव नैन।

सुनि रघुवर आगमनु मुनि, आगे आयऊ लेन॥

(अयो. दोहा १२४)

रामचरितमानस के अनुसार वाल्मीकि का आश्रम चित्रकूट पर नहीं था, उससे पहले ही था। परन्तु वाल्मीकि ने उन्हें चित्रकूट पर रहने की सलाह दी, जबकि वाल्मीकि रामायण में भारद्वाज ने उन्हें चित्रकूट पर रहने की सलाह दी।

चित्रकूट गिरि करहु निवासू।

तहं तुम्हार सब भांति सुपासू।।

(मानस अयो. दोहा- १३१ के नीचे)

लखन जानकी सहित प्रभु, राजत रुचिर निकेत।

सोह मदनु मुनि बेष जनु, रति रितुराज समेत।।

(अयो. दोहा १३)

वाल्मीकि रामायण के अनुसार भरत श्रृंगवेरपुर में गंगा पार कर भारद्वाज आश्रम पहुंच गये। बीच में उस स्थान का उल्लेख नहीं, जहां श्रीराम सीता तथा लक्ष्मण ने रात बिताई थी।

भरत जी गंगा पार कर 'प्रयाग वन' में भारद्वाज आश्रम पहुंच गये, यहां संगम का उल्लेख नहीं है।

रामवनगमन मार्ग में भारद्वाज आश्रम को लेकर कुछ भ्रम की स्थिति है। भारद्वाज ऋषि ने भरत जी के पूछने पर कहा कि उनके आश्रम से चित्रकूट की दूरी अर्धतृतीय योजन है, जबकि श्रीराम से वार्तालाप में उन्होंने बताया कि उनके आश्रम से चित्रकूट की दूरी Þदश क्रोशß है।

भरतार्ध तृतीयेषु योजनेषु अजने वने।

चित्रकूट गिरि: तत्र रम्य:निर्झर कानन:।।

(अयो सर्ग ९२ श्लोक १०)

परन्तु चित्रकूट से लौटते समय भरत ने देखा कि थोड+ी दूर पर ही भारद्वाज आश्रम है।

अदूरात् चित्रकूटस्य ददर्श भरत: तदा।

आश्रमं यत्र स मुनि: भरद्वाजकृतालय:।।

(अयो सर्ग ११३ श्लोक ५)

भारद्वाज का यह आश्रम यमुनां नदी के दक्षिण था।

ततस्ते यमुनां दिव्यां नदीं।

तीर्त्वोर्म्मिमालिनीम्।

ददृशुः तां पुनः सर्वे,

गगां शिवजलां नदीम्। (अयो सर्ग ११३ श्लोक २१)

ऐसा लगता है कि भारद्वाज ऋषि के दो आश्रम थे, एक जमुना के उस पार, चित्रकूट के पास जहां उन्होंने चित्रकूट से लौटते समय भरत से भेंट की। भारद्वाज का दूसरा आश्रम यमुना के उत्तर में था, जो चित्रकूट से दस क्रोश या बीस मील या ३२ किलोमीटर था। वाल्मीकि रामायण में श्रीराम ने यमुना नदी को स्वयं के बनाये हुये बजरे से पार किया, लगता है उस जगह मल्लाह नहीं रहते थे।

रामचरितमानस में स्थिति इससे कुछ भिन्न है। भरत जी पहली रात तमसा के किनारे, दूसरी गोमती के किनारे, तीसरी रात सई के किनारे और चौथे दिन श्रृंगवेरपुर पहुंचे तथा पांचवें दिन तीसरे पहर प्रयाग पहुंचे। वे रथ से गये थे। इससे पहले रायबरेली के पास भगवान कीनाराम के वर्तमान आश्रम स्थल पर रात्रि विश्राम किया।

तमसा प्रथम दिवस करि बासू

दूसर गोमतितीर निवासू। मानस अयो. (दोहा १८७ चौ. ७+ ८)

सई तीर बसि चले बिहाने

सृंगवेरपुर तब निअराने॥ मानस अयो. (दोहा १८८ चौ. १)

भरत तीसरे पहर कंहँ

कीन्ह प्रवेस प्रयाग।

कहत राम सिय राम सिय

उमगि उमगि अनुराग ॥ मानस अयो. (दोहा २०३ अयो.)

पांचवें दिन रात्रि विश्राम भारद्वाज आश्रम प्रयाग में करके छठे दिन प्रातः चित्रकूट के लिए प्रस्थान किया, उस दिन रात्रि विश्राम बीच में ही किया। अगले दिन अर्थात सातवें दिन यमुनातट पर पहुंच गये और वहीं रात्रि विश्राम किया अर्थात आठवें दिन प्रातः चलकर रात्रि विश्राम रास्ते में किया।

इस प्रकार नवें दिन चित्रकूट पहुंच गये। प्रयाग से चलने के बाद भरत ने उस वट वृक्ष को देखा जहां श्रीराम ने विश्राम किया था-

राम बास थल विटप बिलोके।

उर अनुराग रहत नहि रोके।। (अयो. दोहा २१५ के नीचे)

यमुना पार करने के पहले वहीं श्री भरत ने रात्रि विश्राम किया।

बीच बास करि जमुनहिं आये

निरखि नीरू लोचन जल छाये। (अयो. दोहा २१९ के नीचे)

जमुन तीर तेहि दिन करि बासू।

भययु समय सम सबहि सुपासू। (अयो. दोहा २२० के नीचे)

चले नहाइ नदिहि सिरनाई।

साथ निषादनाथ दोउ भाई।। (अयो. दोहा २२० के नीचे)

तेहि बासर बसि प्रातही,

चले सुमिरि रघुनाथ, (चित्रकूट के पहले अंतिम रात्रि निवास)

राम दरस की लालसा,

भरत सरिस सब साथ। (दोहा २२४ अयो. मानस)

चित्रकूट से लौटते समय भरत चौथे दिन ही अयोध्या पहुंच गये, जबकि जाते समय नौवें दिन पहुंचे थे।

जमुना उतरि पार सब भयऊ।

सो बासर बिनु भोजन गयऊ।।

उतर देवसरि दूसर वासू,

राम सखा सब कीन्ह सुपासू।।

सई उतरि गोमती नहाये,

चौथे दिवस अवधपुर आये।

वाल्मीकि रामायण में भारद्वाज ऋषि के दो प्रकार के कथन के अनुसार प्रयाग तथा भारद्वाज आश्रम की स्थिति के बारे में सन्देह पैदा होना स्वाभाविक है। राष्ट्रीय रामायण मेला, चित्रकूट की रजत जयन्ती स्मारिका के पृष्ठ ६४ पर शंभुनाथ टण्डन का एक लेख छपा है- जो राजापुर तुलसी के गाथाß। इस लेख में उन्होंने लिखा है-Þभारत सरकार में गृहमंत्री रहे इलाहाबाद के विद्वान एडवोकेट कैलाशनाथ काटजू ने १९४६ में वाल्मीकि रामायण में वर्णित रामवनगमन यात्रा पथ तथा रात्रि विश्राम स्थलों की तर्क सहित छानबीन करने के बाद सिद्ध किया था कि रामायण काल में गंगा यमुना का संगम स्थल एवं भारद्वाज मुनि का आश्रम भी राजापुर से लगभग पांच मील दूर लालापुर ग्राम में था। इस संबंध में विश्वसनीय प्रमाण यह है कि मुनि भारद्वाज ने राम को वनस्थल की जानकारी कराते हुए उनके साथ स्वयं जाकर वह स्थान दिखाया था, जहां से यमुना पार करने की सुविधा थी। इससे स्पष्ट है कि संगमतट उनके आश्रम से यमुना का वह घाट अधिक दूर नहीं था। यमुना पार कर श्रीराम वाल्मीकि से भेंट करने पहुंचे थे, जिन्होंने उन्हें चित्रकूट में निवास करने का मार्ग दर्शन किया था। वाल्मीकि रामायण के अनुसार ही राम, वाल्मीकि आश्रम से दो दिन की यात्रा के बाद चित्रकूट पहुंच गये थे। जिससे प्रगट है कि गंगा यमुना का संगम एवं दोनों मुनियों का आश्रम चित्रकूट से २५-३० मील से अधिक दूरी पर नहीं थे।

भगवान बुद्ध के काल में संगम का स्थान उदयन की राजधानी कौशाम्बी के निकट बताया जाता है, जो प्रयाग के वर्तमान संगम स्थल से २५-३० मील पश्चिम है। अत: रामायण काल में उससे भी कुछ पश्चिम राजापुर एवं सिराथू के निकट गंगा यमुना का संगम होना गलत नहीं कहा जा सकता। आज भी गंगा नदी सिराथू से केवल छ: मील दूर कड+ ा में बह रही है, जहां से गंगा पार कर कालाकांकर जाया जाता है।

लेखक ने जो निष्कर्ष निकाला है कि वह मात्र कल्पना नहीं लगती है। वाल्मीकि रामायण के अनुसार अयोध्या से श्रृंगवेरपुर होकर चित्रकूट जाने में श्रीराम को जहां रात्रि विश्राम करना पड+ ा, उसका विवरण इस प्रकार है- श्रृंगवेरपुर में गंगा पार करने के बाद पहला रात्रि विश्राम वट वृक्ष के नीचे, दूसरा रात्रि विश्राम भारद्वाज ऋषि आश्रम, तीसरा रात्रि विश्राम यमुना तट पर, चौथा रात्रि विश्राम वाल्मीकि आश्रम से पहले और उसके बाद चित्रकूट में ही वाल्मीकि का आश्रम। इस प्रकार भारद्वाज आश्रम से चित्रकूट की दूरी कम से कम ४५ किलोमीटरं होनी चाहिए। यह दूरी इस बात पर आधारित है कि श्रीराम औसतन १५ किलोमीटर प्रतिदिन चलते होंगे। भारद्वाज ने स्वयं कहा कि

उनके आश्रम से चित्रकूट की दूरी दस क्रोश्या बीस मील के बराबर ३२ किलोमीटर। इस हिसाब से श्रीराम प्रतिदिन औसतन दस किलोमीटर चलते थे।

जन सन्देश टाइम्स लखनऊ के ५ सितम्बर २०१३ में प्रकाशित डॉ० चन्द्र विजय चतुर्वेदी (मोबाइल नं०- ९४१५६१४१०८) के एक लेख में बताया गया है कि इलाहाबाद विश्वविद्यालय के प्रोफेसर नगेन्द्रनाथ बोस ने एक शोध लेख में बताया है कि ६००-४०० ईस्वीं पूर्व में गंगा और यमुना का संगम वर्तमान संगम से दस मील पश्चिम भीटा में होता था। भीटा का बौद्ध कालीन नाम सहजाती था। भीटा से प्राप्त एक सिक्के में उल्लेख है कि यह स्थान व्यापारिक केन्द्र था। प्रसिद्ध इतिहासकार डॉ० आर.सी. मजूमदार ने सिक्के के आधार पर एक शोध पत्र तैयार करके बंगाल रायल एशियाटिक सोसाइटी के समक्ष प्रस्तुत किया था। वे भी इसी निष्कर्ष पर पहुंचे थे कि बौद्ध काल में गंगा यमुना का संगम आधुनिक संगम से पश्चिम रहा होगा।

अयोध्या, श्रृंगवेरपुर, प्रयाग और चित्रकूट की वर्तमान स्थिति को देखते हुए ऐसा लगता है कि जिस व्यक्ति को अयोध्या से चित्रकूट जाना हो, वह प्रयाग क्यों जायेगा। लगता है प्रयाग यात्रा का विवरण बाद में वाल्मीकि रामायण में जोड+ दिया गया, क्योंकि प्रयाग की जो वर्तमान स्थिति है, वह वाल्मीकि रामायण से मेल नहीं खाती है। इसलिए ज्यादा संभावना यही है कि इलाहाबाद का भारद्वाज आश्रम वह आश्रम नहीं है, जहां श्रीराम ने भारद्वाज ऋषि से भेंट की थी। यह आश्रम चित्रकूट से ३०-३२ कि०मी० पूर्व होना चाहिए। इसके बाद चित्रकूट से १६ कि०मी० दूर भारद्वाज का एक और आश्रम रहा होगा। इसी प्रकार श्रीराम ने जहां यमुना नदी पार की होगी वह स्थान भी चित्रकूट से २० कि०मी० पहले होना चाहिये। अत: ऐसा नहीं लगता कि श्रीराम ने वर्तमान राजापुर के पास यमुना को पार किया होगा।

श्रृंगवेरपुर से गंगा पार कर पश्चिम की तरफ यमुना नदी में द्वीप है। उसे खुरई गांव टापू कहते हैं वहां कड+ सीतला देवी का मंदिर है। ऐसी मान्यता है कि सीता जी ने यमुना पार करते समय इसी स्थान पर यमुना जी की पूजा की थी।

वाल्मीकि रामायण के अनुसार भारद्वाज आश्रम से चित्रकूट की दूरी दश क्रोश की अर्थात ३२ कि०मी० थी। इस दूरी को तय करने में श्रीराम को तीन दिन का समय लगा। उन्होंने बेड+ ा बनाकर यमुना पार किया और Þन्यग्रोध श्यामवटß की पूजा की, जो यमुना के किनारे समतल पर स्थित था। श्यामवट से एक क्रोश अर्थात दो मील पर नील काननß था।

(अयो. सर्ग ५५ श्लोक ८)

इस प्रकार जहां श्रीराम ने यमुना नदी को पार किया वहां से चित्रकूट की दूरी बीस किलोमीटर से ज्यादा नहीं होनी चाहिए। चूंकि उन्हें वहां जाने में दो दिन लग गये। इसके पहले भारद्वाज आश्रम से चलकर यमुना पार करने, श्यामवट की पूजा करने और नदी के किनारे नील वन में आने में उन्हें एक दिन का समय लगा था।

रामचरितमानस के अनुसार भारद्वाज आश्रम से चलकर यमुना तट आने में उन्हें दो दिन का समय लगा, क्योंकि उन्होंने एक जगह रात्रि विश्राम किया-

बीच बास करि जमुनहि आये।

निरखि नीरू लोचन जल छाये॥ (दोहा २१९), मानस अयोध्या

भारद्वाज आश्रम से चलकर दूसरी रात उन्होंने यमुना तट पर बिताई। इसके बाद एक रात बीच में बिताई और अगले दिन चित्रकूट वाल्मीकि आश्रम पहुंच गये। वर्तमान में वाल्मीकि आश्रम चित्रकूट के पास लालापुर में एक पहाड+ी पर है। चित्रकूट से इसकी दूरी २० कि०मी० है। पहाड+ की तलहटी में वाल्मीकि नदी बहती है। यह दक्षिण से उत्तर की ओर बहकर मन्दाकिनी नदी में मिल जाती है। मैने वहां की यात्रा २७.०२.२००६ को की थी। वाल्मीकि पर्वत के सामने दो कि०मी० पर देवकली गांव है। यही कुख्यात डाकू ददुआ का गांव है। वाल्मीकि ऋषि भी पहले डाकू थे। क्या विचित्र संयोग है। वाल्मीकि नदी के किनारे अनेक शिव मंदिरों के अवशेष है। चित्रकूट के पास स्थित कर्वी की इलाहाबाद से सड+ क मार्ग की दूरी १०२ कि०मी० है। इसी सड+ क पर चौड+ी पोखरी चौराहे से उत्तर राजापुर गांव है, जो १७ कि०मी० पर है। कुछ लोग मानते है भगवान श्रीराम ने यही यमुना नदी पार किया था।

राजापुर में यमुना नदी का प्रभु घाट है। ऐसा माना जाता है कि प्रभु राम ने यहीं यमुना नदी पार की थी। यहां तुलसी जन्म कुटीर है। इसका जीर्णोद्धार हरियाणा के किसी के०सी०शर्मा ने कराया। यहां के मंदिर के पुजारी ओमकारनाथ चतुर्वेदी ने बताया कि वे गोस्वामी तुलसीदास की १०वीं पीढ+ी के हैं। इनके पास तुलसीकृत रामचरित मानस की एक अत्यन्त प्राचीन हस्तलिखित प्रति है। इसके बारे में वे कहते है कि यह तुलसीदास के हाथ की लिखी हुई है। हालांकि स्वामी रामभद्राचार्य ने मुझसे कहा कि वह प्रति तुलसीदास के हाथ की लिखी नहीं है परन्तु वे यह बात सार्वजनिक रूप से नहीं कह सकते। इस प्रति की कई विशेषतायें है। इसमें काण्ड के अन्त में लिखा जाने वाला इतिश्री.... .....नहीं है। इस प्रति को देखने से लगता है कि अयोध्या काण्ड का नाम अवध काण्ड भी हो सकता है। एक बात और, इस प्रति में Þरß अक्षर इस प्रकार लिखा गया है जैसा कि हम लोग आजकल

Þnß लिखते है। अगर यह सच है तो रामचरित मानस के अन्य काण्डों के कई शब्दों की सच्चाई का पता लग जायेगा।

भरत ने भारद्वाज आश्रम के पास ही यमुना नदी पार कर लिया और उसके दक्षिण की तरफ प्रस्थान किया, जहां से चित्रकूट की दूरी कुल ढाई योजन१० मील या १६ कि०मी० थी। अन्ततः भरत जी नन्दिग्राम गये। नन्दिग्राम अयोध्या से थोड+ी ही दूरी पर पूरब की ओर था, जहां रहकर भरत ने १४ वर्षो तक राज्य का संचालन किया।

अग्रतो गुरवः सर्वे, वशिष्ठप्रमुखाः द्विजाः।
प्रययुः प्राड.मुरवाः सर्वे, नन्दिग्रामो यतो भवेत्।।

(अयो. सर्ग ११५ श्लोक १०)

वाल्मीकि रामायण के अनुसार चित्रकूट में श्रीराम के आ जाने से आसपास के क्षेत्रों में Þखर आदि राक्षसोß का अत्याचार बढ+ गया। अतः बहुत से वृद्ध ऋषि श्रीराम से आज्ञा लेकर अश्वमुनि के आश्रम चले गये। जहां फल-फूल पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध थे, तथा सुरक्षा भी थी।

ऋषियों के कुलपति ने श्रीराम से कहा कि चित्रकूट से थोड+ी दूर पर एक विचित्र वन है, जहां फल फूल की अधिकता है। वहीं अश्वमुनि का आश्रम है। अतः ऋषियों के समूह को साथ लेकर वे उसी आश्रम में आश्रय लेंगे।

उस कुलपति ऋषि ने श्रीराम से भी कहा कि वे चाहे तो उसी आश्रम में रह सकते हैं।

श्रीराम ने इस बात पर गंभीरता से विचार किया और उन्होंने निश्चय किया कि वे आश्रमों में घूम-घूम कर ऋषियों के मन से राक्षसों का भय दूर करेंगे। इसी क्रम में वे पास में स्थित अत्रि के आश्रम गये।

सः अत्रेः आश्रमम् आसाद्य, तं ववन्दे महायशाः।
तं चापि भगवान् अत्रिः, पुत्रवत् प्रत्यपाद्यत।।

(अयो. सर्ग ११७ श्लोक ५)

महर्षि अत्रि अनुसुइया जी के साथ वहीं रहते थे, उनका आश्रम मन्दाकिनी के किनारे था। आज भी चित्रकूट में यह स्थान है। वहां शिला पर भगवान श्रीराम के चरण अंकित है। अत्रि के आश्रम

में श्रीराम एक रात रहे। श्रीराम ने महर्षि अत्रि से अन्य ऋषियों के यहां पहुंचने के मार्ग के बारे में पूछा। महर्षि ने उन्हें सुगम और निरापद मार्ग बताया-

एष पन्था महर्षीणाम्, फलानि आहरतां वने।

अनेन तु वनं दुर्गम्, गन्तुम् राघव ते क्षम्म्।।

(अयो. सर्ग ११९ श्लोक २१)

रामचरित मानस में श्रीराम के अत्रि आश्रम जाने की यात्रा अरण्य काण्ड में है, जबकि वाल्मीकि रामायण में यह अयोध्या काण्ड में है। वाल्मीकि रामायण में Þजयन्तß प्रकरण नहीं है, जिसमें उसने सीता जी पर बुरी दृष्टि डालते हुए उन पर चोंच मारा था। वाल्मीकि रामायण के अनुसार महर्षि अत्रि ने जिस गहन वन की ओर संकेत किया वही दण्डकारण्य है। आजकल दण्डकारण्य छत्तीसगढ+ में बस्तर जिले के आसपास हैं। वहां इन्द्रावती नदी पर एक स्थान चित्रकोट है। इसी वजह से कुछ विद्वानों का मत है कि रामायण कालीन Þचित्रकूटß वहीं है। परन्तु यह सही नहीं लगता। अत्रि के आश्रम से बस्तर तक पहुंचने में बहुत समय लग सकता है। अत: यही सही लगता है कि अत्रि के आश्रम के पास से ही दण्डकारण्य प्रारम्भ हो जाता था।

दण्डकारण्य वर्तमान छत्तीसगढ+ राज्य में पड+ ता है। छत्तीसगढ+ अस्मिता संस्थान ने छत्तीसगढ+ की रामकथा लिखी है। संस्था ने छत्तीसगढ+ में श्रीराम वन गमन मार्ग से संबंधित स्थलों की खोज करके विवरण प्रकाशित किया है, जो सराहनीय है।

प्रविश्य तु महारण्यं, दण्डकारण्यं आत्मवान्।

रामो दरर्श दूर्धर्ष: तापसाश्रममण्डलम्

(अरण्य काण्ड सर्ग १ श्लोक १)

मुनियों का आश्रम मण्डल अत्रि के आश्रम से १०-१५ कि०मी० से कम ही होगा। वहां मुनियों ने उनका स्वागत किया। श्रीराम ने रात्रि विश्राम वहीं किया और दूसरे दिन प्रात: काल वहां से प्रस्थान किया। रास्ते में उन्हें विराध नाम का राक्षस मिला, जिसे श्रीराम ने मार दिया। इस प्रकार विराध वध का स्थान अत्रि आश्रम से १०-१५ कि०मी० से ज्यादा दूर नहीं होना चाहिए।

विराध ने सीताजी को पकड+ कर अपने कब्जे में कर लिया। इस पर श्रीराम बहुत शोकाकुल हो गये। वाल्मीकि रामायण में विराध वध का बड+ा विस्तार से वर्णन किया गया है। विराध जब सीता जी को पकड+ कर जाने लगा तो श्रीराम और लक्ष्मण ने विराध को वाणों से बींध दिया। इसके बाद

विराध ने सीताजी को छोड+ दिया और दोनों भाइयों को लेकर दूसरे वन की ओर जाने लगा। इस पर सीता जी विलाप करने लगी। इसके बाद श्रीराम तथा लक्ष्मण ने विराध की बाहें काट दीं। उसके द्वारा दिये गये संकेत के अनुसार उसे वहीं जमीन में दफना दिया। विराध ने ही बताया कि शरभंग ऋषि का आश्रम कहां है। विराध ने कहा-

इतो वसति धर्मात्मा शरभ्ंगः प्रतापवान्।

अध्यर्ध योजने तात, महर्षिसूर्यसन्निभः।।

(अरण्यकांड सर्ग ४ श्लोक २०-२१)

अर्थात विराध वध के स्थान से शरभंग ऋर्षि का आश्रम डेढ+ योजन ६ मील की दूरी पर था। वह भी मन्दाकिनी के तट पर स्थित था, जैसा कि बाद में शरभंग ऋषि ने सुतीक्ष्ण ऋषि का पता बताते हुए संकेत दिया था। इसके बाद श्रीराम शरभंग आश्रम पहुंच गये। उन्होंने शरभंग ऋर्षि से पूछा कि वे कहां निवास करें। शरभंग ऋषि ने कहा कि सुतीक्ष्ण ऋषि के पास जाये वही उनका मार्ग दर्शन करेंगे।

सुतीक्ष्णम् अभिगच्छ त्वम्, शुचौ देशे तपस्विनम्।

रमणीय वनोद्देशे सते वासं विधास्यति।।

इमां मन्दाकिर्नी राम, प्रतिस्रोताम् अनुव्रज।

नदी पुष्पोडुपवहां ततस्तत्र गमिष्यति।।

(अरण्यकांड सर्ग ५ श्लोक- ३६-३७)

शरभंग ऋषि ने कहा, मन्दाकिनी नदी की उल्टी धारा से जाओ और सुतीक्ष्ण आश्रम पहुंच जाओगे। शरभंग आश्रम में ऋषियों ने श्रीराम को बताया कि पम्पासरोवर, तुंगभद्रा नदी के तट, मन्दाकिनी के किनारे तथा चित्रकूट पर्वत के किनारे रहने वाले ऋषियों को राक्षस अपना आहार बना रहे है-

पंपानदी निवासानाम्, अनुंमन्दाकिनीमपि।

चित्रकूटालयानां च, क्रियते कदनं महत्।।

(अरण्य सर्ग ६ श्लोक १७)

अर्थात राक्षसों से पीडि+ त ऋषिगण पम्पा नदी या पम्पा सरोवर तथा उसके पास की नदी के किनारे (गीता प्रेस ने इस नदी का नाम तुंभद्रा लिखा है) यह सही नहीं लगता है। क्योंकि श्रीराम मन्दाकिनी नदी के किनारे उत्तर से दक्षिण की ओर जा रहे थे। मन्दाकिनी का उद्‌गम तुंगभद्रा नदी से काफी दूर है, परन्तु यह सही है कि तुंगभद्रा के तट पर भी ऋषिगण को राक्षस प्रताडि+ त कर रहे थे।

रामस्तु सहितो भ्रात्रा, सीतया च परंतपः।

सुतीक्ष्णस्य आश्रमपदं, जगाम् सह तैः, द्विजैः॥

(अरण्यकांड सर्ग ७ श्लोक एक)

शत्रुओं को सन्ताप देने वाले श्रीराम, लक्ष्मण तथा सीता उन ब्राह्मणों के साथ सुतीक्ष्ण मुनि के आश्रम की ओर चले।

स गत्वा दूरमध्यवानं, नदीस्तीर्त्वा बहूदकाः।

ददर्श विमलं शैलं, महामेरू इव उन्नतम्॥

(अरण्य सर्ग ७ श्लोक २)

वे दूर तक का मार्ग तय करके अगाध जल से भरी हुई बहुत सी नदियों को पार करते हुये जब आगे गये तो उन्हें मेरूगिरि के समान एक अत्यन्त ऊँचा पर्वत दिखाई दिया जो बड+ ा ही निर्मल था।

Þप्रविष्टस्तु वनं घोर बहुपुष्पफलद्रुमम्।

ददर्श आश्रमं एकान्ते चीरमाला परिष्कृतम्॥

(अरण्य सर्ग ७ श्लोक ४)

उस घोर वन में प्रविष्ट हो श्रीराम ने एकान्त स्थान में एक आश्रम देखा, जहां प्रचुर मात्रा में फल फूल से लदे हुए वृक्ष थे। जहां वृक्षों पर इधर-उधर ऋषियों के वस्त्र लटक रहे थे। इससे पहले सर्ग पांच में श्लोक ३७ में शरभंग ऋषि ने कहा था कि मन्दाकिनी की विपरीत दिशा में जाने से सुतीक्ष्ण आश्रम पहुंच जायेंगे। वहां अगाध जलवाली नदियों को पार करने का संकेत नहीं है। सुतीक्ष्ण ऋषि ने श्रीराम को अपने आश्रम में ही निवास करने की सलाह दी। परन्तु श्रीराम ने वहां रात्रि विश्राम किया और अगले दिन आगे निकल गये। सुतीक्ष्ण ने कहा कि दण्डकारण्य में ऋषियों से मिलने के बाद वे पुनः इसी आश्रम में वापस आ जाये। दोनों ने अच्छा कह कर आगे की यात्रा शुरू की।

यहां पहली बार वाल्मीकि रामायण में श्रीराम को आगे, लक्ष्मण को पीछे और बीच में सीता जी के चलने का उल्लेख हैं-

, अग्रतः प्रययौ रामः, सीतामध्ये सुशोभना।

पृष्ठतस्तु धनुष्पाणिः, लक्ष्मणो अनुजगाम् ह।।

(अरण्य सर्ग ११ श्लोक १)(देखे अयोध्या काण्ड सर्ग ५२ श्लोक ९५)

सुतीक्ष्ण आश्रम से दूर तक यात्रा करने के बाद सन्ध्या समय वे पंचाप्सर सरोवर के पास पहुंच गये। वहीं उन्हें एक आश्रम-मण्डल दिखाई दिया। (पंचाप्सर को माण्डकर्णि ऋषि ने बनाया था, उसमें पांच अप्सरायें उनकी पत्नी बनकर रहती थी। माण्डकर्णि ऋषि ने उस सरोवर के जल में रहकर दस हजार वर्षो तक तपस्या की थी।)

एवं कथयमानः स, ददर्श आश्रममण्डलम्।

कुशचीरपरिक्षिप्तम्, ब्राह्मया लक्ष्म्या समावृतम्।।

(अरण्य सर्ग ११ श्लोक २१)

इस प्रकार श्रीराम को एक आश्रम मण्डल दिखाई दिया, जहां सब ओर क्रुश और वल्कल वस्त्र फैले हुए थे। वह आश्रम ब्राहमी लक्ष्मी से प्रकाशित था। इसके बाद विभिन्न आश्रमों में ऋषियों के साथ रहते हुए श्रीराम के दस वर्ष व्यतीत हो गये- वे वापस सुतीक्ष्ण आश्रम आ गये।

वाल्मीकि रामायण के अनुसार श्रीराम ने सुतीक्ष्ण ऋषि से मिलकर आश्रमण्डलों में जाकर ऋषियों से भेंट की और पुनः सुतीक्ष्ण आश्रम लौट गये। इसके बाद अगस्त्य ऋषि के यहां गये। परन्तु रामचरितमानस में श्रीराम सुतीक्ष्ण ऋषि से मिलने के बाद उन्हीं के साथ अगस्तत्य ऋषि के यहां गये। यहां १० वर्षो तक घूम घूम कर ऋषियों से मिलने का उल्लेख नहीं है। रामचरित मानस में इतना उल्लेख अवश्य है कि श्रीराम ने विभिन्न आश्रमों में जाकर ऋषियों से मुलाकात की और पृथ्वी पर से निशाचरों का नाश करने की प्रतिज्ञा की।

वाल्मीकि रामायण में पहली बार सुतीक्ष्ण ऋषि से मिलने के बाद वे निम्न आश्रमों में गये-

क्वचित् परिदशान् मासान्, एकसंवत्सरं क्वचित्।

क्वचित् चतुरो मासान्, पंच षष्ट च परान् क्वचित्।।

अपरत्राधिकान् मासान्, अध्यधर्म् अधिंक क्वचित्।

त्रीन् मासानषष्टमासान् च, राघवो न्यवसत् सुखम्॥

तत्र संवसतः तस्य, मुनीनाम् आंश्रमेषु वै।

रमतश्चानुकूल्येनयमुः संवंत्सरादश॥

(अरण्य सर्ग ११ श्लोक २४,२५,२६)

परिसृत्य च धर्मज्ञः, राघव सह सीतया।

सुतीक्ष्णस्य आश्रमपदं, पुनरेवाजगाम् ह॥

(अरण्य सर्ग ११ श्लोक २७+ ,१२)

श्रीराम ने कहीं दस माह, कहीं साल भर, कहीं चार माह, कहीं पांच या छः माह, कहीं इससे भी अधिक समय, कहीं आधे मास से अधिक, साढ+े आठ माह, कहीं तीन माह, कहीं ग्यारह महीने सुख पूर्वक निवास किया। इस प्रकार मुनियों के आश्रमों में रहते हुये उनके दस वर्ष बीत गये। इस प्रकार सब ओर से घूम घाम कर के वे सुतीक्ष्ण के आश्रम पर लौट आये। इस प्रकार श्रीराम ने इस अवधि के दौरान लगभग दस आश्रम मण्डलों को देखा और ऋषियों से मुलाकात की। दस वर्षो तक श्रीराम ने किन स्थानों पर किन-किन ऋषियों से भेंट की इसका उल्लेख रामायणों में नहीं है। परन्तु इन स्थलों का शोध करके विवरण प्रकाशित किया गया है। सुतीक्ष्ण आश्रम में कुछ दिन रहने के बाद उन्होंने महर्षि अगस्त्य के बारे में पूछा तब सुतीक्ष्ण जी ने कहा-

अयम् आख्यामि ते राम, यत्रागस्त्यो महामुनिः।

योजनानि आश्रमात् तात, याहि चत्वारि वैततः॥

दक्षिणेन महान् श्रीमान्,अगस्त्य भ्रातुः आश्रमः॥

(अरण सर्ग ११ श्लोक ३७)

अर्थात सुतीक्ष्ण आश्रम से चार योजन दक्षिण अगस्त्य के भाई का आश्रम है। वहां पिप्पली का वन है।

स्थलीप्रायवनोद्देशे, पिप्पली वन शोभते।

बहुपुष्पफले रम्ये, नानाविहगनादिते॥

(अरण सर्ग ११ श्लोक ३८)

सुतीक्ष्ण के भाई के आश्रम से दक्षिण एक योजन पर अगस्त्य का आश्रम है। पकी हुई पिप्पली का रस भी कड+ वा होता है।

तत्रैकां रजनीं व्युष्य, प्रभाते राम गम्यताम्।

दक्षिणां दिशम् आस्थाय, वनखण्डस्य पार्श्वतः॥

(अरण सर्ग ११ श्लोक ४०)

तत्र अगस्त्य आश्रम पदम्, गत्वा योजनमन्तरम्।

रमणीयेवनोद्देशे, बहुपादंपशोभिते॥

(अरण सर्ग ११ श्लोक ४१)

सुतीक्ष्ण के बताने के अनुसार श्रीराम अगस्त्य के भाई के आश्रम की ओर जा रहे थे, रास्ते में उन्होंने लक्ष्मण जी को Þवातापिß और Þइल्वलß नामक राक्षसों की कथा बताई, जो ब्राह्मण भोज का निमंत्रण देकर ब्राह्मणों को मार डालते थे।

वाल्मीकि रामायण में सुतीक्ष्ण ने केवल अगस्त्य के आश्रम का पता बताया, जबकि रामचरितमानस के अनुसार सुतीक्ष्ण जी स्वयं श्रीराम के साथ अगस्त्य आश्रम जाते है। रामचरितमानस में अगस्त्य के भाई और पिप्पली वन का उल्लेख नहीं है।

वहां कुछ समय रहने के पश्चात श्रीराम अगस्त्य के बताने के अनुसार पंचवटी चले जाते है। पंचवटी की स्थिति के बारे में अगस्त्य ऋषि ने कहा-

इतो द्वियोजनेतात्, बहुमूलफलोदकः।

देशो बहुमृगः श्रीमान्, पंचवटी अभिविश्रुतः॥

(अरण्य सर्ग १३ श्लोक १३)

अर्थात् यहां से दो योजन की दूरी पर पंचवटी है। आगे कहते है-

स देशः श्लाघनीयश्च, नातिदूरे च, राघवः।

गोदावर्याः समीपे च, मैथिली तत्र रंस्यते॥

(अरण्य सर्ग १३ श्लोक १८)

अर्थात पंचवटी यहां से बहुत दूर नहीं है। गोदावरी नदी के समीप है। आगे के दो श्लोकों में अगस्त्य ऋषि ने पंचवटी जाने के मार्ग का विस्तृत विवरण दिया-

एतद् आलक्ष्यते वीर, मधूकानाम् महावनम्।

उत्तरेण अस्य गन्तत्रव्यम, न्यग्रोधमपि गच्छता॥

ततः स्थलम् उपारूह्य, पवर्तस्य अविदूरतः।

ख्यातः पंचवटी इत्येव, नित्यपुष्पितकाननः॥

(अरण्य सर्ग १३ श्लोक २१, २२)

अर्थात अगस्त ऋषि ने कहा कि यह जो महुओं का विशाल वन दिखाई दे रहा है इसके उत्तर से जाना, आगे बरगद का एक वृक्ष मिलेगा। उसके आगे कुछ दूर तक ऊँचा मैदान फिर एक पर्वत और उससे थोड+ी ही दूर पर पंचवटी है।

वाल्मीकि रामायण के इस वर्णन के अनुसार सुतीक्ष्ण आश्रम से अगस्त्य आश्रम की दूरी लगभग छः योजन अर्थात २४ मील होनी चाहिए। बीच में अगस्त्य के भाई का आश्रम पिप्पली वन है। कुछ लोग वर्तमान पिपरिया को पिप्पली वन मानते हैं। वर्तमान मनभाड रेलवे स्टेशन से लगभग पांच किलोमीटर दक्षिण अगस्ती नामक एक पहाड+ है। ऐसा माना जाता है कि यही अगस्त्य का आश्रम है। ये दोनों स्थान एक दूसरे के नजदीक है। अतः यह माना जा सकता है कि महर्षि अगस्त्य का एक आश्रम मनभाड के पास अगस्ती में रहा होगा, जो पंचवटी से बहुत दूर नहीं है।

अगस्त्य ऋषि का एक आश्रम नागपुर (महाराष्ट्र) के पास रामगिरि पर है। यह वही रामगिरि है जहां कवि कालिदास का यक्ष अपने शाप ग्रस्त वनवास के दौरान रहता था। रामगिरि का संबंध बौद्ध विद्वान नागार्जुन से भी जोड+ा जाता है। यहां पर्वत के शिखर पर अगस्त्य आश्रम है और लक्ष्मण जी का अकेला मंदिर भी है, जो संभवतः दुनिया में और कहीं नहीं है। यहां सूचना पट्टिका में लिखा हुआ है कि भगवान राम अपने भाई लक्ष्मण और सीता के साथ लगभग नौ लाख वर्ष पहले पधारे थे। थोड+ी दूर पर एक बड+ा तालाब है, जिसके बारे में कहा जाता है कि भगवान श्रीराम ने यहीं 'निशिचर-हीन-करौं-महीं' की प्रतिज्ञा की थी। महाराष्ट्र के पर्यटन विभाग द्वारा यहां सर्वसुविधा सम्पन्न अतिथिशाला का निर्माण कराया गया है। महर्षि अगस्त्य ने श्रीराम को द्विव्य अस्त्र दिये।

रामगिरि की हमारी यात्रा राष्ट्रीय बचत संस्थान के तत्कालीन निदेशक स्वर्गीय एस.के.त्रिपाठी के सहयोग से हुई। हम लोग उन्हीं के निवास पर रुके थे। शिव किशोर जी की याद आना स्वाभाविक है।

सीताराम गुरुमूर्ति ने अपनी पुस्तक रामायण टेम्मपल में एक और पंचवटी का उल्लेख किया है, जो दक्षिण में है। इस पुस्तक के अनुसार पंचवटी, जिसे आजकल रामचन्द्रपुरम् के नाम से जाना जाता है, उड+ीसा की सीमा पर है। यह स्थान अब वर्तमान छत्तीसगढ+ में बस्तर जिले में हैं। यहां एक गांव का नाम लंका भी है। इस पुस्तक के अनुसार यहीं लक्ष्मण जी ने सूर्पनखा की नाक काटी थी। परन्तु वाल्मीकि रामायण के वर्णन से इसका मेल नहीं खाता। सच यही है कि पंचवटी की स्थिति वर्तमान नासिक के पास थी। गुरुमूर्ति के अनुसार अगस्त्य का आश्रम आंध्र प्रदेश के भद्राचलम् में था। श्रीराम के वनवास के समय अगस्त्य मुनि तमिलनाडु में रहते थे। भद्राचलम् खम्भम् रेलवे स्टेशन से सड+क मार्ग से १५० कि०मी० दूर है, जो विजयवाड+ा-काजीपेट-हैदराबाद रेलमार्ग पर हैं। छत्तीसगढ+ की रामकथा में भी पंचवटी की स्थिति भद्राचलम् के पास बताई गई है।

भद्राचलम् और पास ही स्थित विजयनगर रामकथा से जुड+े हुए प्रमुख शहर है। ऐसी मान्यता है कि वनवास के दौरान श्रीराम भद्राचलम् से ३५ कि०मी० दूर एक पर्णशाला में रुके थे। कुछ लोगों का मानना है कि इसी स्थान से सीताजी का अपहरण रावण ने किया था। यही से श्रीराम ने गोदावरी नदी पार किया था। छत्तीसगढ+ शोध संस्थान के अनुसार नासिक भी भद्राचलम् के पास स्थित था। भद्राचलम् में श्रीराम का एक भव्य मंदिर है।

इसका निर्माण गोपन्ना बाढ+ में रामदास नामक भक्त ने कराया था। यह मंदिर आंध्र प्रदेश में खम्मम जिले में स्थित है। यहां पहुंचने के लिए विजयबाड+ा रेलवे स्टेशन पर उतरकर सड+क मार्ग से पहुंचा जा सकता है। डॉ० राम अवतार शर्मा ने अपनी पुस्तक में इसका उल्लेख नहीं किया है।

जो भी हो नासिक के पास पंचवटी जाने के रास्ते में जटायु ने श्रीराम को सभी जीवजन्तुओं की उत्पत्ति का विस्तृत विवरण दिया है। वाल्मीकि रामायण में इस वर्णन को देखकर नहीं लगता कि जटायु कोई गृद्ध जाति का पक्षी था। उसी क्रम में जटायु ने श्रीराम को बताया कि महात्मा कश्यप की पत्नी मनु के मुख से ब्राह्मण हृदय से क्षत्रिय, उरू से वैश्य और पैरो से शूद्रों का जन्म हुआ। अर्थात ये सभी वर्ण एक ही माता पिता की सन्तान है।

मुखतो ब्राह्मणा जाता, उरसः क्षत्रियास्तथा।

उरूभ्यां जज्ञिरे वैश्याः, पद्भ्यां शूद्राः इति श्रुतिः॥

(अरण्यकांड सर्ग १४ श्लोक ३०)

ऋग्वेद के अनुसार ब्रह्म मुख से ब्राह्मण,भुजाओं से क्षत्रिय, हृदय से वैश्य और पैरों से शूद्र की उत्पत्ति हुई।

वाल्मीकि रामायण तथा श्रीरामचरितमानस दोनों में, लक्ष्मण रेखा का उल्लेख नहीं है। सीताहरण के बाद थोड+ी ही दूर पर रावण और जटायु का युद्ध हुआ और जटायु घायल होकर मरणासन्न अवस्था में धरती पर गिर गये। सीताहरण के बाद श्रीराम तथा लक्ष्मण सीताजी को खोजते हुये दक्षिण दिशा की ओर चल पड+े। कुछ दूर जाने पर उन्हें घायल अवस्था में जटायु मिले।

बाढमित्येव काकुत्स्थः, प्रस्थितो दक्षिणां दिशम्।

लक्ष्मणानुगतः श्रीमान्, वीक्षमाणो वंसुधराम्॥

(अरणकांड सर्ग ६४श्लोक २३)

थोड+ी ही दूर जाने पर उनकी भेंट घायलावस्था में पड+े जटायु से हुई-

ततः पर्वत कूटाभम्, महाभागम् द्विजोततमम्।

ददर्श पतितं मूमौ, क्षतजार्द्रम् जटायुषम्॥

(अरण्यकांड सर्ग ६७श्लोक ९, १/२)

वाल्मीकि रामायण में इस श्लोक में जटायु को उत्तम द्विज बताया गया है। इसके बाद श्रीराम और लक्ष्मण ने गोदावरी तट पर जाकर जटायु को जलांजलि दी। इससे यह संकेत मिलता है कि वे अभी पंचवटी से बहुत दूर नहीं थे। जलांजलि देने के बाद वे वहां से पश्चिम दिशा की ओर गये। फिर दक्षिण दिशा की ओर गये।

कृत्वा एवं उदकम् तस्मै, प्रतिस्थीतौ राघवौ तदा।

अवेक्षन्तौ वने सीताम्, जग्मतुः पश्चिमां दिशम्॥

तां दिशं दक्षिणं गत्वा, शरचापासिधारिणौ

अविप्रहतम इक्ष्वाकौ, पन्थानम् प्रतिपेदतुः॥

(अरण्यकांड सर्ग ६९श्लोक १, २)

इसके बाद जनस्थान से तीन क्रोश दूर जाकर उन्होंने क्रौचारण्य नामक गहन वन में प्रवेश किया।

Þतत: पूर्वेण तौ गत्वा, त्रिक्रोशं भ्रातरौतदा।

क्रौचारण्यंम् अतिक्रम्य, मतंगाश्रमम् अन्तरे।।

(अरण्यकांड सर्ग ६९ श्लोक ८)

मतंग आश्रम पहुंचने से पूर्व लक्ष्मण जी ने एक पर्वत शिखर पर स्थित अंधकारमय गुफा के पास बैठी Þअयोमुखीß नामक राक्षसी का वध किया।

(अरण्यकांड सर्ग ६९ श्लोक १०)

इसके बाद थोड+ी दूर पर कबन्ध नामक राक्षस से भेंट हुई। श्रीराम ने उसका वध किया और उसने दिव्य रूप धारण कर लिया। उल्लेखनीय बात यह है कि वाल्मीकि रामायण में कबन्ध और श्रीराम के बीच वार्तालाप में शुद्रों के खिलाफ किसी बात का उल्लेख नहीं, जबकि रामचरितमानस में कहा गया है कि-Þपूजहि विप्र सकलगुण हीना- शूद्र गुन गन ज्ञान प्रवीना।ß इस प्रकार की कोई कविता वाल्मीकि रामायण में नहीं है। दूसरी बात यह है कि वाल्मीकि रामायण में कबन्ध ने ही श्रीराम को सुग्रीव से मिलने की सलाह दी, जबकि रामचरित मानस में शबरी ने सुग्रीव से मिलने की सलाह दी। कबंध ने कहा-

एष राम शिव: पन्था:, यत्रैतेपुष्पिता द्रुमा:।

प्रतीचीम् दिशमाश्रित्य, प्रकाशन्ते मनोरमा:।।

(अरण्यकांड सर्ग ७३ श्लोक २)

अर्थात हे राम यहां से पश्चिम दिशा का आश्रय लेकर आपके जाने लायक सुखद मार्ग है। श्लोक दस के अनुसार एक पहाड+ से दूसरे पहाड+ तथा एक वन से दूसरे वन होते हुये पम्पा सरोवर के पास पहुंचा जा सकता है। पम्पा सरोवर के पश्चिमी तट पर मतंग आश्रम है, जहां शबरी निवास करती है।

गुजरात के डांग जिले में सापूतारा नामक हिल स्टेशन है। सापूतारा महाराष्ट्र वार्डर से मात्र ५ कि०मी० दूर है। महाराष्ट्र के शिरडी जाने वाले यहां से होकर गुजरते है। सापूतारा के पास ही शबरी का आश्रम है। ऐसी मान्यता है कि भगवान राम ने यहीं पर शबरी के जूठे बेर खाये थे। (नवभारत टाइम्स, लखनऊ २३.+ ११.२०१४) महाराष्ट्र के मुंबई में गवर्नर हाउस के पास सह्याद्रि पर्वत पर

ठीक समुद्र के किनारे मीठे पानी का तालाब है। खारे समुद्र के पास मीठे पानी का तालाब होना आश्चर्यजनक है। कहते हैं इस झील का निर्माण लक्ष्मण जी ने माता सीता की प्यास बुझाने के लिए अपने वाणों से किया। झील के जल को लोग, पवित्र गंगा जल की तरह मानते हैं।

ततः तद् राम पम्पायाः, तीरम् आश्रित्य पश्चिमम्।

आश्रमस्थानमतुलं, गुह्यं काकुत्स्थपश्यसि॥

(अरण्यकांड सर्ग ७३ श्लोक २८)

मतंगवनमित्येव विश्रुतं रघुंनन्दन।

तस्मिन् नन्दनसंकाशे, देवारण्योपमे वने॥

(अरण्यकांड सर्ग ७३ श्लोक ३०)

पम्पा सरोवर के पूर्वी तट पर ऋटव्यमूक पर्वत है।

ऋष्यमूकस्तु पम्पायाः पुंरस्तात् पुष्पितदुमः।

(अरण्यकांड सर्ग ७३ श्लोक ३१)

कबंध के द्वारा बताये गये मार्ग का अनुसरण करते हुये वहां से पश्चिम की ओर चलकर श्रीराम ने पम्पा सरोवर के पश्चिमी तट पर शबरी का आश्रम देखा। शबरी से भेंट करने के बाद और उसके स्वर्ग जाने के बाद दोनों पम्पा सरोवर के तट पर पहुंचें। राचरितमानस में शबरी को श्रीराम नवधा भक्ति का उपदेश देते है। इस प्रकार का प्रसंग वाल्मीकि रामायण में नहीं है। रामचरितमानस में शबरी ही श्रीराम को सुग्रीव से मिलने की सलाह देती है, जबकि वाल्मीकि रामायण में कबंध ने श्रीराम को सुग्रीव से मिलने की सलाह दी। मतंग आश्रम में शबरी ने श्रीराम को सप्तसागर तीर्थ का दर्शन कराया, जहां मतंग ऋर्षि के आवाहन करने पर सातों समुद्रों का जल प्रकट हो गया था, जिसमें मतंग ऋषि ने स्नान किया। श्रीराम तथा लक्ष्मण ने सप्त सागर तीर्थ में स्नान किया और पितरों को तपर्ण किया।

उपस्पृष्टं च विधिवत् पितरश्चापि तर्पिताः।

(अरण्यकांड सर्ग ७५ श्लोक ४)

इसके बाद वे पम्पा सरोवर गये। वहां स्नान किया और सुग्रीव से मिलने ऋष्धूमक पर्वत की ओर प्रस्थान किया। रामचरितमानस में पम्पा सरोवर पर ही नारद जी आते हैं और श्रीराम से मिल

कर खेद प्रगट करते हैं। यह प्रसंग वाल्मीकि रामायण में नहीं है। श्रीराम ऋष्यमूक पवर्त से सुग्रीव, हनुमान आदि के साथ किष्किंधा के लिये जाते समय पहले सप्तजन आश्रम पहुंचे।

अत्र सप्तजना: नाम मुनय: संशितव्रता:।

सदौवासन्नध: शीर्षा, नियतं जलशायिन:।

(किष्किधां सर्ग १८ श्लोक ८)

अर्थात इस आश्रम में सप्तजन नाम से प्रसिद्ध सात ही मुनि रहते थे, जो कठोर व्रत के पालन में तत्पर थे। वे नीचे सिर करके तपस्या करते थे। नियम पूर्वक रहकर जल में शयन करने वाले थे। इस सप्तजन आश्रम का उल्लेख रामचरितमानस में नहीं है। इस सप्तजन आश्रम से दूर तक मार्ग तय करने के बाद उन लोगों ने बालि द्वारा सुरक्षित किष्किधांपुरी को देखा-

ते गत्वादूरमध्वानम् तस्मात् सप्तजनाश्रमात्।

ददृषु: तां दुराधर्षां

किष्किधाम् बालिपालिताम्।। (किष्किधां सर्ग १३ श्लोक २९)

बालिवध के बाद श्रीराम तथा लक्ष्मण प्रस्रवण गिरि पर निवास करने लगे जो तुंगभद्रा नदी के किनारे था। वर्षा काल के दौरान वे वहीं रहे।

अभिषिक्ते तु सुग्रीवे, प्रविष्टे वानरे गुहाम्।

आजगाम सह भ्रात्रां, राम: प्रस्रवणं गिरिम्।।

(किष्किधां सर्ग २७ श्लोक १)

प्राचीन वाहिनीं चैव, नदीं भृशमकर्दभाम्।

गुह्यया: परत: पश्य, त्रिकुटे जाह्वीम्इव।

(किष्किधां सर्ग २७ श्लोक १६)

नदी पश्चिम से पूर्व की ओर बह रही हैं। श्लोक में नदी का नाम नहीं दिया गया है। परन्तु व्याख्याकार इसे तुंगभद्रा नदी बताते है। यहां से किष्किंधा बहुत दूर नहीं है।

इद्रतश्च नाति दूरे सा किष्किंधा चित्रकानना।

सुग्रीवस्य पुरी रम्या भविष्यति नृपात्मज॥

(किष्किधां सर्ग २७ श्लोक २६)

रामचरितमानस में तुंगभद्रा नदी के नाम का उल्लेख नहीं है। इसके बाद वानरों को विभिन्न दिशाओं में भेजने के बहाने भारतवर्ष के भूगोल का विराट वर्णन है। सुग्रीव ने चारों दिशाओं में वानरों को भेजा। दक्षिण दिशा में हनुमान आदि को भेजा। श्रीराम ने उन्हें अंगूठी दी। यहां उल्लेख है कि दक्षिण दिशा में जाने पर उन्हें विन्ध्यपर्वत मिलेगा। यह कौन सा विन्ध्य पर्वत है जो तुंगभद्रा नदी के पास था।

स तु दूरम् उपागम्य

सर्वे तै: कपिसततमै:।

ततो विचिंत्य विन्ध्यस्य गुह्मश्च गहनानिच॥

(किष्किधां सर्ग ४८ श्लोक २)

इससे पहले सर्ग ४१ श्लोक ८ में विन्ध्य पर्वत का उल्लेख है। इसलिये कुछ विद्वान मानते हैं कि श्रीराम विन्ध्य पर्वत के आगे गये ही नहीं। परन्तु यहां स्मरणीय बात यह है कि वे पंचवटी से सीता की खोज में त्रष्यमूक, किष्किंधा, प्रस्रवण तुंगभद्रा तक आ गये, तो वर्तमान विन्ध्य के आगे नहीं जाने का प्रश्न ही नहीं उठता। समूचे प्रकरण को ध्यान से पढ+ ने पर लगता है कि इन श्लोकों में विन्ध्य पर्वत का उल्लेख केवल भारत के भूगोल का वर्णन करना है। इससे यह निष्कर्ष नहीं निकालना चाहिए कि श्रीराम किष्किंधा पर्वत के आगे गये ही नहीं। सुग्रीव ने सर्ग ४१ में दक्षिण दिशा की ओर जाने वाले बन्दरों को संबोधित करते हुए बताया कि-

सहस्रशिरसं विन्ध्यं, नानाद्रुभलतायुतम्।

नर्मदां च नदीं रम्यां, महोरगनिषेविताम्॥

(किष्किधां सर्ग ४१ श्लोक ८)

समुद्र के किनारे महेन्द्र पर्वत का उल्लेख है, जो दक्षिण में है। तत्पश्चात् लंका का वर्णन है-

Þद्वीप: तस्यापरे पारे शतयोजनविस्तृत:ß

(किष्किधां सर्ग ४१ श्लोक २३)

उस समुद्र के उस पार एक द्वीप है, जिसका विस्तार सौ योजन है।

स हि देशस्तु वध्यस्य, रावणस्य दुरात्मन:।

राक्षसाधिपते: वास:, सहस्राक्षसमद्युते:॥

(किष्किधां सर्ग ४१ श्लोक २५)

वही देश अर्थात सौ योजन का द्वीप इन्द्र के समान तेजस्वी राक्षस राज रावण का निवास स्थान है। इस श्लोक तथा बाद में सेतु निर्माण के समय वर्णित श्लोक को पढ+ ने से यह स्पष्ट हो जाता है लंका द्वीप सौ योजन का था। समुद्र तट से लंका की दूरी एक सौ योजन बताना भ्रामक है।

इतो द्वीपे समुद्रस्य सम्पूर्णे शतयोजने।

तस्मिन् लंकपुरी रम्या, निर्मिताविश्व कर्मणा॥

(किष्किधां सर्ग ५८ श्लोक २०)

विन्ध्य पर्वत का उल्लेख वाल्मीकि रामायण में चार बार आया है।

(१) कि. सर्ग ४९ श्लोक १५

(२) कि.सर्ग ५२ श्लोक ३१-३२

(३) कि.सर्ग ६० श्लोक ७

(४) कि.सर्ग ५० श्लोक १

इन श्लोकों के आधार पर कुछ विद्वानों का मत है कि श्रीराम लंका गये ही नहीं, उनका अन्तिम पड+ ाव वर्तमान जबलपुर से पहले ही रहा होगा। यह निष्कर्ष भ्रामक है । जिन सन्दर्भो में विन्ध्य का उल्लेख किष्किंधा के दक्षिण किया गया है वह भूगोल बताने की दृष्टि से किया गया है।

तापसी स्वयंप्रभा के वक्तव्य से भी यही संकेत मिलता है कि श्रीराम की सेना के प्रयाण मार्ग में विन्ध्य पर्वत का उल्लेख नहीं है, केवल सह्यादि और मलय पर्वत का उल्लेख है। अगर दक्षिण में कोई विन्ध्य पर्वत होता तो उसका भी उल्लेख होना चाहिए।

वाल्मीकि रामायण में अशोक वाटिका में प्रवेश के पहले हनुमान जी का विभीषण से मिलने का उल्लेख नहीं है, जबकि रामचरितमानस में विभीषण ही हनुमानजी को अशोक वाटिका का पता बताते हैं।

रामचरितमानस में सुन्दर काण्ड में हनुमान जी द्वारा लंका जाकर सीता जी का पता लगा कर वापस आना तथा विभीषण का रावण द्वारा तिरस्कार करने के बाद श्रीराम से मिलना तथा श्रीराम की समुद्र से प्रार्थना करना आदि शामिल है, जबकि वाल्मीकि रामायण में सुन्दरकाण्ड में केवल हनुमान जी द्वारा लंका जाकर सीता जी का पता लगाना और वापस आकर श्रीराम जी को सीता जी का समाचार बताने तक की घटना शामिल है। बाद की घटना वाल्मीकि रामायण में युद्ध काण्ड में रखी गई है।

ऐसा लगता है कि रामचरितमानस के सुन्दरकाण्ड में दो काण्ड मिल कर प्रकाशित किये गये है। ऐसा लगता है कि गोस्वामी जी ने वर्तमान सुन्दर काण्ड को दो काण्डों में लिखा होगा, किन्तु बाद में लोगों ने इन दोनों काण्डों को मिलाकर एक काण्ड कर दिया। अगर यह सच है तो रामचरितमानस में लव कुश काण्ड को निकालने के बाद भी आठ काण्ड हो जायेंगे और यह महाकाव्यों की श्रेणी में आ जायेगा। वर्तमान में उपलब्ध सुन्दरकाण्ड को देखने से ही लगता है कि इसे दो काण्डों को मिला कर बनाया गया है। चित्रकूट जिले के राजापुर में उपलब्ध हस्तलिखित प्रतिलिपि को देखने से भी लगता है कि काण्डों का नाम गोस्वामी जी ने कुछ और दिया था। यह अलग विषय है। इस पर चर्चा दूसरे लेख में हो चुकी है।

श्रीराम की सेना ने लंका के लिए प्रस्थान किया। वे दिन रात बिना रूके चले होंगे। रास्ते में सहयाद्रि ओर मलय पर्वत मिले।

काननानि विचित्राणि, नदी प्रस्वणानि च।

पश्यन् अपि ययौरामः, सह्यस्य मलयस्स्य च॥

(युद्धकांड सर्ग ४ श्लोक ७१)

इन दोनों पर्वतों को पार करके श्रीराम की विशाल सेना समुद्र के किनारे महेन्द्र पर्वत पर पहुंच गई। यहां किसी विन्ध्य पर्वत का उल्लेख नहीं है।

महेन्द्रम् अथ सम्प्राप्य, रामो राजीवलोचनः।

आरूरोह महाबाहुः, शिखरं द्रुमभूषितम्॥

(युद्धकांड सर्ग ४ श्लोक ९२)

युद्ध काण्ड के पहले सात सर्गो में जहां समुद्र को पार करने के बारे में विचार किया गया है। कहीं भी यह नहीं कहा गया है कि समुद्र की लम्बाई एक सौ योजन थी।

समुद्र और श्रीराम के वार्तालाप में वाल्मीकि रामायण में Þगगन समीर अनल जल धरनी काß का उल्लेख तो है, परन्तु 'ढोल गंवार सूद पसु नारी' की चर्चा नहीं है।

वाल्मीकि रामायण के युद्धकाण्ड में सर्ग २२ श्लोक ६८ से ७२ तक प्रक्षिप्त लगता है। पुल विशाल तो था, परन्तु सौ योजन नहीं था।

वाल्मीकि रामायण में श्रीराम की अयोध्या वापसी तथा राज्याभिषेक युद्ध काण्ड में वर्णित है, जबकि रामचरितमानस में यह उत्तरकाण्ड में है। वाल्मीकि रामायण में, युद्धकाण्ड सर्ग ७४ में हनुंमान जी ने हिमालय से दिव्य औषधि लाई, उससे श्रीराम और लक्ष्मण दोनों का उपचार किया गया, जो मेघनाथ के ब्रह्मास्त्र से मूर्छित हो गये थे। उपचार के बाद हनुमान जी ने औषधि वाले पर्वत को पुनः हिमालय में प्रतिष्ठित कर दिया। रामचरितमानस के अनुसार हिमालय से औषधि लाते समय भरत जी ने हनुमान जी को गिरा दिया था। परन्तु इस प्रकार का वर्णन प्रक्षिप्त लगता है। लंका से लौटते समय श्रीराम ने सीता जी को दिखाते हुये जिन स्थानों का उल्लेख किया वे इस प्रकार है-नल सेतु (सेतुबंध), किष्किंधा, पम्पा सरोवर, ऋष्यमूक, शबरी आश्रम, कबंध वध स्थल, जनस्थान, जटायु-रावण युद्ध स्थल, खर-दूषण वध स्थल, पंचवटी आश्रम जहां सीताहरण हुआ, गोदावरी, अगस्त्य आश्रम, सुतीक्ष्ण आश्रम, शरभंग आश्रम, चित्रकूट, यमुना नदी तट, भारद्वाज आश्रम, गंगा नदी और श्रृंगवेरपुर।

तेलुगु साहित्य में इस बात का उल्लेख है कि श्रीराम लंका से लौटते समय तिरूपति में भी उतरे थे। वहां आज कल कोदंडराम का प्राचीन मंदिर है, जो १२वीं शताब्दी का बना है। मैने उस मूर्ति का दर्शन किया है।

श्रीराम १४ वर्ष पूरे होने पर पंचमी तिथि को भारद्वाज आश्रम पहुंच गये। (युद्धकांड सर्ग १२४ श्लोक एक) महीने का उल्लेख नहीं है।

श्रीराम ने हनुंमान जी से अयोध्या जाने को कहा- रास्ते में हनुमान जी ने, रामतीर्थ वालुकिनी नदी, वरूथी नदी, गोमती नदी तथा शालवन देखा। वालुकिनी और वरूथी नदियों का उल्लेख अयोध्या से चित्रकूट जाते समय नहीं किया गया।

सः अपश्यद् रामतीर्थम्

नदीं वालुकिनीम् तथा

वरूथीं गोमतीं चैव।

भीमशालवनं तथा॥

(युद्धकाण्ड सर्ग १२५ श्लोक २६)

वाल्मीकि रामायण में युद्ध काण्ड में श्रीराम के राज्याभिषेक के बाद यह काव्य समाप्त हो जाता है, उसके बाद पूरा उत्तर काण्ड प्रक्षिप्त लगता है।

,,,,,,,,,,,,,,,,,,,

मध्य प्रदेश में श्रीराम

वनवास के दौरान श्रीराम ने लगभग दस वर्ष का समय मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ+ में ही व्यतीत किया। इसका उल्लेख वाल्मीकि रामायण में है। मध्य प्रदेश का विभाजन करके छत्तीसगढ+ नामक एक अलग राज्य बना दिया गया है। अत: रामवनगमन से संबंधित कुछ स्थान अब छत्तीसगढ+ में चले गये हैं। उन स्थानों की चर्चा अलग से की गई है।

मध्य प्रदेश के संस्कृति विभाग ने श्रीरामवनगमन से संबंधित स्थानों को न केवल चिन्हित किया है, अपितु राज्य सरकार द्वारा उन स्थानों का विकास भी किया जा रहा है। मध्य प्रदेश शासन ने प्रथमत: रामकथा विशेषज्ञों और पुरातत्वविदों की समिति गठित करके इन स्थानों को चिन्हित किया। समिति के संयोजक, संस्कृति विभाग के तुलसी प्रभाग के तत्कालीन उप निदेशक प्रो० अवधेश पाण्डेय थे। समिति ने १ से ९ मार्च २००९ तक चित्रकूट से बांधवगढ+ तक की शोध एवं सृजन यात्रा की। द्वितीय चरण में ६ से १२ अगस्त २०१० तक भोपाल से अमरकण्टक तक की यात्रा करके श्रीरामवनगमन से संबंधित स्थानों को चिन्हित किया। समिति ने चिन्हित स्थलों के पौराणिक, ऐतिहासिक, भौगोलिक और पुरातात्विक साक्ष्यों का अध्ययन किया। समिति ने इसके साथ ही इन स्थलों के चारों ओर बसे गाँवों के लोगों से मुलाकात की और वहां प्रचलित जनश्रुतियों, लोकगीतों, पर्वो, मेलों, त्यौहारों, कर्मकाण्डों और लोककथाओं का तार्किक ढंग से अध्ययन करके साक्ष्य एकत्रित किये।

समिति ने रामवनगमन से संबंधित जिन स्थानों को चिन्हित किया है, वे इस प्रकार हैं-

चित्रकूट- इस शहर से सभी लोग परिचित हैं। चित्रकूट कर्वी रेलवे स्टेशन के पास है। यह मन्दाकिनी नदी के तट पर स्थित परम पवित्र स्थान है।

यहीं कामदगिरि पर श्रीराम ने बहुत दिनों तक निवास किया था। वर्तमान में चित्रकूट के पास ही मध्य प्रदेश में प्रख्यात समाज सेवी नानाजी देशमुख द्वारा स्थापित ग्रामीण विकास विश्वविद्यालय है। उत्तर प्रदेश के चित्रकूट में जगदगुरु स्वामी रामभद्राचार्य का विकलांग विश्वविद्यालय है। यह सरकारी विश्वविद्यालय है।

भगवान राम ने वनवास काल का एक लंबा समय चित्रकूट के आश्रमों में बिताया। वर्तमान चित्रकूट उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ से दक्षिण-पश्चिम में २८५ कि०मी० दूर स्थित है। चित्रकूट के आसपास मध्य प्रदेश क्षेत्र में अनेक स्थान हैं, जो श्रीराम वन गमन यात्रा से संबंधित हैं। इनका विवरण इस प्रकार है।

गुप्त गोदवारी- यह अत्यन्त रम्य स्थान है। यहां पहाडि+ यों की गोद में दो प्राचीन गुफाएं हैं। ऐसी मान्यता है कि वनवास के दौरान श्रीराम, सीताजी और लक्ष्मण ने यहां निवास किया था। गोदावरी नदी यहीं प्रगट होकर पुन: भूमिगत हो जाती है। यहीं जानकी कुण्ड है, जहां सीताजी स्नान करती थी। पहाडि+ यों के बीच मोर ध्वज आश्रम है जो अत्यन्त प्राचीन है।

स्फटिक शिला- का उल्लेख सभी रामायणों में मिलता है। इस पर भगवान राम विश्राम करते थे। यह स्थान चित्रकूट नगर से कुछ दूरी पर स्थित है। इस पर भगवान राम के चरण चिन्ह अंकित है। स्फटिक शिला प्राचीन शिला है। यहीं भगवान राम बैठकर चिन्तन और मनन भी करते थे। उनके चरण चिन्हों का निर्माण बाद में लोगों ने किया होगा।

हनुमान धारा- चित्रकूट के सबसे ऊँचे पर्वत पर हनुमान धारा है। इतनी ऊँचाई पर न जाने कहां से निरन्तर जल प्रवाहित होता है। हनुमान धारा तक पहुंचने के लिये तीन सौ साठ सीढि+ यां बनाई गई हैं।

अत्रि आश्रम- चित्रकूट से सतना जाने वाले मार्ग पर सती अनसुइया और महर्षि अत्रि का आश्रम स्थित है। कहते हैं, इसी स्थान पर देवी अनुसुइया ने सीताजी को नारीधर्म का उपदेश दिया था, जिसका विस्तार से उल्लेख रामचरित मानस में है। यहीं अनुसुइया जी ने सीता जी को ऐसी साड+ी प्रदान की थी, जो कभी गंदी या धूमिल नहीं होती थी। यह आश्रम मन्दाकिनी नदी के तट पर स्थित है।

अत्रि आश्रम से थोड+ी दूर सरभंग ऋषि का आश्रम है। आश्रम में काले पत्थरों से निर्मित भगवान विष्णु की एक विशाल प्रतिमा है। इसी स्थान पर सरभंग ऋषि ने भगवान राम के दर्शन के बाद अपना शरीर त्याग दिया था। इससे कुछ दूरी पर ही सुतीक्ष्ण ऋषि का आश्रम है, जिसका उल्लेख रामचरितमानस में है। चित्रकूट के पास ही उत्तर प्रदेश की सीमा में अमरावती, विराधकुण्ड पुस्करिणी और मारकुण्ड (मार्कण्डेय) ऋषि का आश्रम है। ये सभी स्थान रामवनगमन मार्ग से जुड+े हुए है।

सीता रसोई- रीवां जिले में क्योटी प्रपात के पास है। यहां पर नारद कुण्ड, प्राचीन शिलालेख, राम मंदिर और भैरव बाबा का मंदिर है। यह स्थान अभी उपेक्षित है।

रामवन- सतना के पास है। यहां प्राचीन दुर्लभ साहित्य और प्राचीन मूर्तियों का एक संग्रहालय है। यहां प्राप्त ऐतिहासिक और पुरातात्विक अवशेषों से अनुमान लगाया जा सकता है कि भगवान राम यहां अवश्य आये होंगे। सतना जिले में ही अश्वमुखी- कात्यायनी देवी का मंदिर है और सिद्धा पहाड+ है। कहते हैं भगवान राम ने इसी स्थान पर ऋषियों को आश्वासन दिया था कि वे

निशाचरों का विनाश करेंगे। वैसे महाराष्ट्र में नागपुर के पास रामगिरि पर एक सरोवर है। इसके बारे में भी कहा जाता है कि भगवान राम ने यहीं पर प्रतिज्ञा की थी कि वे निशाचरों का वध करेंगे- 'निसिचरहीन करौ- मही', भुज उठाई प्रन कीन्हि।''

सतना जिले में ही 'रक्सैलवा' या राम शैल नाम का स्थान है। कालिंजर नागौर मार्ग के निकट बृहस्पति कुण्ड है। यहां आदि मानव द्वारा बनाये गये दुर्लभ शैल चित्र है। सारंग आश्रम को अगस्य और सुतीक्ष्ण की तप स्थली माना जाता है। पन्ना जिले के देवेन्द्र नगर के निकट बडगांव में अग्नि जिह्वा आश्रम है। यह मिढासन नदी का उद्गम स्थल है।

'नचना' (चौमुखनाथ) मध्य प्रदेश में रामकथा से संबंधित एक प्रमुख स्थान है। यहां खोदाई में रामकथा संबंधित दूसरी शताब्दी की मूर्तियां मिली हैं। पन्ना जिले के सलेहा से ९कि०मी० दूर, पटना तमोली ग्राम से ५ कि०मी० दूर सिद्धाश्रम है। इसे भी अगस्य आश्रम कहा जाता है। रामचरितमानस में उल्लेख है कि सुतीक्ष्ण ऋषि ने श्रीराम को अगस्त्य आश्रम पहुंचाया था। यह वहीं आश्रम हो सकता है। सतना जिले के मैहर में, शारदा देवी का अति प्राचीन मंदिर है। यह रामवनगमन मार्ग में पड+ ता है। सतना जिले में ही अमरपाटन से २० कि०मी० दूर सोन और महानदी के संगम पर मार्कण्डेय ऋषि का एक और आश्रम है, जो अब वाण सागर के डूब क्षेत्र में आ गया है। इस आश्रम की याद में पहाड+ी पर नया मार्कण्डेय आश्रम बनाया गया है। यहीं मार्कण्डेय ऋषि ने दुर्गा सप्तशती की रचना की थी। यहीं भगवान राम ने अपने पिता दशरथ का श्राद्ध किया था।

शहडोल जिले के मानपुर से १४ कि०मी० दूर सोनभद्र और जुहिला नदियों के संगम पर दशरथ घाट है। यहां भी भगवान राम ने दशरथ जी का श्राद्ध किया था। आदिवासी आज भी इस स्थल पर श्राद्ध करते है।

बांधवगढ+ अभयारण्य में किले के ऊपर श्रीराम, लक्ष्मण और सीताजी के मंदिर है। विदिशा जिले में चरणतीर्थ स्थान है, जो विदिशा बस स्टैंड के पास है। मध्य प्रदेश सरकार द्वारा बेतवा नदी का जल रोक कर, इस स्थान को पर्यटन की दृष्टि से विकसित किया जा रहा है।

सिरोंज में लक्ष्मण जी के नाम पर पहाड+ी पर एक प्राचीन मंदिर है। देवपुर इस क्षेत्र का महत्वपूर्ण स्थल है, जो भगवान राम के अश्वमेघ यज्ञ से संबंधित है। यहां एक प्राचीन कुण्ड है, जिसका जल स्वास्थ्य वर्धक माना जाता है। आसपास के वन में अनेक गुफायें हैं, जो पुरातत्व की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। इस क्षेत्र में मदागन में महर्षि यमदिग्न और परशुराम जी के आश्रम है। यहीं पर उन्होंने तपस्या की थी।

होशंगाबाद जिले के उमरधा से ५ कि०मी० दूर, दूधी नदी और नर्मदा का संगम है। यहां भी एक प्राचीन आश्रम है। रामवनगमन यात्रा के दौरान हम लोग भोपाल भी गये थे। वहां एक विचार गोष्ठी में एक महिला विदुषी ने प्रश्न किया था कि भगवान राम ने नर्मदा नदी कहां पार किया था। वैसे इस बात का उल्लेख वाल्मीकि रामायण में नहीं है। परन्तु इस संगम तट पर आने से ऐसा लगता है कि भगवान राम ने यहीं नर्मदा नदी को पार किया होगा। कुछ विद्वानों का अनुमान है कि श्रीराम ने रामघाट पिपरिया के मगर मुंहा के पास नर्मदा नदी पार किया होगा।

कटनी के मरभरा में प्राचीन शिव मंदिर है, यहां हनुमान जी की नृत्यमुद्रा में एक प्राचीन मूर्ति है। सीतामढ+ी गंधिया- बांधवगढ+ से दण्डकारण्य में श्रीराम के दण्डकवन में प्रवेश करने के मार्ग में यह पहला पड+ाव है, जिसे सीतामढ+ी कहते हैं। इसके बाद छŸीसगढ+ के कोरिया जिले के कनवाई तक चार सीतामढ+ी हैं। पहली सीतामढ+ी तट चौका रापा, दूसरी सीतामढ+ी रापा, तीसरी सीतामढ+ी छतौड+ा और चौथी सीतामढ+ी कनवाई में है। इसके बाद श्रीराम वर्तमान छŸीसगढ+ के दण्डक वन में प्रवेश कर गये।

विद्वान पं० विद्यानिवास मिश्र मानते है कि रामायण कालीन चित्रकूट बस्तर क्षेत्र का चित्रकोट है। मैं चित्रकोट गया हूँ। इन्द्रावती नदी के तट पर यहां एक सुन्दर जल प्रपात है। अयोध्या से यह स्थान बहुत दूर है। यहां ऋषियों के आश्रम होने का भी कोई उल्लेख नहीं है। अत: यह रामायण कालीन चित्रकूट नहीं हो सकता है।

,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,

छŸीसगढ+ की रामकथा

रायपुर रामवनगमन शोध संस्थान ने छŸीसगढ+ में रामवनगमन मार्ग के संबंध में प्रशंसनीय शोधकार्य किया है। संस्थान की ओर से विद्वानों के एक दल ने राज्य में रामवनगमन से संबंधित स्थानों की यात्रा करके काफी प्रमाण जुटाये हैं। संस्थान ने छŸीसगढ+ की रामकथा नाम का एक ग्रंथ भी प्रकाशित किया है। इस ग्रंथ के प्रकाशक और प्रधान संपादक डॉ० मन्नूलाल यदु ने जो विवरण इस पुस्तक में दिए हैं, वे तार्किक और प्रामाणिक लगते हैं। विद्वान लेखक ने अपने लेख में मध्य प्रदेश शासन के संस—ति विभाग द्वारा गठित शोध समिति के संयोजक प्रोफेसर अवधेश पाण्डेय की मान्यता को आगे बढ+ ाया है। डॉ० मन्नूलाल यदु ने छŸीसगढ+ में रामवनगमन मार्ग में जिन स्थानों का उल्लेख किया है, वे इस प्रकार है। डॉ० यदु के अनुसार श्रीराम का वनगमन चित्रकूट, सतना, पन्ना, उमरिया, शहडोल सरगुजा होते हुये होना चाहिये। वे पंचवटी की स्थिति वर्तमान नासिक में न होकर आंध्र प्रदेश में गोदावरी के तट, भद्राचलम में मानते हैं। उनके अनुसार छŸीसगढ+ में श्रीराम का प्रवेश भरतपुर जिला सरगुजा के पास स्थित सीतामढ+ी हरचौका से हुआ होगा। यह स्थान मवई नदी के तट पर स्थित है। यहां गुफाओं को काटकर सत्रह कक्ष बनाये गये है, जिनमें द्वादश शिवलिंग की स्थापना की गई है। इसके बाद श्रीराम मवई नदी से होकर 'रापा' नदी के तट पर पहुंचे। रापा और मवई नदियों का संगम कटर्रा डाल सेमरिया में है। मवई नदी बनास नदी की सहायक नदी है। रापा नदी के तट पर सीतामढ+ी, घाघरा है, जहां श्रीराम ने विश्राम किया होगा। यहां चार कमरों वाली एक प्रा—तिक गुफा है।

यहां कुछ दिन रहने के बाद श्रीराम कोटाडोल पहुंचे। यहां गोपद और बनास नदियों का संगम है। कोटाडोल से श्रीराम नेउर नदी के तट पर सीतामढ+ी छतौड+ ा आश्रम पहुंचे होंगे। यहां भी एक प्रा—तिक गुफा है, जो सिद्धबाबा के आश्रम के रूप में प्रसिद्ध है। बनास, गोपद और नेउर नदियां भवंरसेन गांव के पास मिलती है।

छतौड+ ा आश्रम से श्रीराम देवसील होते हुए रामगढ+ पहुंचे। वहां से सोनहट पहुंचे। सोनहट छसदो नदी का उद्गम स्थल है। छसदो नदी से होकर वे अमृतधारा पहुंचे। वहां भी एक गुफा सुरंग है। कहा जाता है कि श्रीराम ने यहां महर्षि विश्रवा से भेंट की। यह स्पष्ट नहीं है कि ये विश्रवा ऋषि कौन थे, क्या वे रावण के पिता थे। यहां से श्री जटाशंकरी गुफा में शिवजी की पूजा करने के बाद श्रीराम बैकुण्ठपुर होते हुए पटना, देवगढ+ , गये। यहां कई प्राचीन मंदिर है। देवगढ+ में जगदग्नि ऋषि का आश्रम था। यह रेणु नदी के तट पर स्थित है। यहां कुछ दिन रहने के बाद श्रीराम विश्रामपुर पहुंचे।

इसके बाद वे महानदी के तट पर अंबिकापुर पहुंचे होंगे। यहां महरमण्डा ऋषि के आश्रम में रहने के बाद महानदी के मार्ग से सारासोर पहुंचे। यहां सीताकुण्ड के नाम से विख्यात एक जलाशय है। यहां से श्रीराम ग्राम ओडगी के पास महानदी और रेणु नदी के संगम पर पहुंचे। रेणु नदी से होकर वे उदयपुर के पास सीता वेंगरा जोगीमारा गुफा पहुंचे। जोगीमारा में प्रागैतिहासिक काल के चित्र देखे जा सकते हैं। यहां हथकोर गुफा है, जिससे होकर हाथी भी पहाड+ के उस पार जा सकता है। श्रीराम इसी सुरंग से होकर रायगढ+ की पहाड+ी के पीछे लक्ष्मणगढ+ पहुंचे। उसके बाद वे महेशपुर गये होंगे।

महेशपुर से वापस रायगढ+ में मुनि वशिष्ठ के आश्रम गये। ऋषि के कहने पर वे चन्दन मिट्टी गुफा पहुंचे। उसके बाद वे रेणुनदी होकर अंबिकापुर से १८ कि०मी० दूर दमाली गाँव और बन्दर कोट पहुंचे। यहां की लोककथा के अनुसार बन्दरराज केसरी ने अत्याचारी राजा दमाली का वध करके प्रजा की रक्षा की थी। एक कहावत प्रसिद्ध है- 'देव दमाली बन्दरकोट। ताकर बेटी बांह अस मोठ'। कहते हैं यही हनुमान जी की माता अंजनी ने, जो गौतम ऋषि की पुत्री थी तपस्या की थीं। श्रीराम बन्दरकोट के केसरीवन में सुतीक्ष्ण ऋषि से मिलने के बाद मैनी नदी से होकर मैनपार पहुंचे। उन्होंने ऋषि शरभंग और महर्षि दन्तोली से भेंट की। इसके बाद वे मैनी नदी से होकर माण्ड नदी के तट पर पहुंचे। इसके बाद वे सीतापुर से होते हुए मंगरेलगढ+ गये।

मंगरेलगढ+ में प्राचीन देवी मंदिर के अवशेष है। यहां से वे माण्ड नदी के तट से देउरपुर पहुंचे। देउरपुर को अब महारानीपुर कहा जाता है। यहां प्राचीन विष्णु मंदिर और शिव मंदिर के अवशेष विद्यमान है।

यहां से वे पम्पापुर पहुंचे, जहां किष्किंधा पर्वत है, उसके सामने दुन्दुभि पर्वत है। किष्किंधा में उनकी मुलाकात सुग्रीव से हुई। पम्पापुर से आगे माण्ड नदी के तट पर पिपली ग्राम के पास रक्सगंडा नामक स्थान है। यहां मनोरम प्राकृतिक जल प्रपात है।

रक्सगण्डा से माण्ड नदी होकर श्रीराम पत्थल गांव से १२ कि०मी० दूर किलकिला आश्रम पहुंचे। यहां आज भी कई मंदिर हैं। यहां से श्रीराम धर्मजयगढ+ पहुंचे और फिर चन्द्रमा पुर पहुंचे जहां मांड और महानदी का संगम है। यहां से वे महानदी के तट से शिवरी नारायण पहुंचे, जहां शिवनाथ और महानदी का संगम है। यहीं मतंग ऋषि का आश्रम है। इसके बाद वे ३ कि०मी० दूर खरौद, इसके बाद वे मल्हार पहुंचे, जो दक्षिण कोसल की राजधानी थी। यहां से प्रमाण के रूप में एक प्राचीन सिक्का मिला है।

श्रीराम मल्हार से धमनी, नारायणपुर, तुतुरिया होते हुए बालुकिनी पर्वत के पास वाल्मीकि आश्रम पहुंचे। वहां से सिरपुर, झारंग पहुंचे, जहां कौसल्या कुण्ड है। यहां से महानदी होते हुए वे फिंगेश्वर पहुंचे। यहां माण्डव्य ऋषि का प्राचीन मंदिर है। यहां से राजिम लोमस ऋषि के आश्रम गये। यहां सीता वाटिका भी है। राजिम से मगर लोड होते हुए वे महुवा के वनों को पार करते हुए मधुवन पहुंचे।

श्रीराम मधुवन से देवपुर डोंगापथरा, रूद्री, मंगरेल, दुधावा, देवखूंट, (कंक ऋषि का आश्रम) से सिहावा पहुंचे। सिहावा में श्रृंगी ऋषि का आश्रम है। सिहावा महानदी का उद्गम स्थल है। यहां अनेक ऋषियों के आश्रम थे। कंक से आज का कांकेर जुड+ ा है। यहां से दूधा नदी के मार्ग से गढ+ धनोरा पहुंचे। यहां छठी शती का विष्णु मंदिर है। नारायणपुर के पास राकसहाड+ ा (राक्षसों की हड्डियों का पहाड+) है।

(रामचरित मानस के अनुसार ऋषियों ने महाराष्ट्र के नागपुर के पास रामगिरि पर राक्षसों द्वारा मारे गये ऋषियों की हड्डियों का पहाड+ दिखाया)

नारायणपुर से छोटा डोंगर से, बारसूर से, चित्रकोट से, जगदलपुर होते हुए श्रीराम गीदम पहुंचे। गीदम को गिद्धराज जटायु की राजधानी माना जाता है। गीदम से शंखिनी और डंकिनी नदियों से होकर दन्तेवाड+ ा पहुंचे। यहां दन्तेश्वरी देवी का प्राचीन मन्दिर है। यहां सीतानहानी है। यहां से कोटमसुर से सुकमा होते हुए रामारम पहुंचे। यहां राम नवमी के दिन मेला लगता है। श्रीराम रामारम से शबरी नदी के तट पर कोंटा पहुंचे। यहां से ४०कि०मी० दूर आंध्र प्रदेश के कोनावरम् पहुंचे। यहां शबरी नदी और गोदावरी का संगम है। इसके बाद गोदावरी नदी के तट पर भद्राचलम् पहुंचे। यहां प्राचीन राम देवस्थानम् है। यहां एक पर्ण कुटीर है। कहते है कि इसी पर्ण कुटीर से सीताजी का अपहरण हुआ। यहां लक्ष्मण रेखा बनी हुई है।

छŸीसगढ+ अरिमता प्रतिष्ठान द्वारा गठित रामवनगमन शोधदल ने बहुत प्रशंसनीय कार्य किया है। किन्तु इसमें कुछ विसंगतियां झलकती हैं। अगर सीताहरण मद्रायलम से हुआ तो गीदम , किष्किंधा, शवरी और मतंग आश्रम इसके बाद होने चाहिये। वाल्मीकि रामायण क अनुसार श्रीराम की जटायु, शबरी, और सुग्रीव से भेंट सीताहरण के बाद हुई थी, जबकि जो विवरण शोधदल ने प्रस्तुत किया है, उसके अनुसार ये स्थान मद्राचलम् से पहले आ जाते है, जहां से शोधदल के अनुसार सीताहरण हुआ था।

शोधदल ने १७ अक्टूबर २०१० को रायपुर से दक्षिण भारत की यात्रा भी की और दक्षिण भारत में राम वन गमन मार्ग को चिन्हित किया। शोधदल ने कोरिया (छŸीसगढ+) से कोंटा की

पहली यात्रा की। दूसरी यात्रा बस्तर संभाग के सभी जिलों की की। अन्त में शोधदल ने इन्जरम (कोंटा) से रामेश्वर तक की यात्रा की।

छŸीसगढ+ से निकलकर दक्षिण की ओर प्रवाहित होने वाली शबरी नदी कोनावरम् जिला खम्मन आंध्र प्रदेश में गोदावरी से मिलती है। शोधदल के अनुसार श्रीराम इस नदी को पार करके कृष्णा नदी तथा तुंगभद्रा नदी से होकर कावेरी नदी के तट पर पहुंचे और राजनाथपुरम् में समुद्र तट पर पहुंच गये। शोधयात्रा दल ने दक्षिण भारत में श्रीराम वन गमन से संबंधित निम्नलिखित स्थानों का उल्लेख किया है।

इंजरम बस्तर क्षेत्र के कोंटा से ९ कि०मी० पूर्व शबरी नदी के किनारे स्थित है। यहां से काफी पुरातात्विक सामग्री मिली है। स्थानीय भाषा में इन्जरम का अर्थ होता है राम यहां आये थे। शबरी नदी कोंटा से ४० कि०मी० दूर कोनावरम् में गोदावरी से मिल जाती है। गोदावरी के तट पर अगस्त्य मुनि का आश्रम रहा होगा। भद्राचलम् के पास ही इलेन्दाकुटां ग्राम है जहां श्रीराम ने अपने पिता दशरथ का, फलों से श्राद्ध किया था। गोदावरी नदी को पार करके श्रीराम कृष्णा नदी से कृष्णा और तुंगभद्रा के संगम से होकर बेलगाम पहुंचे। बेलगाम में कबंध और शबरी के आश्रम है। बेलगाम कर्नाटका का एक महत्वपूर्ण स्थल है। इसी राज्य में स्थित हम्पी, तुंगभद्रा नदी के किनारे स्थित है।

हम्पी में रामायण कालीन प्रसंगों के अवशेष उपलब्ध है। इसके पास ही किष्किंधा पर्वत, पंपासर, बालि का महल के अवशेष है। हम्पी विजयनगर साम्राज्य का सुप्रसिद्ध स्थल है। इसी क्षेत्र में तुंगभद्र नदी के तट पर पम्पासर नामक स्थान हैं। ऐसी जनश्रुति है कि श्रीराम किष्किंधा के बाद तुंगभद्रा से होकर कावेरी तट पर रामनाथपुरम् अपनी वानर सेना के साथ पहुंचे थे। यहीं उन्होंने शिवलिंग की स्थापना करके रामेश्वरम् की पूजा की थी। रामनाथपुरम् कर्नाटक के हासन जिले में स्थित है।

रामनाथपुरम् के आगे कावेरी तट पर कृष्ण राजघाट है। इसे 'चुनचुन कट्टे' कहा जाता है। यहीं श्रीराम ने भुंमा-भुंमी नामक राक्षसों का वध किया था। इन दो राक्षसों के नाम पर बैंगलोर-मैसूर मार्ग के मध्य रामनगर में एक प्राचीन मंदिर है। रामनगर से २५ कि०मी० दूर मैसूर नगर है, जहां पुराणों के अनुसार देवी ने महिषासुर का वध किया था।

कावेरी तट पर वडुनूर में कोदंड राम का मंदिर है। कोदंड राम का एक विग्रह गया करई के आगे तिले बिलागम में हैं। कोदण्ड राम का एक प्राचीन मंदिर तिरूपति के पास भी है। इसका निर्माण १२वीं शताब्दी बताया जाता है। इससे आगे कोडी करई स्थान है, जहां श्रीराम ने समुद्र पर पुल की योजना बनाई थी, किन्तु किसी कारण से स्थान बदलना पड+ ।। रामवनगमन मार्ग में रामनाथपुरम्

में तीरताण्ड धाणम् नामक स्थान मुत्रकुंड से १० कि०मी० दक्षिण दिशा में हैं। यहां श्रीराम के चरण चिन्ह अंकित है। रामनाथपुरम् से १३ कि०मी० दक्षिण तिरुपल्ली नामक स्थान है।

यहां दर्भशयनम् नामक प्राचीन धरोहर है। रामेश्वर से ४ कि०मी० दूर गंधमादन पर्वत है। इस मंदिर के ऊपरी भाग में रामझरोखा है, जहां से समुद्र का विहंगम दृश्य दिखाई पड+ ता है। रामेश्वरम् से १४ कि०मी० दूर मण्डपम् नामक स्थान है। यहीं से श्रीराम ने सेना के साथ लंका में प्रवेश किया था। रामेश्वरम् से १६ कि०मी० आगे धनुष्कोटि है।

छŸीसगढ+ अस्मिता प्रतिष्ठान का कार्य नि:सन्देह सराहनीय है। इस संस्था ने कई स्थानों पर पुरातत्व से संबंधित सूत्रों पर भी प्रकाश डाला है, जो महत्वपूर्ण है। रामवनगमन मार्ग से संबंधित स्थानों पर पुरातात्विक साक्ष्य नहीं मिलने के कारण इतिहासकार रामकथा की ऐतिहासिकता पर ही सन्देह करते हैं। छŸीसगढ+ अस्मिता प्रतिष्ठान द्वारा किये गये कार्यो के आधार पर इतिहासकारों को रामकथा पर फिर से विचार करना चाहिये।

,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,

राम-पथ के मन्दिर

रामपथ के विशेषज्ञ विद्वान सीताराम गुरुमूर्ति ने 'रामायण टेम्पल्स' लिखकर बड+ा सराहनीय कार्य किया है। उन्होंने रामकथा से संबंधित जनकपुर (नेपाल) से लेकर श्रीलंका तक के मंदिरों का सचित्र वर्णन किया है। इससे रामकथा की व्यापकता और ऐतिहासिकता पर प्रकाश पड+ ता है। इस पुस्तक में १९४० में प्रकाशित परमशिव अय्यर की पुस्तक 'रामायण एवं लंका की प्रस्तावना भी दी गई है। यह पुस्तक अब उपलब्ध नहीं हैं। श्री अय्यर ने तथाकथित शोध के बाद यह निष्कर्ष निकाला है कि रामायण में वर्णित लंका जबलपुर से १५ मील उत्तर एक पहाड+ी है। उन्होंने कहा कि चोल राजाओं ने १०००-११०० ई. के दौरान सीलोन को श्रीलंका बना दिया। अपनी प्रस्तावना में श्री अय्यर ने स्वीकार किया कि अयोध्या से श्रृंगवेरपुर की रामकथा नि:सन्देह ऐतिहासिक दृष्टि से सही है। अर्थात अय्यर साहब भी रामकथा को कल्पित कथा नहीं मानते है। चित्रकूट के बाद श्रीलंका तक के स्थानों के बारे में उनके अपने तर्क हैं, जिसे उनके बाद के विद्वानों ने मान्यता नहीं दी है। श्री अय्यर श्रीराम की प्रयाग यात्रा को क्षेपक मानते है। परन्तु अयोध्या से चित्रकूट तक रामवनगमन की घटना को वे भी इतिहास सम्मत मानते हैं। गंगापार करने के बाद जिस वट वृक्ष के नीचे श्रीराम ने रात्रि विश्राम किया था, वह देवल कट्टा के पास था, जिसे महमूद गजनी ने कटवा दिया। उनके अनुसार चित्रकूट से नौ मील दूर अनुसुइया पहाड+ी पर अत्रि का आश्रम था। यहां से तीन मील दक्षिण विराध कुंड और वहां से एक योजन दूर पयस्विनी नदी के मुहाने पर सरभंगा आश्रम स्थित था।

एफ.आई. परगिटर आई.सी.एस. ने१८९४ में ब्रिटेन और आयरलैंड की एक पत्रिका में एक लेख लिखा था। उन्होंने वाल्मीकि रामायण, रामोख्यान और षोडस मात्रिका के आधार पर कहा कि रामायण में मध्य, दक्षिण भारत और सीलोन की जो विशिष्टिताएं लिखी हैं वे सही हैं। परगिटर के अनुसार रामायण के रचयिता ने इन स्थानों की यात्रा की होगी। परगिटर साहब किष्किंधा को बेलारी के पास मानते हैं और कहा है कि बेलारी और सीलोन के बीच कोई दक्षिण भारतीय विन्ध्य पर्वत होगा। उनका अनुमान है कि यह विन्ध्य दक्षिण मैसूर की पहाड+ी पठार के लिये आया है। यह विन्ध्य पर्वत मध्य भारत के विन्ध्याचल से भिन्न है।

परगिटर के अनुसार सारभंग आश्रम भोपाल के पास नारवारा विन्ध्याचल की तलहटी में है। यह स्थान चित्रकूट से २५० मील है। वैसे यहां सारभंग आश्रम की स्थिति मानना तार्किक नहीं लगता है, क्योंकि इतनी लम्बी दूरी श्रीराम और सीता दो तीन दिनों में नहीं पूरी कर सकते थे, परन्तु यह संभव है कि नारवारा विन्ध्याचल में भी शरभंग ऋषि का दूसरा आश्रम होगा। ऋषियों के आश्रम कई स्थानों पर होना कोई अनहोनी बात नहीं है।

वाल्मीकि ने योजन षब्द का प्रयोग दो अर्थो में किया है। नियमत: एक योजन चार कोस के बराबर हाता है और एक योजन एक हजार धनुष के बराबर होता है। एक धनुष दो गज के बराबर होता है। योजन का अर्थ भी माना जाता है अर्थात एक सौ धनुषों की लम्बाई के बारबर। इस दृष्टि से धनुषवत उपरोक्त दूरियों को तर्कसंगत भी कहा जा सकता है।

सीताराम गुरूमूर्ति ने अपनी पुस्तक‘ राम-पथ के मंदिर’ में रामवनगमन मार्ग से संबंधित निम्नलिखित स्थानों का उल्लेख किया है- अयोध्या, राम नगर (वाराणसी के पास), चित्रकूट, कौशाम्बी, श्रृंगवेरपुर, नासिक (महाराष्ट्र), भद्राचलम् (आंध्र) अंतर्वेदी (यह स्थान गोदवारी नदी के बंगाल की खाड+ी में मिलन स्थल पर, यह भद्राचलम् से ३० कि०मी० दूर हैं) पंचवटी (रामनाथपुरम्), एक पंचवटी पहाड+ी गोदावारी की धाराओं से घिरी है, जो पांडिचेरी में हैं। इससे कुछ दूर बस्तर जिले में एक छोटा सा गांव है, उसका नाम है लंका।

अट्टोविलम् (श्री सिंगवेलकुद्रम)। कहते हैं श्रीराम और लक्ष्मण जी, सीता जी को खोजते हुये यहां आये थे। यह स्थान चेन्नई-मुंबई रेलमार्ग पर कुडप्पा से चौवन मील दूर है।

युनीजुनतानल्लूर (तमिलनाडु के चिदंबरम् के पास एक छोटा सा गांव), उमायलपुरम् (तंजावुर जिले का छोटा सा गांव, यह कावेरी के तट पर, तंजावुर से विरूवैयास के रास्ते कुंभकोणम् के पास है। ऐसी मान्यता है कि यहीं जटायु घायल होकर गिर गये थे।

वैथीश्वरम् कोइल- जटायु का देहान्त तो उभायलपुरम् में हो गया था- किन्तु श्रीराम-लक्ष्मण उनका शव लेकर ६४ कि०मी० दूर वैथीश्वरम् आये थे, जहां उनका अन्तिम संस्कार किया गया।

तिरूपुकुजी- चेन्नई-बंगलुरू हाइवे पर चेन्नई से अस्सी कि०मी० दूर। कांचीपुरम् स्टेशन से १२ कि०मी०। इसे संपाती और जटायु का जन्म स्थान माना जाता है। यहां श्रीराम पहुंचे थे।

तिरूसुर- केरल में पालघाट के पास हैं। कहा जाता है श्रीराम लक्ष्मण यहां सीताजी को खोजते हुए आये थे।

तिरूप्रयार- केरल में विरूसुर और गुरूवायुर के बीच स्थित है। यहां दोनों भाई आये थे। ऐसी मान्यता है कि उन्हें सीता जी का पता लग गया था। केरल में इंरिंगकुल में कुदाल मणिक्कम् (भरत), मूटिकुलम में लक्ष्मण और कोदुन गुलार के पास कोदुतुरूति में शत्रुध्न मंदिर हैं। ये मंदिर तिरूसुर से २० कि०मी० के दायरे में हैं। श्रीराम के तीनों भाइयों के मंदिर संभवत: अन्यत्र कहीं नहीं हैं।

बेल्लारी- कनार्टक में है। जिला गजेटियर के अनुसार जिले में जो लोग रहते थे उन्हें संस्कृत में वानरस अर्थात वानर कहा जाता है। जैन रामायण उन्हें वानर ध्वज बताते हैं। स्थानीय परम्परा के अनुसार यहां विजयनगरम् राज्य के पहले भी एक नगर था। ऐसा माना जाता है कि किष्किंधा वर्तमान हाम्पी के पास था। यहां पम्मपा नदी के पास ऋष्यूक पर्वत था। कहा जाता है कि तुगंभद्रा नदी का पुराना नाम पम्पा हैं। मातंग पर्वत हाम्पी के पास है। हाम्पी के पास एक पहाड+ी है अंजनाद्रि, जहां हनुमान जी का जन्म हुआ था। विजयनगरम् महल के अवशेषों में हजाराराममन्दिर, पट्टाभिराममन्दिर और गोकर्णम् बहुत महत्वपूर्ण है। हजारा राम मंदिर की दीवारों पर राम कथा से संबंधित चित्र है। मंदिर की एक दीवार पर भगवान विष्णु की बुद्ध अवतार की प्रतिमा है।

तमिलनाडु के कुम्भकोणम् के लगभग ३०० मंदिरों में से एक श्री काशीविश्वनाथ मंदिर है। कहते है ऋषि अगस्त्य की सलाह पर श्रीराम ने यहां शिवजी की पूजा की थी। रामेश्वरम्-देवकोट्टई मार्ग पर राजसिंह मंगलम् से ८ कि०मी० दूर समुद्रतट पर एक गांव है उप्पूर- यहां सेतु निर्माण के पहले श्रीराम ने गणेश जी की आराधना की थी।

देवीपŸानम्- या नवपाषाणम् समुद्र तट पर दूसरा गांव है, जहां श्रीराम ने नवग्रह की पूजा की थी। तिरूपुल्लावी रामेष्वरम् शहर से १२ कि०मी० दूर हैं। पुल बनाते समय श्रीराम ने अपने दिव्यास्त्र यहीं कंवर मुनि के पास रख दिये थे। रामनाथपुरम् से १३ कि०मी० दक्षिण में सेतुक्करई है। श्रीराम ने यहां बांध बनवाया था। प्रोफेसर कानूनगो के अनुसार इसका निर्माण १६ सितम्बर ४३९० ई.पू. रविवार अश्विन को पूरा हुआ था।

रामेश्वरम्

पाक जलधारा के बीच एक द्वीप है। यह मदुरै षहर से १६० कि०मी० दूर है। यह द्वादश ज्योतिर्लिंगों में से एक शिवलिंग है। सड+ क एवं रेल मार्ग से इसका सम्पर्क बाहरी दुनिया से बना है। इस मंदिर की स्थापना भगवान राम ने की। रामेश्वरम् के आसपास गंधमादन पर्वत मंडपम्, और कोदन्ना रामार मंदिर है। रामेश्वर-धनुष्कोटि मार्ग पर जटातीर्थम् है, जहां रावण वध के बाद श्रीराम ने पापमुक्ति के लिये अपनी जटायें कटवा दी थी। इसका वर्णन स्कन्दपुराण की सनत्कुमार संहिता में हैं।

मदुरांटकम्- चेन्नई से ८० कि०मी० दूर डिडीगुल मार्ग पर हैं। माना जाता है कि लंका से लौटते समय श्रीराम यहां उतरे थे और विबंदह ऋषि से भेंट की थी। कांचीपुरम् में श्रीराम ने शिव मंदिर में पूजा की थी।

सेंबोनसोई कोइल (तिरूनंगुर) यह मंदिर नागपत्तनम जिले के सिरकाजी से पांच कि०मी० तिरूनंगुर शहर की सीमा में है। कहते हैं यहां श्रीराम एक ऋषि की सलाह पर त्रुदानेन्द्रार आश्रम में रूके थे।

नामक्कल- सेलम से ५० कि०मी० दक्षिण हैं यहां के एक गुफा मंदिर में हनुमान जी की प्रतिमा है। यह एक कुंड है। कहते है हनुमान जी संजीवनी बूटी लाते समय गण्डकी नदी से शालिग्राम भी लाये थे, जो यहां स्थापित है।

अयोध्यापत्तनम्- सेलम से आठ कि०मी० दूर है। रावण वध के बाद श्रीराम यहां एक दिन रूके थे।

सुरूŸापल्ली- माना जाता है कि राम लक्ष्मण ने यहां शिवजी की आराधना की थी। चेन्नई से उतुकोट्टई के रास्ते तिरूपति जाने के रास्ते में यह स्थान पड+ ता है।

पुत्रकामेश्वर मंदिर- आर्वी रोड से १२ कि०मी० दूर हैं। कहा जाता है कि इस मंदिर का निर्माण दशरथ जी ने कराया था। यहीं उन्होंने पुत्रेष्टि यज्ञ कराया था।

मदुरै- बताते है कि श्रीराम लक्ष्मण और हनुमान मीनाक्षी मंदिर गये थे और शिवजी की पूजा अर्चना की थी। बाद में मण्डप गांव, रामनाथपुरम् और धनुष्कोटि गये थे।

संस्कृत के महाकवि कालिदास ने अपने कहाकाव्य रघुवंशम् के १३वें सर्ग में रामवनगमन मार्ग का काव्यात्मक वर्णन किया है। रावण वध और विभीषण के राज्याभिषेक के बाद श्रीराम और अन्य लोग पुष्पक विमान से अयोध्या लौटते हैं। रघुवंशम् एक काव्य ग्रन्थ है। इसको इतिहास और भूगोल की दृष्टि से साक्ष्य नहीं माना जा सकता है। आकाश से नीचे धरती कैसी दिखाई देती है, इसका जितना सुन्दर वर्णन कालिदास ने किया है, वैसा अन्यत्र देखने को नहीं मिलता है। श्रीराम ने सीता जी को विमान से ही उन स्थलों के बारे में बताया जहां वे सीता अपहरण के बाद उन्हें खोजते हुए गये थे। इसके साथ ही श्रीराम ने लंका से लौटते समय उन ऋषियों से भी भेंट की, जिनसे उन्होंने सीतान्वेषण के समय मुलाकात की थी। इसी क्रम में श्रीरामवनगमन मार्ग के स्थानों का संकेत मिलता है। कालिदास ने सर्वप्रथम विशाल समुद्र का चित्रण किया।

इसके बाद जन स्थान का उल्लेख, जहां रावण का साम्राज्य था। रावण के अत्याचार के कारण ऋषि मुनि जनस्थान छोड+ कर चले गये थे। रावण वध के बाद वे पुन: आकर रहने लगे थे। उसके बाद मलय पर्वत, पम्पाझील और दण्डकारण्य का मनोहारी वर्णन किया है। फिर गोदावरी नदी के तट पर पंचवटी का वर्णन है। कालिदास के वर्णन से ऐसा लगता है कि वे भी पंचवटी की स्थिति भद्राचलम् के पास ही मानते हैं। कालिदास ने पंचवटी के समीप अगस्त्य मुनि के आश्रम तथा उस

झील का जिसमें शतकर्णी मुनि जल के नीचे अपसराओं के साथ रहते थे वर्णन किया। कालिदास ने सुतीक्ष्ण ऋषि के आश्रम को भी यहीं बताया है, जबकि अन्य ग्रन्थों में इसे चित्रकूट के पास बताया गया है। कालिदास ने इसके बाद शारभंग ऋषि का आश्रम और चित्रकूट का वर्णन किया हैं। अत्रि अनुसुइया आश्रम का वर्णन करने के बाद कालिदास ने वट-वृक्ष श्याम का उल्लेख किया है जो चित्रकूट और भारद्वाज आश्रम के बीच स्थित है। गंगा यमुना के संगम के बाद श्रृंगवेरपुर का उल्लेख कालिदास ने किया। कालिदास के वर्णन से ऐसा लगता है कि भारद्वाज आश्रम संगम पर नहीं बल्कि चित्रकूट के पास कहीं अवस्थित था जैसा वाल्मीकि रामायण में उल्लिखित है।

कालिदास ने तथा व्यास और वाल्मीकि ने भी सरयू नदी का विस्तार से वर्णन किया है। इन कवियों ने कहा है कि सरयू नदी का उद्गम मानसरोवर है। परन्तु मानवीय आँखों से इसके उद्गम् को नहीं देखा जा सकता है। वर्तमान में भी सरयू नदी मानसरोवर से नहीं अपितु पृथ्वी से एक धारा के रूप में ऊपर आती है। वर्तमान अयोध्या के पास जो नदी है वह सरयू नहीं अपितु घाघरा है। परन्तु व्यास और वाल्मीकि ने घाघरा का उल्लेख नहीं किया है। लगता है हजारों साल पहले श्रीराम के समय सरयू नदी अयोध्या के पास से ही बहती थी, जो समय बदलने के साथ अयोध्या से उत्तर पूर्व की ओर चली गई है।

अयोध्या से लंका तक के रामवनगमन के मार्ग को लेकर कई सिद्धान्त है। परम शिव अय्यर के अनुसार श्रीराम मध्य प्रदेश के जबलपुर से आगे कभी नहीं गये। परन्तु अमेरिका के साइराकस विश्वविद्यालय के एच. डेनियल स्मिथ ने अयोध्या से लंका तक की श्रीराम की यात्रा का एक नक्शा तैयार किया हैं। प्राचीन मन्दिरों के आधार पर जो नक्शा सीताराम गुरूमूर्ति ने तैयार कराया वह डेनियल स्मिथ के नक्शे से भिन्न हो जाता है। जो भी हो, इसमें कोई सन्देह नहीं कि श्रीराम जबलपुर से आगे वर्तमान श्रीलंका तक गये थे। इतना ही नहीं वाल्मीकि और व्यास आदि कवियों को भी दक्षिण भारत के नगरों और नदियों के बारे में पूरी जानकारी थी।

,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,

श्री रामवनगमन स्थलों की सूची

(१) अयोध्या- लखनऊ से १३० कि०मी० पूर्व

(२) तमसा तट पर स्थित मंडार गाँव। अयोध्या से २० कि०मी० दूर दक्षिण में।

(३) बेसुई नाला (प्राचीन वेद श्रुति नदी)

(४) गोमती नदी- सुल्तानपुर

(५) सई नदी- भगवान कीनाराम आश्रम, रायबरेली।

(६) श्रृंगवेरपुर- गंगातट, इलाहाबाद से ३५ कि०मी० पश्चिम

(७) करई घाट- श्रृंगवेरपुर के बाद गंगानदी के दक्षिण तट पर।

(८) खुरई गाँव टापू- यमुना नदी में द्वीप

(९) प्रयाग वन- भारद्वाज आश्रम-इलाहाबाद

(१०) वाल्मीकि आश्रम, लालापुर, चित्रकूट से १५ कि०मी० दूर

(११) चित्रकूट-कामदगिरी- मन्दाकिनी नदी

(१२) भरत कूप चित्रकूट के पास।

(१३) राजापुर प्रभुघाट- यमुना तट पर स्थित गाँव, जिला चित्रकूट

(१४) शरभंग आश्रम, जिला सतना, म.प्र.

(१५) सुतीक्ष्ण आश्रम

(१६) अत्रि आश्रम-सतना-म.प्र.

(१७) अगस्ती - मनमाड (महाराष्ट्र) रेलवे स्टेशन के दक्षिण

(१८) पंचवटी, गोदावरी के तट पर नासिक के पास (महाराष्ट्र)

(१९) अगस्त्य आश्रम, भद्राचलम्, खम्मम रेलवे स्टेशन के पास आंध्र प्रदेश

(२०) लक्ष्मण सरोवर मुंबई सह्याद्रि, राज भवन के पास, मुंबई।

(२१) सापूतारा जिला, डांग गुजरात।

(२२) नांदेड+ , गुरूगोविन्द सिंह का स्वर्गारोहण स्थल, महाराष्ट्र।

(२३) तिरूपति-कोदंड राम मंदिर (आंध्र प्रदेश)

(२४) राम वन (सतना के पास)

(२५) रक्सैलवा- रामशैल- कालिंजर- नागौर मार्ग पर

(२६) नचना चौमुखनाथ धाम, जिला पन्ना मध्य प्रदेश

(२७) सिद्धाश्रम (जिला पन्ना)

(२८) दशरथ घाट (जिला शहडोल)

(२९) चरण तीर्थ (विदिशा)

(३०) लक्ष्मण पहाड+ी देवपुर- जिला सिरोंज म.प्र.

(३१) उमरधा (होशंगाबाद) दूधी और नर्मदा संगम से ५ कि०मी० दूर

(३२) सीतामढ+ी गंधिया (बांधवगढ+)

(३३) सीतामढ+ी हर चौका (भरतपुर) जिला सरगुजा

(३४) सीतामढ+ी, घाघरा और रापा नदी के तट पर, जिला सरगुजा

(३५) विश्रामपुर-अंबिकापुर (महरमंडा ऋषि का आश्रम)

(३६) लक्ष्मणगढ+ - महेशपुर

(३७) रायगढ+ - वशिष्ठ आश्रम

(३८) दमाली गाँव- जिला अंविकापुर

(३९) बन्दरकोट- अंबिकापुर से १८ कि०मी० दूर

(४०) राजिम-लोमस ऋषि का आश्रम

(४१) सिहावा- श्रृंगी ऋषि का आश्रम- महानदी का उद्‌गम स्थल

(४२) कांकेर-नारायणपुर-राकसहाड+ ा (छत्तीसगढ+)

(४३) गीदम दंतेवाड+ ा (छत्तीसगढ+)

(४४) कोनावरम् (आंध्र प्रदेश)

(४५) इंजरम- कोटा से नौ कि०मी० दूर, (छत्तीसगढ+)

(४६) पम्पासरोवर, मतंग आश्रम, कर्नाटका

(४७) बेलगाम- कवंध और शबरी का आश्रम (कर्नाटक)

(४८) हम्पी- तुंगभद्रा के तट पर-विजय नगरम्

(४९) रामनाथपुरम् जिला हासन कर्नाटका

(५०) चुनचुन कट्‌टे (कृष्ण राजघाट) कावेरी के तट पर

भुंभा-भुंभी मंदिर, रामनगर, (बैंगलुरू)

(५१) तिरूपल्ली- रामनाथपुरम् से १३ कि०मी० दक्षिण

(५२) गंधमादन पर्वत- (रामेश्वरम् से चार कि०मी० दक्षिण)

(५३) मण्डपम्- रामेश्वर से १४ कि०मी० दूर

(५४) धनुष्कोटि- रामेश्वर से १६ कि०मी०

(५५) रामेश्वरम्

,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,

स्वामी रामभद्राचार्य की रामकथा

गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित रामचरितमानस की लोकप्रियता अद्वितीय है। परन्तु इस ग्रन्थ के किसी न किसी पहलू को लेकर बराबर विवाद भी उठते रहते हैं। रामचरितमानस की भाषा के बारे में विद्वान एकमत नहीं है। कोई इसे अवधी मानता है, तो कोई भोजपुरी। कुछ लोग मानस की भाषा अवधी और भोजपुरी की मिलीजुली भाषा मानते है। मानस की भाषा बुन्देली मानने वालों की संख्या भी कम नहीं है। मानस में संस्कृत, फारसी और उर्दू के शब्दों की भरमार है। प्रकाशन विभाग द्वारा सन् १९७८ में प्रकाशित पुस्तक 'रामायण, महाभारत एण्ड भागवत राईटर्स' के पृष्ठ ११० पर मदन गोपाल ने रामचरितमानस की भाषा में के बारे में लिखते हुए कहा, कि 'तुलसीदास अवधी और ब्रज भाषा में बराबर निष्णात थे। उन्होंने लगभग ९०,००० संस्कृत शब्दों को गांवों में प्रचलित किया, जबकि ४०,००० देशी शब्दों को पढ+`-लिखे लोगों के बीच लोकप्रिय बनाया। तुलसीदास ने अवधी और ब्रज भाषा के मिले जुले स्वरूप को प्रचलित किया। इसके साथ ही उन्होंने फारसी और अन्य भाषाओं के हजारों शब्दों का प्रयोग किया। तुलसीदास ने संज्ञाओं का प्रयोग क्रिया के रूप में किया। इस प्रकार के प्रयोगों के उदाहरण बिरले ही मिलते है। तुलसीदास ने भाषा को नया स्वरूप दिया।' मदन गोपाल की समीक्षा स्पष्ट है। ४४० वर्ष पहले लिखी गई पुस्तक, रामचरितमानस के वर्तमान संस्करणों पर आधारित है। अत: इससे रामचरितमानस की मूल भाषा के स्वरूप के बारे में किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुंचा जा सकता। रामचरितमानस की भाषा के बारे में किसी निर्णय पर पहुंचने के पूर्व मानस के काशिराज संस्करण, हिन्दुस्तानी एकेडेमी द्वारा प्रकाशित तथा डॉ० माता प्रसाद गुप्त द्वारा सम्पादित रामचरितमानस तथा गोण्डा जिले के पसका में नरहिरदास के आश्रम में उपलब्ध मानस के बालकाण्ड की हस्तलिखित प्रति पर भी विचार किया जाना चाहिए।

अभी हाल ही में चित्रकूट स्थित अन्तर्राष्ट्रीय मानस अनुसंधान केन्द्र के प्रमुख स्वामी रामभद्राचार्य ने रामचरितमानस का सम्पादन किया है। इसमें उन्होंने लगभग ३००० संशोधन किये है। ग्रन्थ की भूमिका में स्वामी जी ने रामचरित मानस की आज कल उपलब्ध प्रतियों की भाषा के बारे में कई मौलिक प्रश्न उठाये हैं। इन्हीं के आधार पर उन्होंने अपने संशोधनों का औचित्य भी प्रतिपादित किया है।

स्वामी जी ने लिखा है कि रामचरितमानस के वर्तमान संस्करणों में कर्तृवाचक उकार शब्दों की बहुलता है। उन्होंने इसे, अवधी भाषा की प्रकृति के विरुद्ध बताया है। इसी प्रकार उन्होंने उकार को कर्मवाचक शब्द का चिन्ह मानना भी अवधी भाषा के विपरीत बताया है। स्वामी जी अनुनासिकों को विभक्ति का द्योतक मानने को भी असंगत बताते हैं-जब तें राम ब्याहि घर आये। कुछ अपवादों

को छोड+ कर अनावश्यक उकारांत कतृवाचक शब्दों के प्रयोग को स्वामी रामभद्राचार्य ने अवधी भाषा के विरूद्ध बताया है। उनके अनुसार मानस की प्राचीन प्रतियों में उकार और अनुनासिकों का चंद्र ग्रहण नहीं लगा है। 'जैसे प्रचलित अयोध्या काण्ड में उकार की बहुलता है, उसी प्रकार अनावश्यक अनुनासिकों की प्रचुरता भी है, जिनकी अवधी भाषा में न तो आवश्यकता है, और न ही कोई इनकी अर्थ बोधक भूमिका।'

स्वामी रामभद्राचार्य इस बात से तो सहमत है कि तुलसीदास 'ग्राम्य गिरा' के पक्षधर थे। परन्तु वे जायसी की गंवारू अवधी के पक्षधर नहीं थे। स्वामी रामभद्रचार्य ने 'न्ह' के प्रयोग को भी अनुचित और अनावश्यक बताया है, उनके अनुसार नकार के साथ हकार जोड+ ना ब्रज भाषा का प्रयोग है, अवधी का नहीं। स्वामी जी के अनुसार मानस की उपलब्ध प्रतियों में तुम के स्थान पर 'तुम्ह' और 'तुम्हहि' शब्दों के जो प्रयोग मिलते है, वे अनुचित है। उन्होंने लिखा है कि बांदा तथा बुन्देलखण्ड में तुम शब्द का ही प्रयोग होता है।

'श' के प्रयोग के बारे में स्वामी रामभद्राचार्य का मानना हैं कि गोस्वामी तुलसीदास ने 'श' के स्थान पर 'स' का प्रयोग केवल वहीं किया है, जहां इसके प्रयोग से कोई आपत्तिजनक अर्थ न पैदा हो जाये।

स्वामी रामभद्राचार्य ने प्रसंगों के आधार पर भी मानस में कुछ संशोधन किये है, परन्तु उनके द्वारा किये गये ज्यादातर संशोधन मानस की भाषा पर आधारित हैं। शास्त्रों की बार-बार दुहाई देने वाले स्वामी जी ने अपनी बात को सिद्ध करने के लिए चौपाई की परिभाषा भी बदल दी है। पिंगल शास्त्र के अनुसार चौपाई में सोलह-सोलह मात्राओं की चार अर्धालियां होनी चाहिए, परन्तु स्वामी जी के अनुसार चौपाई ४ 'यतियों' का छन्द है। उन्होंने अपनी बात को सिद्ध करने के लिए हनुमान चालीसा का उदाहरण दिया है, जिसमें केवल ८० अर्धालियां है। इस संबंध में इतना ही कहना पर्याप्त है कि बहुत से विद्वान हनुमान चालीसा को रामचरितमानस के रचयिता गोस्वामी तुलसीदास की रचना नहीं मानते हैं। अगर मान भी लिया जाये कि इसकी रचना गोस्वामी तुलसीदास ने ही की होगी, तो भी चालीसा का मतलब ४० चौपाई नहीं है बल्कि ४० पंक्तियां भी हो सकता है, क्योंकि दो अर्धालियों को मिलाकर ही एक पंक्ति बनती है।

अवधी भाषा के सम्बन्ध में सबसे प्रामाणिक ग्रन्थ डॉ० बाबूराम सक्सेना द्वारा लिखित 'अवधी का विकास' माना जाता है। डॉ० सक्सेना विश्वविख्यात भाषाविद् थे, वे इलाहाबाद विश्वविद्यालय में संस्कृत विभाग के अध्यक्ष रह चुके थे। प्रस्तुत ग्रन्थ उनके डीलिट् का शोध प्रबन्ध है, जो उन्होंने डॉ० ज्यूल ब्लाख और डॉ० टर्नर के निर्देशन और मार्गदर्शन में लिखा था। इस पुस्तक

में प्राचीन अवधी और वर्तमान अवधी की ध्वनियों का वैज्ञानिक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। रामचरितमानस की रचना आज से ४४० वर्ष पहले की अवधी भाषा में की गई थी।

डॉ० सक्सेना के अनुसार संघर्षीध्वनि 'श' न तो प्राचीन अवधी की ध्वनि है ओर न ही आधुनिक अवधी की। मानस में 'ष' का प्रयोग ख के स्थान पर किया गया है।डॉ० सक्सेना के अनुसार उकार को कर्म का चिन्ह मानना, अनुनासिकों को विभक्ति का द्योतक मानना, नकार के साथ हकार का जोड+ ना और तुम के स्थान पर 'तुम्ह' और 'तुम्हहि' का प्रयोग तुलसीदास के समय में अवधी भाषा में होता था। अतः अगर तुलसीदास ने ऐसा प्रयोग किया है, तो इसे अस्वाभाविक नहीं माना जा सकता। डॉ० सूर्यभान सिंह द्वारा लिखित मानस शब्दकोश तथा अन्य मानस कोशों को देखने के बाद भी यही नतीजा निकलता है कि 'श' ध्वनि संस्कृत की ध्वनि है, अवधी की नहीं।

संस्कृत की 'श' ध्वनि, बाद में विकसित होकर लोक भाषाओं में स, छ या अन्य ध्वनियों के रूप में बदल गई। जैसे संस्कृत का 'शकट' शब्द लोक भाषा में छकड+ ा हो गया है। इसी प्रकार लोक भाषा के 'छुद्र' शब्द का मूल भी संस्कृत का 'शूद्र' शब्द है। संस्कृत की 'ष' ध्वनि लोक भाषा में 'ख' और कहीं-कहीं 'छ' के रूप में विकसित हो गई। जैसे 'छठ' शब्द का मूल संस्कृत का षष्ठी शब्द है।

पाणिनीय व्याकरण में भी एक सूत्र आता है - 'शश्छोटि'। अर्थात सूत्र में वर्णित परिस्थितियों में 'श' का 'छ' हो जाता है। तात्पर्य यह है कि अवधी में 'श' ध्वनि होती ही नहीं है। अतः रामचरितमानस में इस प्रकार के जितने शब्द मिलते हैं,जिनमें इस ध्वनि का प्रयोग किया गया है, उन शब्दों का प्रयोग गोस्वामी जी ने नहीं किया होगा। वे संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान थे, परन्तु उन्होंने मानस की भाषा के बारे में पहले ही कह दिया।

भाषाबद्ध करब मैं सोई। मोरे मन प्रबोध जेहिहोई।।

(रामचरितमानस, बालकाण्ड दोहा ३० के नीचे।)

स्वामी रामभद्राचार्य ने भाषा की शुद्धता के नाम पर मानस में अवधी शब्दों के स्थान पर संस्कृत शब्दों को स्थापित कर दिया है, जो गोस्वामी तुलसीदास के प्रति उनकी अगाध श्रद्धा और भक्ति का परिचायक है। परन्तु उनके इस प्रयास से मानस में संस्कृत शब्दों की संख्या ही बढ+ी है, जो गोस्वामी जी को अभिप्रेत नहीं था।

रामचरितमानस की तुलसीदास द्वारा लिखित कोई प्रति उपलब्ध नहीं है। जो भी प्रतियां मिलती है, वे उनके जीवनकाल के बाद की तैयार की गई लगती हैं। ऐसा लगता है कि रामचरितमानस की लोकप्रियता को देखकर तथा गोस्वामी तुलसीदास के संस्कृत ज्ञान को ध्यान में रखकर लिपिकारों ने मानस में 'स' 'छ' के स्थान पर 'श' अक्षर लिख दिया। इस प्रकार रामचरितमानस के शब्दों की वर्तनी में भारी परिवर्तन हो गया। इसी वजह से मानस के कई प्रसंग विवादास्पद हो गये हैं। प्रतिलिपिकारों को मानस में जो शब्द संस्कृत भाषा के हिसाब से अशुद्ध लगे, उन्हें शुद्ध करने के लिए उन्होंने अवधी के शब्दों के स्थान पर संस्कृत शब्दों को रख दिया। इस तरह लोक भाषा में रचित रामचरितमानस में संस्कृत शब्दों की भरमार हो गई।

बांदा जिले के राजापुर में, जो अब चित्रकूट जिले में आ गया है, और जिसे तुलसीदास का जन्म स्थान माना जाता है, अयोध्या काण्ड की एक हस्तलिखित प्रति उपलब्ध है। ऐसी मान्यता है कि यह गोस्वामी तुलसीदास के हाथ की लिखी हुई पाण्डुलिपि है। जो भी हो, यह एक प्राचीन प्रति है। इस प्रति में प्रयोग की गई लिपि का विवरण बड+ ा दिलचस्प है। तुलसी जन्म भूमि-शोध समीक्षा के लेखक राम गणेश पाण्डेय ने अपनी पुस्तक पृष्ठ ९१ तथा 'रामचरितमानस में महाकाव्यत्व, भक्ति और दर्शन के लेखक डॉ० विश्वम्बर दयाल अवस्थी ने अपनी पुस्तक में मानस में प्रयुक्त लिपियों का सचित्र वर्णन किया है। इसे देखने से यह स्पष्ट हो जाता है कि जिस समय राजापुर की प्रति लिखी गई होगी, उस समय 'र' ध्वनि का स्वरूप आज के 'न' की तरह था।

अर्थात अगर गोस्वामी जी ने रारी लिखा होगा तो वर्षो बाद उनके हाथ की लिखी हुई प्रति को लोगों ने नानी पढ+ ा होगा और चूंकि नानी शब्द अटपटा लगता है इसलिए इसे नारी लिख दिया गया होगा। इस प्रकार गोस्वामी तुलसीदास द्वारा लिखित -ढोल गंवार छुद्र पसू रारी', 'ढोल गंवार शूद्र नारी' हो गया।

डॉ० बाबूराम सक्सेना ने अपनी पुस्तक में लिखा है कि अवधी भाषा कैथी लिपि में भी लिखी जाती थी। व्यापारी लोग मुडिया लिपि का प्रयोग करते थे। पढ+े लिखे लोग अवधी को देवनागरी और फारसी लिपि में लिखते थे। इस तरह इतने प्रकार की लिपियों में लिखी जाने वाली अवधी में अगर बाद में तुलसीदास की महानता और विद्वता को देखते हुए उनमें संस्कृत शब्दों की भरमार कर दी गई तो कोई आश्चर्य नहीं। अब बात मानस के सुन्दरकाण्ड की विवादास्पद आर्धाली 'ढोल गंवार शूद्र पशु नारी की।'

अवधी में 'श' ध्वनि नही होती है। संस्कृत की 'श' ध्वनि अवधी में कहीं 'छ' और कहीं -स' के रूप में विकसित हो गई। अत: इस अर्धाली में गोस्वामी जी ने निश्चय ही शूद्र नहीं 'छुद्र' और 'पशु' नहीं 'पसु' लिखा होगा, जिसे बाद में 'शूद्र' और 'पशु' बना दिया गया।

चूंकि गोस्वामी जी के समय में 'र' आज के 'न' की तरह लिखा जाता था। अत: ऐसा लगता है कि उन्होंने -'रारी' लिखा होगा, जिसे लिपिकारों ने 'नानी' पढ+ ा होगा और दूसरी आर्धाली से तुक मिलाने के लिये गोस्वामी जी द्वारा लिखित 'रारी' शब्द को नारी बना दिया होगा। अत: अगर कोई कहे कि गोस्वामी जी ने 'ढोल गंवार शूद्र पशु नारी' नहीं बल्कि 'ढोल गंवार छुद्र पसु रारी' लिखा था, तो किसी को आश्चर्य नहीं करना चाहिए।

स्वामी रामभद्राचार्य द्वारा रामचरितमानस का सम्पादन करने पर अयोध्या और वाराणसी के सन्तों में उबाल आ गया। ३१ जनवरी दो हजार नौ को समाचार एजेंसी भाषा ने जैसी रिपोर्ट भेजी उसके अनुसार संकट मोचन फाउन्डेशन के सुनील मिश्र ने पत्रकारों से कहा कि स्वामी रामभद्राचार्य ने तुलसीकृत रामायण में छेड+ छाड+ करके हिन्दू समाज की अगाध श्रद्धा पर चोट की है। अयोध्या में प्रमोद वन में आयोजित बैठक में धर्माचार्यो ने भी स्वामी रामभद्राचार्य पर रामचरितमानस में छेड+ छाड+ का आरोप लगाया। (अमर उजाला लखनऊ दो नवम्बर २००८) इसी बीच २४ अक्टूबर २००९ से अयोध्या में स्वामी रामभद्राचार्य की रामकथा का कार्यक्रम था। सन्तों के विरोध के कारण प्रशासन ने इस पर रोक लगा दी। इसके विरोध में हैदराबाद से अयोध्या आये रामभद्राचार्य के शिष्यों ने जानकी महल ट्रस्ट के सामने प्रदर्शन किया। स्वामी रामभद्राचार्य ने स्वयं कहा कि वे इस विषय पर किसी से भी शास्त्रार्थ करने को तत्पर है। उन्होंने कहा कि 'अयोध्या से आज सुबह फोन आया। मुझसे कहा गया कि सात लाख रूपये भिजवा दीजिये। यहां सन्तों में लिफाफे बंट जायेंगे और आइये कथा कहिये।'' (अमर उजाला, लखनऊ २४.१०.२००९)और टाइम्स ऑफ इण्डिया लखनऊ ०१.११.२००९) स्वामी रामभद्राचार्य के इस कथन पर अयोध्या का सन्त समाज और भड+ क गया। उन्होंने धमकी दी कि रामभद्राचार्य से जगद्गुरू की पदवी छीन ली जायेगी। रामचरितमानस में स्वामी जी द्वारा किये गये संशोधनों से मै भी सहमत नहीं हूँ। फिर भी मेरे विचार से हर व्यक्ति को अपना विचार व्यक्त करने की आजादी है। अत: मैने स्वामी रामभद्राचार्य से स्वयं टेलीफोन पर बात की और मैने कहा कि उन्हें किसी के सामने नहीं झुकना चाहिए। परन्तु लगता है कि स्वामी जी भयभीत हो गये। अन्तत: उनकी एक शिष्या जो सुप्रसिद्ध वकील है, ने स्वामी जी की तरफ से एक माफीनामा अयोध्या में अखाड+ ा परिषद के अध्यक्ष महन्त ज्ञानदास के सामने प्रस्तुत किया।

महन्त ज्ञानदास ने कहा कि माफीनामे के बाद स्वामी रामभद्राचार्य की जगत्गुरू की पदवी नहीं छिनी जायेगी, परन्तु उन्होंने रामभद्राचार्य द्वारा सम्पादित रामचरितमानस को अमान्य कर दिया। यह भी तय किया गया कि पुस्तक की शेष प्रतियां बांटी नहीं जायेगी और जो प्रतियां बांट दी गई हैं, उन्हें वापस लिया जायेगा। इस पर यह विवाद शान्त कर किया गया।

कुछ लोगों ने रामभद्राचार्य के खिलाफ अदालत में भी दावा दायर किया था। सुनवाई के बाद अदालत ने उनका दावा खारिज कर दिया। अदालत ने कहा कि स्वामी रामभद्राचार्य का उद्देश्य किसी की भावना को ठेस पहुंचना नहीं है। (अमर उजाला लखनऊ, और हिन्दुस्तान लखनऊ ४.११. २००९)

रामचरितमानस का सम्पादन करने के कारण अयोध्या के सन्तों ने इतना विरोध किया। परन्तु इसी अयोध्या में, २६-३-२००८ को श्रीराम जन्मभूमि न्यास के तत्कालीन अध्यक्ष महन्त नृत्यगोपालदास ने लगभग डेढ+ सौ वर्ष पूर्व गोलोकवासी महन्त स्वामी रामवल्लभशरण द्वारा संशोधित रामचरितमानस का लोकार्पण किया। इस संशोधन का किसी ने विरोध नहीं किया। (जागरण लखनऊ २७.०३.२००८) इससे भी पहले वर्ष २००७ में उत्तर प्रदेश के राज्यपाल रह चुके तथा राष्ट्रीय अनुसूचित जाति आयोग के अध्यक्ष सूरज भान ने रामचरितमानस और मनुस्मृति में दलितों के खिलाफ अंशों को निकाल देने की मांग श्रृंगेरी के शंकराचार्य से की। उस समय स्वामी रामभद्राचार्य और विश्व हिन्दू परिषद् के अशोक सिंघल ने शास्त्रों में संशोधन की मांग का तो विरोध किया परन्तु वे इस बात से सहमत थे कि रामचरितमानस में दलितों के खिलाफ जो अंश हैं, उन्हें लोगों ने बाद में जोड+ ा होगा। (हिन्दुस्तान लखनऊ २०.०७.२००५)

सन्तों ने धमकी दी थी कि स्वामी रामभद्राचार्य को अयोध्या में घुसने नहीं दिया जायेगा। रामचरितमानस धार्मिक कथा पर आधारित एक अत्यन्त लोकप्रिय साहित्यिक रचना है। साहित्यिक कृति की आलोचना, समालोचना तथा इसका तार्किक संशोधन आदि करने का किसी भी व्यक्ति को अधिकार है। किसी भी व्यक्ति को स्वामी राम भद्राचार्य की इस कार्यवाही की आलोचना और समालोचना करने का भी अधिकार है। इस विषय पर सार्थक बहस होनी चाहिए, परन्तु अयोध्या के इन सन्तों का यह कहना, कि स्वामी रामभद्राचार्य को अयोध्या में घुसने नहीं दिया जायेगा, सर्वथा अनुचित है।

स्वामी रामभद्राचार्य ने रामचरितमानस का जो संस्करण प्रकाशित किया है, विद्वान भी उससे सहमत नहीं है, हालांकि स्वामी जी ने अपनी कृति को चित्रकूट के अपने आश्रम के मंदिर में पत्थरों

पर उकेर कर उसे चिरस्थाई कर दिया है। वैसे ही जैसे वाराणसी के संकट मोचन मंदिर में सुन्दरकाण्ड को पत्थरों पर लिखवाया गया है।

गोस्वामी तुलसीदास के हाथ की लिखी मानस की पाण्डुलिपि कहीं उपलब्ध नहीं है। मानस के विभिन्न संस्करणों में भिन्न भिन्न पाठ मिलते हैं। ऐसी परिस्थिति में मानस का शुद्ध पाठ तैयार करने के प्रयास को अगर मानस के साथ छेड+ छाड+ मान लिया जाये तो यह कार्य करने वाले स्वामी रामभद्राचार्य पहले व्यक्ति नहीं है।

श्रीप्रकाश केदार द्वारा अयोध्या से प्रकाशित रामचरितमानस में जो दावे किये गये है। वे भी सन्देह पैदा करने वाले हैं। इसमें कहा गया है कि इस संस्करण को एक सौ पच्चीस वर्ष पहले तैयार किया गया था और यह लखनऊ से नवल किशोर प्रेस द्वारा प्रकाशित रामचरितमानस पर आधारित है। संयोग से मेरे पास नवल किशोर प्रेस द्वारा प्रकाशित मानस की एक प्रति है।

यह सन् १९४९ में दसवीं बार प्रकाशित की गई थी, उसमें आठ काण्ड हैं, जबकि अयोध्या के श्री प्रकाश केदार द्वारा प्रकाशित संस्करण में केवल सात काण्ड हैं। नवल किशोर प्रेस से छपी मानस का नाम Þरामायणß है। इसका सम्पादन पण्डित सूर्यदीन सुकुल ने किया है और पुन: सम्पादन पण्डित रूप नारायण पाण्डेय ने किया है। इसके अतिरिक्त नवल किशोर प्रेस से कोई मानस छपी हो तो नहीं कहा जा सकता।

रामचरितमानस का तथाकथित संशोधन सबसे पहले काशिराज संस्करण ने किया। काशिराज संस्करण में प्रचलित रामचरितमानस के लगभग पचास पन्ने की सामग्री छांट दी गई है। पूरा लवकुश काण्ड प्रक्षिप्त कहकर निकाल दिया गया है। मानस का गीता प्रेस संस्करण ही सस्ता होने के कारण सर्वाधिक बिकता है। गीता प्रेस ने भी पहली बार जब रामचरितमानस प्रकाशित किया था, तो उसमें संभवत: आठ काण्ड थे। बाद में उन्होंने लवकुशकाण्ड निकाल दिया। क्या यह मानस के साथ छेड+ छाड+ नहीं है। इलाहाबाद विश्वविद्यालय के डॉक्टर माता प्रसाद गुप्त ने लगभग १९ वर्षो के अध्ययन के बाद मानस का मानक पाठ तैयार किया, परन्तु वह भी लोकप्रिय नहीं हुआ। गीता प्रेस द्वारा प्रकाशित मानस में लक्ष्मण रेखा का प्रसंग गायब है। क्या यह मानस के साथ छेड+ छाड+ नहीं है। अत: स्वामी रामभद्राचार्य पर मानस में छेड+ छाड+ करने का आरोप न्यायसंगत नहीं कहा जा सकता है।

,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,

मानस के प्रक्षिप्त अंश

गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित रामचरितमानस भारतीय संस्कृति का सार ग्रथ है। गोस्वामी जी ने इसकी रचना आज से ४४० वर्ष पूर्व विक्रम संवत् १६३१ में की थी। राम कथा को आधार बनाकर लिखी गई पुस्तकों में यह सबसे अधिक लोकप्रिय है। एक अनुमान के अनुसार अब तक रामचरितमानस की आठ करोड+ से भी अधिक प्रतियाँ बिक चुकी हैं। किसी अन्य साहित्यिक कृति की इतनी प्रति शायद ही छपी हों। रामचरितमानस का अनुवाद दुनिया की सभी प्रमुख भाषाओं में भी हो चुका है। इस पर सैकड+ों आलोचनात्मक ग्रंथ भी लिखे जा चुके हैं।

श्रद्धालुओं के लिए मानस की चौपाइयाँ मंत्र की तरह है। लाखों लोग इनका जप करके आध्यात्मिक उन्नति तो प्राप्त करते ही हैं, अपनी भौतिक समस्याओं का भी समाधान पाते हैं। इसके लिए किसी प्रमाण की आवश्यकता नहीं।

गोस्वामी तुलसीदास एक महान वैष्णव संत ओर समाज सुधारक थे। उनकी रचना ने निराशा के दिनों में भारतीय समाज को सम्बल प्रदान किया। पश्चिम की ओर से हो रहे विदेशी आक्रमणों से त्रस्त भारतीय जनमानस के समक्ष रामकथा के माध्यम से मर्यादा पुरूषोत्तम राम का आदर्श चरित्र प्रस्तुत करके गोस्वामी जी ने लोगों में नई आशा और विश्वास की ज्योति जगाई। हिन्दी के सुप्रसिद्ध समालोचक आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने (पृष्ठ ९ गोस्वामी तुलसीदास, अनुज प्रकाशन, जयपुर) कहा है Þगोस्वामी जी के वचनों में हृदय को स्पर्श करने की जो शक्ति है वह अन्यत्र दुर्लभ है। उनकी वाणी के प्रभाव से आज भी हिन्दू भक्त, अवसर के अनुसार सौंदर्य पर मुग्ध होता है, महत्व पर श्रद्धा करता है, शील की ओर प्रवृत्त होता है, सन्मार्ग पर पैर रखता है, विपत्ति में धैर्य धारण करता है, कठिन कार्य में उत्साहित होता है, दया से आर्द्र होता है, बुराई पर ग्लानि करता है, शिष्टता का अवलंबन करता है और मानवजीवन के महत्व का अनुभव करता है।ß

विभिन्न प्रकाशकों द्वारा प्रकाशित रामचरितमानस के दर्जनों संस्करण उपलब्ध है। कुछ हस्तलिखित प्रतियां भी हैं, जो पूरी नहीं हैं। मानस के इन संस्करणों में, सैकड+ों की संख्या में पाठभेद है। एक संस्करण की कई चौपाइयां दूसरे संस्करणों में गायब हैं। अधिकांश संस्करणों में मानस के ८ काण्ड हैं, जबकि कुछ संस्करणों में आठवां काण्ड (लवकुश काण्ड) निकाल दिया गया है। ऐसी परिस्थिति में यह तय कर पाना आसान नहीं, कि रामचरितमानस का शुद्ध और मानक पाठ क्या है ? गोस्वामी जी की हाथ की लिखी कोई प्रति उपलब्ध नहीं है। गोस्वामी जी के समय में छापेखाने का आविष्कार नहीं हुआ था, उस समय रचनाकार अपनी रचना लिख लेते थे और बाद में

प्रतिलिपिकार उनकी प्रतियां बनाते थे। इस प्रक्रिया में कुछ छूट जाना, कुछ जुड+ जाना या कुछ बदल जाना असम्भव नहीं लगता है। इतने सारे पाठभेद होने का यह एक प्रमुख कारण है।

प्राचीन भारतीय साहित्य में प्रक्षिप्त अंश लिखने की एक लम्बी परम्परा देखी जाती है। जब भी कोई रचना बहुत लोकप्रिय होती थी तो कुछ 'उर्वर' मस्तिष्क वाले रचनाकार उसमें अपनी रचना जोड+ देते थे। इसका सबसे बड+ा उदाहरण है- महाभारत। मूल महाभारत वर्तमान महाभारत से काफी कम श्लोकों का था। यहां तक कि उसका नाम भी प्रारम्भ में 'जय' था। बाद में उसमें कुछ और श्लोक जोड+` गये और उसका नाम भारत हो गया। प्रक्षिप्त श्लोक जोड+ ने की यह प्रवृत्ति बाद में भी जारी रही और भारत में कुछ और श्लोक जोड+ कर उसे महाभारत बना दिया गया। यही हाल वाल्मीकि रामायण का भी है। अब विद्वान इस पर एकमत हैं कि वाल्मीकि रामायण का एक बड+ा हिस्सा प्रक्षिप्त है। इसी तरह रामचरितमानस की बढ+ती हुई लोकप्रियता को देखकर, अगर बाद में अन्य कवियों ने उसमें कुछ जोड+ दिया हो तो कोई आश्चर्य नहीं। गोस्वामी जी के साथ एक और समस्या थी। संस्कृत के पण्डित उनसे ईर्ष्या रखते थे। वे इसके घोर विरोधी थे कि कोई व्यक्ति लोगों की भाषा में रामकथा लिखे। इस प्रकार के विद्वानों ने तुलसीदास को बहुत कष्ट दिया। बहुत सम्भव है कि इसी परम्परा के कुछ विद्वानों ने उनके निधन के बाद उनके रामचरितमानस में कुछ अवांछनीय चौपाइयां जोड+ दी हो, जिनसे गोस्वामी जी की आलोचना हो सके। अतः यह कहना, कि वर्तमान रामचरितमानस में कुछ भी प्रक्षिप्त नहीं है, तर्कसंगत नहीं लगता। जब एक पूरा लवकुश काण्ड प्रक्षिप्त हो सकता है तो शेष ७ काण्डों में अगर कुछ चौपाइयां प्रक्षिप्त हों तो इसमें किसी को कोई आश्चर्य नहीं होना चाहिए।

लवकुश काण्ड को निकालने के उपरान्त मानस में कुल ४३०४ चौपाइयां और ११६५ दोहे बचते है। चौपाई चार पदों या अर्द्धालियों का छन्द है। मानस में १०३ चौपाइयां ऐसी हैं, जिसमें केवल दो अर्द्धालियां है। डॉ० जगदीश प्रसाद कौशिक के अनुसार (काव्य दर्पण- साहित्यगार प्रकाशन, जयपुर पृष्ठ-१६४) 'चौपाई चार चरणों का छन्द है, प्रत्येक चरण में १६ मात्राएं होती है' मानस में जो १०३ चौपाइयां केवल २ अर्द्धालियों की है, ऐसा लगता है कि उनकी शेष अर्द्धालियां प्रतिलिपि करते समय भूल से छूट गई या उन्हें ही किसी और ने बाद में जोड+ दिया होगा। गोस्वामी जी जैसा समर्थ कवि दो अर्द्धालियों की चौपाई क्यों लिखेगा ? यह बात अयोध्या काण्ड को देखने से सिद्ध हो जाती है। अयोध्या काण्ड सबसे व्यवस्थित काण्ड है, इसमें कुल १३०६ चौपाइयों में से केवल ७ चौपाइयां ऐसी है जो २ अर्द्धालियों की है। अयोध्या काण्ड की एक और विशेषता है कि इसमें एक तरंग में अर्थात दो दोहे या सोरठों के बीच चार चौपाइयों का समूह है। तरंग का अर्थ है एक दोहा या सोरठा के बाद से लेकर अगले दोहे या सोरठे तक आने वाली चौपाइयां। अयोध्याकाण्ड की यह

व्यवस्था अन्य काण्डों में गड+ बड+ ा गई है। अयोध्या काण्ड में केवल एक तरंग साढ+े चार चौपाई की है। कुछ लोगों का ख्याल है कि मानस में जिन तरंगों में चार से अधिक चौपाइयां हैं या जहां दो अर्द्धालियों की चौपाई है वहां गोस्वामी जी के बाद किसी अन्य कवि ने कुछ अर्द्धालियां जोड+ दी होंगी।

मानस में कुल ७९१ तरंगें ऐसी है जिनमें ४ चौपाइयां है। एक चौपाई की एक तरंग, तीन चौपाइयों की एक तरंग तथा साढ+े तीन चौपाइयों की ग्यारह तरंगे है। चार से अधिक चौपाइयों की कुल ११६ तरंगें है। ढ+ ाई चौपाइयों की एक तरंग किष्किन्धा काण्ड में भी है।

हिन्दी के वरिष्ठ समालोचक और पिंगल शास्त्र के विद्वान आचार्य पुत्तूलाल शुक्ल 'चन्द्राकर' ने रामचरितमानस की छंद योजना पर एक विद्वतापूर्ण निबंध लिखा है (पृष्ठ-२६१ चन्द्राकर ग्रन्थावली, अम्बुजा प्रकाशन, लखनऊ) Þमानस की चौपाइयों में दो प्रकार के अपवाद पाये गये हैं। प्रथम प्रकार के अपवाद वह हैं, जिनमें १६ मात्राएं तो है पर अन्त में रगड+ आया है। दूसरे प्रकार का अपवाद वह है, जो वस्तुत: बहुत बड+ ा अपवाद है, जहां १५ मात्राओं का चौबोला छंद आया है। छंद शास्त्र की दृष्टि से इन स्थानों को चिन्त्य ही नहीं निन्द्य भी माना जाता है। बालकाण्ड और अयोध्याकाण्ड में बड+ी उत्कृष्टता है। इन दोनों काण्डों में ये अपवाद नहीं है। बालकाण्ड और अयोध्याकाण्ड में ढाई हजार से अधिक चौपाइयां लिखने के उपरान्त गोस्वामी जी की बाद की चौपाइयों में ऐसे अपवादों का आना बहुत बड+ ा प्रश्न खड+ ा करता है। ऐसी त्रुटियों को प्रतिलिपिकारों की त्रुटियां कहकर भी हम अपने को समझा नहीं पाते और दो काण्ड निर्दोष लिखने के बाद गोस्वामी जी ने ऐसे चरण कैसे लिखे यह भी समझ में नहीं आता। चन्द्राकर जी के इस कथन में प्रक्षिप्त अंश काफी संख्या में हो सकते हैं। इसी लेख में चन्द्राकर जी ने स्पष्ट किया है कि अरण्यकाण्ड में एक चौपाई में गीध द्वारा राम की वन्दना और ढाई चौपाइयों की तरंग में बालि द्वारा राम की वन्दना बाद में जोड+ी गई प्रतीत होती है। इसी प्रकार बालकाण्ड में सप्तर्षियों और पार्वती के बीच वार्तालाप के उपरान्त यह निष्कर्ष निकाला है कि एक दर्जन से अधिक स्थानों पर अर्द्धालियां छूट गई हैं।

रामचरितमानस के उत्तरकाण्ड में- 'प्रथमहि अति अनुराग भवानी' से लेकर 'कथा समस्तष्भुसुण्डि बखानी। जो मैं तुम्ह सन कही भवानी।।ß तक उन प्रसंगों की सूची दी गई है, जिनका वर्णन रामचरितमानस में किया गया है। इस सूची में अयोध्याकाण्ड, अरण्यकाण्ड, किष्किन्धाकाण्ड और सुन्दरकाण्ड के सभी छोटे-बड+े प्रसंगों का उल्लेख है, जबकि बालकाण्ड, लंकाकाण्ड और उत्तरकाण्ड के कई प्रमुख प्रसंगों को इस सूची में सम्मिलित नहीं किया गया है। इस सूची में

बालकाण्ड से केवल रामचरित सरोवर, नारदमोह, रावण का जन्म, भगवान राम का अवतार, बाल लीला, विश्वामित्र आगमन और राम सीता के विवाह का उल्लेख है, जबकि बालकाण्ड के अन्य प्रमुख प्रसंगों जैसे वन्दना, मानस सरिता, याज्ञवल्क्य-भारद्वाज संवाद, भानुप्रताप की कथा, सती का मोह और शिव-पार्वती के विवाह का उल्लेख इस सूची में नहीं है। इसी प्रकार लंकाकाण्ड से केवल अंगद का रावण के दरबार में दूत बनकर जाना निशाचरों ओर वानरों की लड+ाई, कुंभकरण तथा मेघनाथ की वीरता का वर्णन, रावण-वध, मंदोदरी का शोक, विभीषण का राज्याभिषेक, सीता-श्रीराम का मिलन और देवताओं द्वारा श्रीराम की वन्दना को ही, इस सूची में शामिल किया गया है, जबकि रावण के अखाड+ा का वर्णन, रावण-मंदोदरी संवाद, लक्ष्मण को शक्तिबाण लगना, हनुमान जी द्वारा संजीवनी बूटी लाना और सीता की अग्नि परीक्षा जैसी प्रमुख घटनाओं का उल्लेख इस सूची में नहीं है। इसी प्रकार उत्तरकाण्ड से श्रीराम का पुष्पक विमान द्वारा अयोध्या आना, उनका राज्याभिषेक और श्रीराम द्वारा प्रजाजनों को उपदेश देना ही इस सूची में शामिल किया गया है। परन्तु भरत हनुमान भेंट, बंदरों आदि की बिदाई, राम-राज्य का वर्णन, मुनियों द्वारा राम की वन्दना, मायाकृत दोषों का वर्णन, कागभुसुंडि की कहानी और कलियुग आदि का वर्णन इस सूची में शामिल नहीं किया गया है। पूरे रामचरितमानस में शिव-पार्वती तथा कागभुसुंडि और गरूड+ का उल्लेख श्रोता और वक्ता के रूप में बार-बार आता है, जबकि याज्ञवल्क्य और भारद्वाज का उल्लेख केवल बालकाण्ड ओर लवकुशकाण्ड में ही आता है। बालकाण्ड में जिन प्रसंगों को उत्तरकाण्ड की सूची में शामिल नहीं किया गया है उनके बारे में मानस विशेषज्ञों का ऐसा विचार है कि गोस्वामी जी ने इन प्रसंगों को स्वयं उत्तरकाण्ड लिखने के बाद बालकाण्ड में जोड+ा होगा। अगर ऐसा है तो गोस्वामी जी उत्तरकाण्ड की सूची में भी संशोधन कर सकते थे। परन्तु ऐसा नहीं किया गया। इसलिए ऐसा लगता है कि बालकाण्ड के भारद्वाज याज्ञवल्क्य संवाद, सती का मोह इत्यादि प्रसंग तुलसीदास के बाद किसी अन्य कवि ने जोड+ दिया होगा। लवकुशकाण्ड को अधिकांश विद्वान पूरी तरह प्रक्षिप्त मानते हैं। हालांकि नवलकिशोर प्रिन्टिंग प्रेस लखनऊ से संवत् २००६ में प्रकाशित रामायण में लवकुशकाण्ड को प्रक्षिप्त नहीं माना गया है। रामायण के इस संस्करण में अन्य प्रसंगों को प्रक्षिप्त मानते हुए भी पुस्तक के मूल पाठ में शामिल किया गया है।

अयोध्याकाण्ड में एक भी दोहा या सोरठा ऐसा नहीं है जिसके साथ दूसरा दोहा या सोरठा दिया गया हो, जबकि बाद के काण्डों में दो से लेकर छः दोहे या सोरठे तक, एक साथ दिये गये है। अयोध्याकाण्ड के बाद गोस्वामी जी की शैली में अचानक इस परिवर्तन से भी कई सवाल खड+ा होते है। रामचरितमानस में जो विवादास्पद प्रसंग है, उनकी चर्चा कोई भी कथावाचक या रामायणी अपने प्रवचन में नहीं करता है, क्योंकि सम्बन्धित चौपाइयां या दोहे अप्रिय हैं, उनका उल्लेख करने से कुछ लोगों की भावनाओं को ठेस लगेगी।

रामचरितमानस के पाठ निर्धारण में काशिराज संस्करण का योगदान अमूल्य है। इसके विद्वान संपादक आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने पुस्तक की भूमिका में लिखा है-Þमानस-हस्तलेखावगाहन के क्रम में देखा गया कि यों तो पाठ वृद्धि और प्रक्षेप की प्रवृत्ति बहुत पहले से है किन्तु अति प्रक्षेप संवत् १७८५ से हुआ और संवत् १८२० तक पराकाष्ठा पर जा पहुंचा। निश्चय हुआ कि यथाशक्य संवत् १७८५ के पूर्ववर्ती हस्तलेखों का ही उपयोग हो। छूट केवल प्राचीन परम्परासूचक प्रतियों को ही दी जाय। साथ ही कैथी (लिपि) की इसी सीमा के अन्तर्गत की प्रतियों का भी अवश्य विनियोग हो। स्थूल रूप में मानस प्रणेता के अवसान काल के अनन्तर एक शतक तक के उत्तरपूर्वी हस्तलेखों का नियोजन हो और मानस के सर्जनकाल (संवत् १६३१) से संवत् १७८५ तक सम्भव हो तो प्रत्येक दशक का एक हस्तलेख अवश्य हो।ß विद्वान आचार्य ने बहुत ही वैज्ञानिक ढंग से निर्धारित सीमा के अन्तर्गत उपलब्ध मानस की हस्तलिखित प्रतिलिपियों का अध्ययन करके रामचरितमानस का मानक पाठ तैयार किया है। आचार्य मिश्र ने मानस के इस संस्करण में पाठभेदों और प्रक्षिप्त अंशों को भी समाहित किया है। उनका यह कार्य निश्चय ही वंदनीय है। परन्तु जैसा उन्होंने स्वयं कहा है कि मानस में प्रक्षिप्त अंश लिखने की प्रवृत्ति गोस्वामी जी के अवसान के उपरान्त ही प्रारम्भ हो गई थी। अत: इससें कोई आश्चर्य नहीं कि उसी अवधि में कुछ ऐसे अंश जोड+ दिये गये, जो गोास्वामी जी के विचारों और सिद्धान्तों से बिल्कुल मेल नहीं खाते। तुलसी साहित्य के मर्मज्ञ विद्वान डॉ० माताप्रसाद गुप्त ने अपनी पुस्तक 'रामचरितमानस' प्रकाशक हिन्दुस्तानी एकेडमी इलाहाबाद (वर्ष १९४९) की भूमिका में लिखा है कि-Þकवि (तुलसीदास) की हस्तलिखित या उसकी समकक्ष प्रतियों के अभाव में यही एक मात्र प्रणाली (सम्पूर्ण ग्रंथ के लिए समस्त बहिसाक्ष्य और अन्त: साक्ष्य का विश्लेषण करके निकाले हुए व्यापक सिद्धान्तों का अनुसरण करते हुए) रह जाती है, जिसकी सहायता से कवि के पाठ के अधिक से अधिक निकट पहुंचने का प्रयास किया जा सकता है।ß

इस परिप्रेक्ष्य में मानस के कुछ प्रमुख प्रसंगों पर भी विचार किया जाना चाहिए, जिन्हें लेकर अक्सर विवाद उठता रहता है। इस सिलसिले में सुन्दरकाण्ड की वह चौपाई उल्लेखनीय है, जो सबसे अधिक विवादास्पद रही है-

'ढोल गंवार सूद्र पसु नारी। सकल ताड+ ना के अधिकारी' यह कथन समुद्र का है। श्रीराम के क्रोध करने के बाद समुद्र ने अपने बचाव में दो बातें कही। पहली बात -गगन समीर अनल जल धरनी। इन कइ नाथ सहज जड+ करनी।।' इनमें समुद्र जल है। इसलिए स्वभावत: जड+ होने के कारण उसने श्रीराम के अनुरोध की अनदेखी की। इसके बाद समुद्र ने दूसरी बात कही 'ढोल गंवार सूद्र पसु नारी। सकल ताड+ ना के अधिकारी'। समुद्र का यह कथन यहां असंगत लगता

है। क्योंकि समुद्र न तो ढोल है, न शूद्र है न पशु है, न नारी है। समुद्र को गंवार भी नहीं कहा जा सकता, क्योंकि वह रघुकुल का कुलगुरू है- 'प्रभु तुम्हार कुलगुरू जलधि'। जब समुद्र इनमे से कोई नहीं है, तो उसके इस कथन की सार्थकता क्या है ? अर्थात् समुद्र का यह कथन यहां अप्रासांगिक है। ऐसा लगता है कि गोस्वामी जी के स्वर्गवास के उपरान्त मानस की प्रतिलिपि करते समय किसी कारणवश यह अर्द्धाली चिपका दी गई होगी। इसके स्थान पर जो अर्द्धाली रही होगी वह कुछ ऐसी होगी- 'कपटी कुटिल कुमति उरगारी। सकल ताड+ ना के अधिकारी।।- आश्चर्य इस बात का है कि मानस के टीकाकारों ने इस पंक्ति पर इस दृष्टि से कभी विचार ही नहीं किया। अब तो कुछ विद्वानों ने शोध करके यह निष्कर्ष निकाला है कि तुलसीदास ने यह चौपाई इस प्रकार लिखी होगी। Þढोल गवांर छुद्र पशु रारी। सकल ताड+ ना के अधिकारी। और सभी का प्रयास यह रहा कि वे इसी चौपाई को तर्कसंगत बताते रहे। यह अर्द्धाली इतनी सरल और स्पष्ट है कि इसकी व्याख्या की कोई आवश्यकता ही नहीं। यह प्रक्षिप्त है, ऐसा मानने के अलावा और कोई रास्ता नहीं।

इसी प्रकार एक और उदाहरण अरण्यकाण्ड की वह चौपाई है जिस पर विवाद उठता रहता है-

'सापत ताड+ त परूष कहंता। बिप्र पूज्य अस मानहिं संता।।

पूजिहि बिप्र सकल गुण हीना। सूद्र न गुन गन ग्यान प्रबीना।।'

गोस्वामी तुलसीदास ऐसी तर्कहीन बात कैसे कह सकते है। उन्होंने उत्तरकाण्ड में ब्राह्मण के लिए यहां तक कहा-

'बिप्र निरक्षर लोलुप कामी। अनाचार सठ वृषली स्वामी।।'

इसी प्रकार के कई अन्य उदारहण दिये जा सकते है, जहां गोस्वामी जी ने स्वयं ब्राह्मणों की आलोचना की है। गोस्वामी जी ब्राह्मणों के बारे में तर्कहीन बात कर ही नहीं सकते। उनकी रामकथा क्या है? एक क्षत्रिय राजकुमार ने रावण जैसे सम्पन्न ब्राह्मणकुल का नाश कर दिया। अगर अरण्यकाण्ड की उपरोक्त चौपाई सही है तो राम द्वारा रावणबध का पूरा कार्य शास्त्र विरूद्ध हो जायेगा। सम्भवत: यही कारण है कि हिन्दी के प्रख्यात समालोचक और तुलसी साहित्य के मर्मज्ञ विद्वान आचार्य सूर्य प्रसाद दीक्षित भी यह मानते है कि 'पूजहि बिप्र सकल गुण हीना'; जैसी चौपाइयां प्रक्षिप्त है।

सीता की अग्नि परीक्षा भी एक प्रसंग है, जिसे लेकर भगवान श्रीराम की आलोचना की जाती है। रामचरितमानस के उत्तरकाण्ड में मानस के प्रसंगों की जो सूची दी गई है, जिसका उल्लेख ऊपर किया जा चुका है, उसमें सीता की अग्नि परीक्षा का कोई उल्लेख नहीं है। इससे ऐसा लगता है

कि सीता की अग्नि परीक्षा वाला अंश गोस्वामी जी का लिखा हुआ नहीं है। रामकथा के विशेषज्ञों ने भी सीता की अग्नि परीक्षा को पूरी तरह प्रक्षिप्त माना हैं। महाभारत के रामोपाख्यान में भी सीता की अग्नि परीक्षा का कोई उल्लेख नहीं है। रामकथा के मर्मज्ञ **विद्वान फादर कामिल बुल्के** और बेवर जैसे पाश्चात्य विद्वान भी इस प्रसंग को प्रक्षिप्त मानते है-

Þसीता की अग्नि परीक्षा के प्रक्षिप्त होने में बहुत कम सन्देह है। वाल्मीकि रामायण के युद्धकाण्ड के अन्त में दो बार समस्त रामकथा का सिंहावलोकन प्रस्तुत किया गया है, किन्तु अग्नि परीक्षा का उल्लेख नहीं है। बालकाण्ड की दोनों अनुक्रमणिकाओं का प्रमाणिक संस्करण भी अग्नि-परीक्षा के विषय में मौन है।ß(पृष्ठ- ४२४ रामकथा का विकास कामिल बुल्के) रामचरितमानस मुख्यत: वाल्मीकि रामायण पर आधारित है और जब इसमें ही अग्नि परीक्षा का उल्लेख नहीं है, तो रामचरितमानस में भी इसे प्रक्षिप्त मानने के अलावा अन्य कोई रास्ता नहीं है। वैसे राम और सीता के सम्बन्ध में तुलसीदास ने पहले ही कहा है- 'गिरा अरथ जल बीचि राम कहिअत भिन्न भिन्न।' जिस श्रीराम ने गौतम ऋषि की पत्नी अहिल्या का उद्धार क्षणमात्र में कर दिया, जिसने धोखे से ही सही, इन्द्र के साथ सहवास भी किया था। वे ही श्रीराम अपनी प्राणवल्लभा पत्नी सीता के साथ इतना कठोर कैसे हो सकते थे, कि उनकी वे अग्नि परीक्षा लें, तो लगता है कि अग्नि परीक्षा का प्रसंग मध्यकालीन युग की सामजिक मान्यताओं से प्रभावित होकर किसी ने जोड+ दिया होगा।''

मानस का एक और प्रसंग बड+ ा विचित्र लगता है। वह प्रसंग है- 'बालि वध' का। मानस के अधिकांश संस्करणों में ऐसा उल्लेख मिलता है कि श्रीराम ने छिप कर बालि का वध किया था। यह बात तर्क की कसौटी पर खरी नहीं उतरती। मर्यादा पुरुषोत्तम रघुकुल शिरोमणि ओर ब्रह्म के अवतार श्रीराम, मर्यादा का इस प्रकार उल्लंघन क्यों करेंगे। आदि रामायण में ऐसा उल्लेख है कि श्रीराम ने बालि को द्वंद्व युद्ध में मारा था। महाभारत के रामोपाख्यान, तिब्बती और खोतानी रामायणों में भी ऐसा ही वर्णन मिलता है। प्रचलित वाल्मीकि रामायण के तीनों ही पाठों में बालि और राम के द्वंद्व युद्ध का उल्लेख है। (रामकथा का विकास- कामिल बुल्के- पृष्ठ-३८०) गोस्वामी जी ने किष्किन्धा काण्ड में लिखा है कि बालि के प्रश्न के उत्तर में भगवान श्रीराम ने कहा 'मूढ+ तोहि अतिसय अभिमाना। नारि सिखावन करसि न काना।। मम भुजबल आश्रित तेहि जानी। मारा चहहि अधम अभिमानी।।' अर्थात् जिस सुग्रीव पर राम की कृपा हो उसे कौन मार सकता है। इसके साथ ही श्रीराम ने बालि वध का दूसरा कारण भी दिया-

'अनुज वधू भगिनी सुत नारी। सुन सठ कन्या सम ये चारी।

इन्हहिं कुदृष्टि बिलोकहि जेई। ताहि बधे कछु पाप न होई।।'

श्रीराम के उत्तर के इन दोनों अंशों को देखने से यही निष्कर्ष निकाला जाना चाहिए कि भगवान श्रीराम ने ही बालि का वध द्वन्द्व युद्ध में किया होगा।

मानस के लंकाकाण्ड में एक प्रसंग है- लक्ष्मण शक्तिबाण लगने से मूर्छित हैं। हनुमान जी बैद्य के कहने पर संजीवनी बूटी लेने जाते है, लौटते समय अयोध्या के ऊपर से गुजरते समय भरत ने उन्हें कोई राक्षस समझ कर बाण से मार कर जमीन पर गिरा दिया। यह भरत और हनुमान जी की पहली मुलाकात थी। इसके पश्चात उत्तरकाण्ड में श्रीराम की सलाह पर हनुमान जी भरत को श्रीराम के आने की सूचना देने के लिए जाते है। उस समय हनुमान की पुन: भरत से मुलाकात होती है। इस मुलाकात का मानस में जिस तरह वर्णन किया गया है, उससे ऐसा नहीं लगता कि भरत और हनुमान की भेंट पहले भी हुई होगी। इन दोनों ही प्रसंगों का उल्लेख उत्तरकाण्ड में वर्णित रामकथा के प्रसंगों की सूची में भी नहीं है। इससे यह अनुमान लगाया जाता है कि लक्ष्मण को शक्तिबाण लगने का प्रसंग प्रक्षिप्त है। वैसे भी हनुमान जी से पहली बार भेंट होने के उपरान्त जब भरत को पता लगा कि श्रीराम संकट में है और लक्ष्मण को शक्तिबाण लग गया है,ऐसी विषम परिस्थिति में पहले चाहे जैसे भी प्रतिज्ञा की हो, भरत राम की मदद के लिए अवश्य जाते। परन्तु उन्होंने ऐसा नहीं किया। इसलिए यह पूरा प्रसंग प्रक्षिप्त लगता है।

रामचरितमानस में प्रक्षिप्त अंशों की चर्चा करते समय यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि गोस्वामी जी द्वारा रचित मानस में कुल कितनी चौपाइयां रही होंगी। इस सम्बन्ध में उत्तरकाण्ड के अन्त में लिखित वह छन्द विचारणीय है जिसमें कहा गया है-

'सतपंच चौपाई मनोहर जानि जो नर उर धरै। लखनऊ के नवल किशोर प्रेस द्वारा प्रकाशित रामायण में इसका अर्थ ५१०० चौपाइयां किया गया हैं। सनातन धर्म परिषद के अध्यक्ष डॉ० स्वामी भगवदाचार्य इसका अर्थ ३५ करते हैं और वे उत्तरकाण्ड के- 'प्रथमहिं अति अनुराग भवानी' से लेकर सोरठा-६८ तक की चौपाइयों की ओर संकेत करते हैं। हालांकि स्वामी जी द्वारा उल्लिखित चौपाइयों की संख्या केवल १७.५ होती है। परन्तु अगर दो अद्धालियों की एक चौपाई मान ली जाये तो स्वामी जी का कथन युक्तिसंगत लगता है। वैसे तो चौपाई में चार पद होते है, लेकिन व्यवहार में लोग दो पदों की चौपाई को भी चौपाई मान लेते हैं। वाराणसी के एक प्रतिष्ठित अखबार (सन्मार्ग) ने ४ अप्रैल, २००५ के सम्पादकीय में सतपंच का अर्थ उन चौपाइयों से किया है जो उत्तरकाण्ड के- 'मेरू शिखर बट छाया मुनि लोमस आसीन' से लेकर मानस के अन्त तक की है। इसमें दो सौ

इकहत्तर चौपाइयां, तीन श्लोक, तीन छन्द, दो सोरठा और अड+ तीस दोहे आते हैं। विद्वान संपादक ने सतपंच का यह अर्थ किस आधार पर किया है, वही जानें।

वास्तव में तुलसीदास ने सत शब्द का प्रयोग मानस में अन्यत्र एक सौ ही के अर्थ में किया है। अत: सतपंच का अर्थ एक सौ पांच या पांच सौ ही होना चाहिए। अब प्रश्न यह उठता है कि ये चौपाइयां कौन सी है ? अगर नवल किशोर प्रेस द्वारा प्रकाशित रामायण की टीका पर ध्यान दिया जाये तो सतपंच का अर्थ मानस में चौपाइयों की संख्या से ही है। परन्तु प्रश्न यह है कि क्या गोस्वामी जी द्वारा रचित मानस में केवल पांच सौ ही चौपाइयां रही होंगी। यह सही नहीं लगता। कुछ लोग दो दोहों या सोरठों के बीच की चौपाइयों के समूह को एक तरंग मानते हुए उन्हें एक चौपाई मानकर गणना करते हैं। लवकुश काण्ड को निकालने के उपरान्त मानस में कुल तरंगों की संख्या १०७४ है। अगर मूल मानस इस प्रकार की पांच सौ तरंगों का था तो वर्तमान में उपलब्ध मानस का आधे से अधिक भाग प्रक्षिप्त हो जायेगा। वैसे तो यह बात बड+ी अटपटी लगती है, किन्तु पांच सौ तरंगों में मानस की कथा कही जा सकती है। जो भी हो, यह अनुसंधान का विषय है।

निष्कर्ष

रामचरितमानस गंगा की तरह है। इस तरह का वर्णन गोस्वामी जी ने बार-बार किया है। जिस प्रकार गंगा में मिलने वाली अन्य नदियों का जल भी गंगा में मिलकर गंगाजल हो जाता है, उसी प्रकार अगर गोस्वामी जी द्वारा रचित मानस में बाद में कुछ लोगों ने कुछ पंक्तियां जोड+ दीं तो उन्हें भी रामचरितमानस का हिस्सा माना जाना चाहिए। आज लोक व्यवहार में ऐसा हो भी रहा है। परन्तु गंगाजल में भी अगर कुछ खर-पतवार आ जाते है, तो उन्हें अलग करके ही गंगाजल ग्रहण किया जाता है।

रामचरितमानस में कुछ सूक्तियां जैसे- 'ढोल गंवार सूद्र पशु नारी' 'पूजहिं विप्र सकल गुणहीना', 'जदपि जोाषिता नहिं अधिकारी' काने खोरे कूबरे, कुटिल कुचाली जानि', 'अवगुन आठ सदा उर रहही' ऐसी सूक्तियां है जो गंगाजल में खर-पतवार की तरह है। वर्तमान परिस्थिति में इन्हें अलग करके ही गंगाजल से आचमन किया जाना चाहिए। इन चौपाइयों का गोस्वामी तुलसीदास के जीवन-दर्शन से कोई मेल नहीं खाता। वे स्पष्ट कहते है- 'कीरति भनिति भूति भलि सोई। सुरसरि सम सब करि हित होई।।' अगर मानस की उपरोक्त सूक्तियों से समाज के किसी वर्ग का दिल दुखता हो तो गोस्वामी जी की रचना सुरसरि के समान सब के लिए हितकारी कैसे हो सकती है।

किंवदन्तियों का कोई वैज्ञानिक आधार नहीं होता। परन्तु वे किसी तथ्य की ओर अवश्य संकेत करती हैं। किंवदन्ती है कि रामचरितमानस पर स्वयं भगवान शंकर ने 'सत्यम् शिवम् सुन्दरम्' लिखकर सही किया था। जिस रचना को स्वयं ईश्वर ने अपना आशीर्वाद दिया हो, उसमें मनुष्य-मनुष्य के बीच भेदभाव कैसे हो सकता है। गोस्वामी जी तो समस्त चराचर जगत को राममय मानते हैं। वे संत और असंत दोनों की वन्दना करते हैं। वै वैष्णव संत है। वे अप्रिय सत्य भी क्यों कहेंगे।

रामचरितमानस को विद्वान लोग कालजयी रचना कहते हैं। मानस के उपरोक्त विवादास्पद प्रसंगों की जब चर्चा होती है तो कुछ विद्वान कहते है कि तुलसीदास की रचना को उनके युग के परिवेश के परिप्रेक्ष्य में देखा जाना चाहिए। यह सच है कि कवि की रचना पर उसके समय का प्रभाव अवश्यमेव पड+ ता है परन्तु अगर किसी रचना में ऐसे सिद्धान्त और आदर्श हैं जो किसी कालखण्ड विशेष में ही लागू होते है तो उस रचना को कालजयी रचना नहीं कहा जा सकता। रामचरितमानस नि:सन्देह एक कालजयी रचना है। इसमें वर्णित आदर्श और सिद्धान्त तब तक लागू होंगे जब तक इस पृथ्वी पर पर्वत मौजूद हैं, नदियों में पानी बह रहा है, आकाश में सूर्य और चन्द्रमा प्रकाशमान हो रहे हैं। परन्तु इसका तात्पर्य यह नहीं, कि मानस में यदि बाद में किसी ने कुछ जोड+ दिया हो तो उसे भी कालजयी मान लिया जाय। इस बात को ध्यान में रखकर राष्ट्र और समाज के व्यापक हित में तुलसीदास के रामचरितमानस का मूल्यांकन और पाठ निर्धारण किया जाना चाहिए।

लवकुश काण्ड को निकाल देने के बाद रामचरितमानरस में १०३ चौपाइयां ऐसी हैं जिनमें केवल दो-दो अर्द्धालियां है। चार हजार तीन सौ से अधिक चौपाइयों में से केवल एक सौ तीन चौपाइयों में ऐसा होना आश्चर्यजनक है। गोस्वामी तुलसीदास महान साहित्यकार थे, उन्हें काव्य शास्त्र और पिंगल का पूरा ज्ञान था। इसलिए यह विश्वास किया जाना चाहिए कि वे दो अर्द्धालियों की चौपाई नहीं लिखेंगे। इसी विश्वास के आधार पर मानस के एक संस्करण में एक सौ तीन में से अधिकांश चौपाइयों को शुद्ध करके चार अर्द्धालियों वाली चौपाई बना दी गई है।

मानस के पाठ संशोधन के क्रम में एक सत्य घटना का उल्लेख करना आवश्यक है। लखनऊ के गोमती नगर क्षेत्र में महिलाओं की एक संस्था के प्रतिनिधि ने मुझे बताया कि महिलायें प्रत्येक मंगलवार को किसी न किसी सदस्य के घर पर सुन्दरकाण्ड का पाठ आयोजित करती हैं। इस क्रम में जब 'ढोल गंवार शुद्र पशु नारी' चौपाई आती है तो उसे वे लोग नहीं पढ+ ती हैं, क्योंकि उन लोगों का यह विश्वास है कि यह चौपाई तुलसीदास की लिखी हुई नहीं हो सकती। उपरोक्त चौपाई को सही ठहराने के लिए सैकड+ों मानस विशेषज्ञों ने हजारों पृष्ठों के बड+े बड+े ग्रन्थ लिखे हैं। इसके उपरान्त भी आम आदमी उनकी बात से सहमत नहीं हो सका है। महिलाओं द्वारा इस चौपाई का नहीं पढ+ा जाना इस बात का संकेत है। मानस विशेषज्ञों को इस पर गहराई से विचार विमर्श करना

चाहिए कि वे अब तक इस चौपाई को सही क्यों ठहराते रहे हैं ? वे ऐसा क्यों नहीं सोचते कि यह चौपाई प्रक्षिप्त हो सकती है।

गीता प्रेस गोरखपुर द्वारा मझोले साइज में प्रकाशित रामचरितमानस के संवत् १९९९ की भूमिका में कहा गया है Þपहले तो आशा थी कि भगवान की कृपा से सम्भवत: कहीं से गोस्वामी जी के हाथ की लिखी हुई कोई प्रामाणिक प्रति मिल जाये, जिससे शुद्ध से शुद्ध पाठ मानस प्रेमियों के पास पहुंचाया जा सके, परन्तु जब यह आशा जल्दी पूरी होती नहीं देखी गई तो (कल्याण) के मानस अंक के पाठ को ही एक बार फिर से देखकर तथा मानस के कतिपय मर्मज्ञों का परामर्श लेकर उसी में आवश्यकतानुसार यत्र-तत्र कुछ संशोधन करके छपने को दे दिया गया है।ß इस से भी यह स्पष्ट है कि रामचरितमानस की जो प्रतियां उपलब्ध हैं उनमें संशोधन की आवश्यकता है। इससे भी यह साबित होता है कि मानस के विभिन्न संस्करणों में जो पाठ दिये गये हैं, उनमें प्रक्षिप्त अंश हो सकते हैं। यह बात गीताप्रेस द्वारा प्रकाशित रामचरितमानस पर भी लागू होती है। कहने का तात्पर्य यह है कि रामचरितमानस के जितने भी संस्करण इस समय उपलब्ध है, उनमें प्रक्षिप्त अंश अवश्य है। चित्रकूट निवासी जगदगुरू रामभद्राचार्य ने रामचरितमानस का संपादन किया है,उसमें उन्होंने तीन हजार शब्दों को बदल दिया है। रामभद्राचार्य विश्व प्रसिद्ध पूज्य संत है। वे उनके ही नाम पर स्थापित जगदगुरू रामभद्राचार्य विकलांग विश्वविद्यालय के आजीवन कुलाधिपति है। उन्हें रामचरितमानस कन्ठस्थ है। पुस्तक की भूमिका में उन्होंने कहा है कि उन्होंने रामायण के सत्ताईस संस्करणों का तुलनात्मक अध्ययन करने के बाद रामचरितमानस में तीन हजार शब्दों को बदला है। वे इस कार्य को संशोधन नहीं बल्कि संपादन कहते हैं। इतने बड+ा मानस के विद्वान के इस कार्य से भी यही संकेत मिलता है कि रामचरितमानस में पाठभेद तो है ही, प्रक्षिप्त अंश भी कम नहीं है।

अब मानस के उन प्रसंगों का उल्लेख किया जाता है जो गोस्वामी जी के व्यकितत्व और जीवन दर्शन से मेल नहीं खाते। साथ ही उन चौपाइयों पर भी विचार किया जाना चाहिए जो अप्रासांगिक लगती हैं।

बालकाण्ड

मानस के प्रारम्भ में वंदना का पद है-

‘बंदउँ गुरू पद कंज कृपा सिंधु नररूप हरि।

महामोह तम पुंज जासु वचन रवि कर निकर।।’

वंदना के इस पद में हरि के स्थान पर 'हर' अधिक उचित प्रतीत होता हैं। कारण इसके पहले श्लोक में गोस्वामी जी ने गुरू की तुलना शंकर से की है, न कि विष्णु से-

'वन्दे बोधमयं नित्यं गुरुं शंकररूपिणम्।

यमाश्रितो हि वक्रोपि चन्द्रः सर्वत्र वन्द्यते।।'

इसके अतिरिक्त यह विचारणीय है कि इस सोरठे के ऊपर चार और पद हैं, जो अकारान्त शब्दों से ही पूरे होते है जैसे- बदन, सदन, गहन, दहन, नयन, शयन, अयन, मयन तथा निकर। निकर के साथ हर शब्द अधिक काव्यमय एवं उपयुक्त लगता है, न कि हरि। परन्तु मानस के कुछ संस्करणों में हरि शब्द लिखा मिलता है, जबकि उपरोक्त विवरण से हर शब्द ही अधिक उचित लगता है।

ऐसा लगता है कि गोस्वामी जी के गुरू का नाम था- नरहरिदास। इस तथ्य को ध्यान में रखकर ही कुछ संस्करणों में हर के स्थान पर हरि शब्द लिखा गया है, (४) परन्तु यह उचित नहीं लगता। मानस में अन्यत्र भी गोस्वामी जी ने भगवान शंकर को ही गुरू माना है। इस दृष्टि से यहां हर शब्द ही होना चाहिए।

रामचरितमानस के विभिन्न संस्करणों को देखने से ऐसा लगता है कि कुछ चौपाइयों का स्थान बदल दिया गया है। जैसा कि पहले कहा जा चुका है, कि गोस्वामी जी की रचना में छन्द-दोष की तो कल्पना ही नहीं की जा सकती। गोस्वामी जी को भलीभांति पता था कि चौपाई चार चरणों का छन्द है, फिर वे दो चरणों या दो अद्धालियों की चौपाई क्यों लिखेंगे। इस दृष्टि से भी बालकाण्ड का गहन अध्ययन करने के बाद अगर कुछ चौपाइयों का स्थान बदल दिया जाय तो कई स्थानों पर छन्द-दोष दूर जो जाता है। उदाहरण के तौर पर बालकाण्ड दोहा १ के बाद की दो अद्धालियों 'बंदउँ प्रथम महीसुर चरना। मोह जनित संसय सब हरना।।' को यहां से उठाकर दोहा ३ (ख) के बाद रख दें तो दोनों तरंगों का छन्द-दोष दूर हो जाता है। दोनों ही तरंगों में चौपाइयां चार-चार अर्द्धाली की हो जाती हैं। इसी प्रकार दोहा ४ के बाद की दो अद्धालियों 'भल अनभल निज निज करतूती। लहत सुजस अपलोक विभूति।।' को दोहा ५ के नीचे रखने से दोनों तरंगें दोष रहित हो जाती हैं। इसी प्रकार दोहा ६ के ऊपर की दो अद्धालियों 'कबित विवेक एक नहिं मोरे। सत्य कहउं लिखि कागद कोरे।।' को दोहा १० (ख) के बाद रख दें और दोहा १३ के बाद की दो अद्धालियों 'कीरति भनिति भूति भल सोई। सुरसरि सम सब कहँ हित होई।।' को दोहा १५ के ऊपर रख देने से संबंधित तरंगों का छन्द दोष दूर हो जाता है। वे तरंगें चार-चार अद्धाली की बन जाती हैं तथा कथा के प्रवाह में कोई व्यवधान नहीं आता है। एक अन्य उदाहरण है- दोहा ३७ के ऊपर की दो अद्धालियों- 'औरउ कथा अनेक प्रसंगा।

तेई सुक पिक बहुबरन बिहंगा' को दोहा-३७ के बाद पहली चौपाई के बाद रखा जा सकता है। इससे संबंधित तरंगों का छन्द-दोष दूर हो जाता है ओर कथा के प्रवाह में कोई व्यवधान नहीं आता है।

बालकाण्ड की कुछ तरंगों में आधी आधी चौपाइयां है, जिन्हें निश्चित रूप से बाद में किसी अन्य कवि ने जोड+ा होगा, क्योंकि गोस्वामी तुलसीदास इस प्रकार की भूल नहीं कर सकते। वे बहुत महान, कुशल और विज्ञ कवि थे। इन स्थानों की आधी चौपाइयों को मानस से निकाल देना ही उचित होगा। इससे मानस जैसे महान ग्रन्थ का छन्द दोष दूर हो जायेगा और सबसे बड+ी बात यह है कि इन अर्द्धालियों के निकाले जाने के बाद भी मानस के कथा प्रवाह में कोई व्यवधान नहीं आता है। इस प्रकार के उदाहरण निम्निलिखित है :-

दोहा २७/२८ (क) के बीच की तरंगें साढ+े पांच चौपाइयों की हैं। इसमें या तो दो अर्द्धालियां लुप्त हो गई हैं या बाद में जोड+ी गई होंगी, जिन्हें पूरा करना उचित कार्य लगता है।

बालकाण्ड की निम्नलिखित चौपाइयों को निकाला जा सकता है। इन्हें निकालने से मानस के कथा प्रसंग और विषय-वस्तु में कोई अन्तर नहीं आयेगा।

कहउँ कथा सोइ सुखद सुहाई। सादर सुनहु सुजन मन लाई। दोहा ३४/१३

आयुस करहिं सकल भयभीता। नवहिं आइ नित चरनविनीता। दोहा १८१/१३

गगन ब्रह्म बानी सुनि काना। तुरत फिरे सुर हृदय जुड+ाना। दोहा १८७/८

बालचरित हरि बहुबिधि कीन्हा। अति अनंद दासन्ह कहँ दीन्हा। दोहा २०३/१

इसी प्रकार दोहा ५३ के ऊपर एक अर्द्धाली 'देखहु नारि सुभाव प्रभाऊ' के स्थान पर 'देखन चह रघुबीरा प्रभाऊ' तथा दोहा ११० में पहली अर्द्धाली 'जद्यपि जोषिता नहिं अधिकारी' में जोषिता के स्थान पर 'नाथ मैं', दोहा १२० (क) के ऊपर जदपि सहज जड+ नारि अयानी'; के स्थान पर 'जद्यपि महा मतिमंद अयानी' पाठ अधिक उपयुक्त प्रतीत होते हैं।

अयोध्याकाण्ड

रामचरितमानस का आयोध्याकाण्ड सबसे व्यवस्थित काण्ड है। साहित्य की दृष्टि से, पिंगल शास्त्र की दृष्टि से और भक्ति की दृष्टि से, सभी दृष्टियों से यह एक सुव्यवस्थित काण्ड है। गोस्वामी जी ने इस काण्ड में चार चौपाइयों के बाद एक दोहा देने की व्यवस्था का पूरी तरह पालन किया है। इसी से ऐसा लगता है कि सम्पूर्ण रामचरितमानस इसी शैली में लिखा गया होगा।

अयोध्याकाण्ड में कुल १३०६ चौपाइयां हैं, जिनमें केवल ९ सोरठा संख्या २०१ के नीचे की दो अर्द्धालियों को दोहा १८४ के नीचे की अर्द्धालियों के साथ जोड+ा जा सकता है। ऐसा करने से दोनों चौपाई समूहों का, जिन्हें हम तरंग कहते हैं, छन्द-शास्त्र की दृष्टि से दोष समाप्त हो जाता है। दोहा २८ के नीचे साढ+े चार चौपाइयों की तरंग है जिसमें दो अर्द्धालियां निश्चित रूप से जोड+ी गई होंगी। शेष ६ तरंगें साढ+े तीन चौपाइयों की हैं। इस संबंध में इतना ही कहा जा सकता है कि इन तरंगों की दो-दो अर्द्धालियां मानस की प्रतिलिपि करने वालों की भूल से छूट गई होंगी। चूंकि रामचरितमानस एक धार्मिक ग्रन्थ भी है और धर्म के क्षेत्र में तर्क नहीं, आस्था प्रधान होती है। अतः दो-दो अर्द्धालियों की चौपाई होने के उपरान्त भी श्रद्धालुओं को कोई असुविधा नहीं होती। साढ+े तीन चौपाइयों वाली तरंगों का विवरण इस प्रकार है :-

दोहा ४ के बाद, दोहा ७ के बाद, दोहा १९ के बाद, दोहा ६३ के बाद, दोहा १७२ के बाद, दोहा २१७ के बाद और दोहा २८ के बाद साढ+े चार चौपाइयों की तरंग है , जिसमें से निम्नलिखित दो अर्द्धालियां निकाली जा सकती हैं :-

मोर मनोरथु सुरतरु फूला। फरत करिनि जिमि हतेउ समूला।।

इसके अतिरिक्त दोहा १८४ के नीचे और सोरठा २०१ के नीचे वाली तरंग से निम्नलिखित दो अर्द्धालियों को रखा जा सकता है।

एक सराहहिं भरत सनेहू। कोउ कह नृपति निबाहेउ नेहू।

इससे इन दोनों तरंगों का छन्द दोष दूर हो जाता है। इस प्रकार रामचरितमानस के अयोध्याकाण्ड में तुलसीदास जी की अद्‌भुत प्रतिभा का दर्शन होता हैं। इस काण्ड में केवल दोहा २८ के नीचे की दो अर्द्धालियां निकाली जा सकती हैं। अन्य सभी तरंगें निर्दोष हैं। अयोध्याकाण्ड हर दृष्टि से आदर्श काण्ड है। ईश्वर की कृपा से ऐसा लगता है, कि गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित मानस की मूल प्रति इसमें सुरक्षित है, जो अन्य काण्डों में देखने को नहीं मिलती है।

अरण्यकाण्ड

रामचरितमानस के अरण्यकाण्ड का जो पाठ विभिन्न संस्करणों में उपलब्ध है उसमें बहुत सी ऐसी चौपाइयां है, जो गोस्वामी तुलसीदास की विचारधारा से मेल नहीं खाती हैं। उदाहरण के तौर पर सीता जी और अनुसुइया के वार्तालाप से संबंधित दोहा ४ के बाद की चौपाइयां :-

बृद्ध रोगबस जड+ धनहीना। अंध बधिर क्रोधी अति दीना।।

ऐसेहु पति कर किएं अपमाना। नारि पाव जमपुर दुख नाना।।

एकइ धर्म एक ब्रत नेमा। काय बचन मन पति पद प्रेमा।।

जग पतिव्रता चारि बिधि अहहीं। बेद पुरान संत सब कहहीं।।

उत्तम के अस बस मन माही। सपनेहुँ आन पुरूष जग नाहीं।।

मध्यम परपति देखइ कैसें। भ्राता पिता पुत्र निज जैसे।।

धर्म बिचारि समुझि कुल रहई। सो निकृष्ट त्रिय श्रुति अस कहई।।

बिनु अवसर भय तें रह जोई। जानेहु अधम नारि जग सोई।।

पति बंचक परपति रति करई। रौरव नरक कलप सत परई।।

छन सुख लागि जनम सत कोटी। दुख न समुझ तेहि सम को खोटी।।

पति प्रतिकूल जनम जहँ जाई। बिधवा होई पाइ तरूनाई।।

सहज अपावनि नारि पति सेवत सुभ गति लहइ।

जसु गावत श्रुति चारि अजहुँ तुलसिका हरिहि प्रिय।।

इन पंक्तियों को निकाल देने से यह तरंग चार चौपाइयों की हो जाती है। इसके अतिरिक्त महिलाओं के सम्बन्ध में इस तरह की तर्कहीन बात कहने का गोस्वामी जी के खिलाफ आरोप भी समाप्त हो जाता है। वैसे भी स्वाभाविक यही लगता है कि गोस्वामी जी के विचार महिलाओं के बारे में ऐसे कभी नहीं हो सकते।

इसी प्रकार का एक प्रसंग अरण्यकाण्ड में नारद और श्रीराम के संवाद का वह अंश है, जो दोहा संख्या ४३ से लेकर दोहा संख्या ४४ तक मिलता है। वह इस प्रकार है :-

दोहा काम क्रोध लोभादि मद प्रबल मोह कै धारि।

तिन्ह महँ अति दारून दुखद मायारूपी नारि। दोहा ४३

सुन मुनिकह पुरान श्रुति संता। मोह बिपिन कहुँ नारि बसंता।।

जप तप नेम जलाश्रय झारी। होइ ग्रीषम सोखइ सब नारी।।

काम क्रोध मद मत्सर भेका। इन्हहि हरषप्रद बरपइ एका।।

दुर्बासना कुमुद समुदाइ। तिन्ह कहँ सरद सदा सुखदाई।।

धर्म सकल सरसीरू वृंदा। होइ हिम तिन्हहि दहइ सुख मंदा।।

पुनि ममता जवास बहुताई। पलुहइ नारि सिसिर रितु पाई।।

पाप उलूक निकर सुखकारी। नारि निबिड+ रजनी अंधिआरी।।

बुधि बल सील सत्य सब मीना। बनसी सम त्रिय कहहिं प्रबीना।।

दोहा अवगुन मूल सूल प्रद प्रमदा सब दुख खानि।

ताते कीन्ह निवारन मुनि मैं यह जिय जानि।। दोहा ४४

दीप शिखा सम जुबति तन मन जनि होसि पतंग।

भजहिं राम तजि काम मद करहि सदा सतसंग।। दोहा ४६ (ख)

भगवान राम के मुख से इस प्रकार की बातें गोस्वामी तुलसीदास नहीं कहला सकते हैं। ऐसा लगता है कि इन पंक्तियों को बाद में किसी और तुलसीदास ने जोड+ ा होगा। यहां यह भी उल्लेख करना आवश्यक है कि कुछ लोग यह कहते हैं कि रामचरितमानस में किसी वर्ग विशेष की मर्यादा के खिलाफ जो बातें कहीं गई हैं वे मानस के आदर्श पात्रों ने नहीं कहीं हैं, बल्कि निम्न कोटि के पात्रों ने कही हैं। ऐसे सज्जनों को इस प्रसंग पर विचार करना चाहिए कि उपरोक्त बातें भगवान राम के मुख से कहलाई गई हैं और उनसे बड+ ा आदर्श पात्र मानस में भला और कौन हो सकता है।

अरण्यकाण्ड में इसी प्रकार का एक प्रसंग दोहा ३३ के नीचे है जो कि इस प्रकार है +-

सापत ताड+ त परूष कहंता। बिप्र पूज्य अस गावहिं संता।।

पुजिअ बिप्र सील गुन हीना। सूद्र न गुन गन गयान प्रबीना।।

ये बातें भी भगवान राम के मुख से कहलायी गई है। क्या भगवान राम इस तरह की बात कह सकते हैं ? और अगर यह शास्त्र सम्मत है, तो पूरी रामकथा शास्त्र विरूद्ध हो जाती है, क्योंकि रामकथा का मेरूदण्ड क्या है ? भगवान राम ने जो एक क्षत्रिय राजकुमार थे, रावण का सपरिवार वध किया, जो उत्तम कुल का ब्राह्मण था। अगर ब्राह्मण चाहे जो भी कुकर्म करे, पाप नहीं होता है तो भगवान राम ने रावण का वध क्यों किया। इससे स्पष्ट है कि ये चौपाइयां तुलसीदास जैसे महान कवि ओर संत की लिखी हुई नहीं हो सकतीं। इन्हें निश्चित रूप से बाद के किसी जातिवादी तुलसी ने

लिखा होगा। इस चौपाई को निकाल देने के बाद संबंधित तरंग भी चार चौपाइयों की रह जाती है, जो सर्वथा श्रेय है।

इसके अतिरिक्त पिंगल शास्त्र की दृष्टि से छन्द संबंधी दोष को दूर करने के लिए निम्नलिखित अर्द्धालियां भी निकाली जा सकती हैं :-

अतुलित भुज प्रताप बल धामा। कलि मत बिपुल बिभंजन नामा। दोहा १० के नीचे

राम अनुज समकेत बैदेही। निस दिनु दउेव जपत हहु जेही॥ दोहा ११ के नीचे

भ्राता पिता पुत्र उरगारी। पुरूष मनोहर निरखत नारी॥

होइ बिकल सक मनहि न रोकी। जिमि रबि मनि द्रब रबिहि बिलोकी॥

(दोहा १७ के नीचे)

नाना बाहन नानाकारा। नानायुध धर घोर अपारा॥ दोहा १७ के नीचे

जब रघुनाथ समर रिपु जीते। सुर नर मुनि सब के भय बीते॥

(दोहा-ख के नीचे)

जोगि बृंद दुरलभ गति जोई। तो कहुँ आज सुलभ भइ सोई॥

(दोहा ३५ के नीचे)

दोहा- जाति हीन अघ जन्म महि मुक्त कीन्हि अस नारि।

महामंद मन सुख चहसि ऐसे प्रभुहि बिसारि॥ (दोहा ३६)

राखिअ नारि जदपि उर माही। जुबती सास्त्र नृपति बस नाही॥

देखहु तात बसंत सुहावा। प्रिया हीन मोहि भय उपजावा॥

(दोहा ३६ के नीचे)

कुहू कुहू कोकिल धुन करही। सुनि रब सरस ध्यान मुनि टरही॥

(दोहा ३९-ख के नीचे)

बैठे परम प्रसन्न कृपाला। कहत अनुज सन कथा रसाला॥

(दोहा ४० के नीचे)

जे न भजहिं अस प्रभु भ्रम त्यागी। ग्यान रंक नर मंद अभागी॥

(दोहा ४४ के नीचे)

उपरेक्त अर्द्धालियों को निकाल देने के बाद सम्बन्धित तरंगें पिंगल शास्त्र की दृष्टि से दोष हीन हो जाती है। कुछ अर्द्धालियों में, जैसा कि स्पष्ट है कि भगवान राम और उनके अनुज लक्ष्मण के बीच जो बातें कहलायी गयी हैं, वे भारतीय संस्कृति से मेल नहीं खाती। कोई भी बड+ा भाई अपने छोटे भाई के साथ रसभरी बातें नहीं करता। ऐसा करने के लिए यह तर्क भी नहीं लिया जा सकता कि भगवान राम अपने मन की व्यथा किससे कहते ? उनके साथ केवल लक्ष्मण ही थे। ऐसी परिस्थिति में अन्य काव्यों में पात्रों द्वारा एकान्त प्रलाप कराया जाता है। यही भारतीय काव्य-शास्त्र की मर्यादा है। गोस्वामी जी जैसा महान कवि इस मर्यादा से अनभिज्ञ हो, ऐसी बात सपने में भी सोची नहीं जा सकती। अत: यह मानने के अलावा और कोई रास्ता नहीं है कि इस प्रकार की पंक्तियाँ किसी और तुलसीदास ने जोड+ी होंगी।

किष्किन्धा काण्ड

रामचरितमानस का किष्किन्धा काण्ड सबसे छोटा काण्ड है। इसमें कुल ३० दोहे है। कुछ लोगों का मानना है कि यह भगवान शंकर को समर्पित है। किष्किन्धा काण्ड का जो वर्तमान स्वरूप विभिन्न संस्करणों में मिलता है, उनमें कुछ तरंगों में छन्द शास्त्र की दृष्टि से दोष पाया जाता है। कई अर्द्धालियों में कम मात्रायें हैं। इस दृष्टि से निम्नलिखित अर्द्धालियों को निकाल देने से यह दोष दूर हो जाता है और कथा के प्रवाह में भी कोई व्यवधान नहीं आता है :-

पुलकित तन मुख आव न बचना। देखत रुचिर वेष के रचना॥

(दोहा १ के नीचे)

सेवक सठ नृप कृपण कुवारी। कपटी मित्र सूल सम चारी॥

(दोहा ६ के नीचे)

उमा दारू जोषित की नाई। सबहि नचावत रामु गोसाई॥

तब सुग्रीवहिं आयुस दीन्हा। मृतक कर्म बिधिवत सब कीन्हा॥

(दोहा १० के नीचे)

महाबृष्टि चलि फूटि किआरी। जिमिसुतंत्र भएँ बिगरहिं नारी॥

देखिअत चक्रबाक खग नाही। कलिहि पाइ जिमि धर्म पराही॥

(दोहा १४ के नीचे)

पवन तनय सब कथा सुनाई। जेहि बिधि गए दूत समुदाई॥

(दोहा १९ के नीचे)

तजि माया सेइअ परलोका। मिटहिं सकल भवसंभव सोका॥

(दोहा २२ के नीचे)

पिता बधे पर मारत मोही। राखा राम निहोर न ओही॥ (दोहा २५ के नीचे)

आजु सबहि कहँ भच्छन करऊँ। दिन बहु चले अहार बिनु मरऊँ।

(दोहा २६ के नीचे)

उपरोक्त चौपाइयां दो-दो अर्द्धालियों की है, जो छन्द शास्त्र की दृष्टि से उचित नहीं है। इन्हें निकाल देने के बाद छन्द दोष दूर हो जाता है ओर कथा के प्रवाह में भी कोई व्यवधान नहीं पड+ ता है।

किष्किन्धा काण्ड में बालिवध का प्रसंग भी है। मानस के कुछ संस्करणों में ऐसा उल्लेख है कि भगवान राम ने पेड+ की ओट से छिपकर बालि का वध किया था। यह मर्यादा के विरूद्ध लगता है।

सुन्दरकाण्ड

रामचरितमानस का सुन्दरकाण्ड वास्तव में सुन्दर है। इसमें कुल साठ दोहे हैं। यह पवनसुत हनुमान को समर्पित है। हनुमान जी को प्रसन्न करने के लिए लोग सुन्दरकाण्ड का श्रद्धापूर्वक पाठ करते हैं। ऐसे व्यक्तियों से अगर यह कहा जाय कि इसमें कुछ चौपाइयां ऐसी हैं, जो दो-दो अर्द्धाली की हैं और छन्दशास्त्र की दृष्टि से दोषपूर्ण हैं, तो वे ऐसा कहने वाले को पागल ही कहेंगे। भक्ति की दृष्टि से छन्द-शास्त्र का कोई महत्व नहीं। परन्तु साहित्यिक समालोचना के क्षेत्र में यह विचारणीय विषय है। तुलसीदास जैसा महान कवि दोषपूर्ण चौपाइयां क्यों लिखेगा ? इसलिए उचित यही है कि जहां छन्द-शास्त्र की दृष्टि से इस काण्ड में कुछ दोष आ गये है, उन्हें दूर कर दिया जाये। इस दृष्टि से सुन्दरकाण्ड की निम्नलिखित अर्द्धालियों को निकाला जा सकता है :-

बार-बार रघुबीर सँभारी। तरकेउ पवनतनय बल भारी॥

(दोहा १ के ऊपर)

अति उतंग जलनिधि चहु पासा। कनक कोट कर परम प्रकासा॥

(दोहा २ के ऊपर)

बहुबिधि खल सीतहि समुझावा। साम दाम भय भेद दिखावा॥

(दोहा ८ के ऊपर)

नाहिं त सपदि मानु मम बानी। सुमुखि होति नत जीवन हानी॥

(दोहा ९ के ऊपर)

नर बानरहि संग कहु कैसे। कही कथा भइ संगति जैसे॥

(दोहा १३ के ऊपर)

राम बान रब उएँ जानकी। तम बरूथ कहँ जातुधान की॥

(दोहा १५ के ऊपर)

अब कृतकृत्य भयउँ मै माता। आसिष तब अमोघ विख्याता॥

(दोहा १६ के ऊपर)

अति बिसाल तरू एक उपारा। बिरथ कीन्ह लंकेस कुमारा॥

(दोहा १८ के ऊपर)

की धौ श्रवण सुनेहि नहिं मोही। देखउँ अति असंक सठ तोही॥

(दोहा २० के ऊपर)

आन दंड कछु करिअ गोसांई। सबही कहा मंत्र भल भाई॥

(दोहा २४ के ऊपर)

पावक जरत देखि हनुमंता। भयउ परम लघुरूप तुरंता॥

(दोहा २५ के ऊपर)

सीता कै अति बिपति बिसाला। बिनहिं कहें भलि दीनदयाला।।

(दोहा ३१ के ऊपर)

सो सब तब प्रताप रघुराई। नाथ न कछु मोरि प्रीभुताई।।

(दोहा ३३ के ऊपर)

सभय सुभाउ नारि कर साचा। मंगल महुँ भय मन अति काचा।।

(दोहा ३६ के नीचे)

कहसि न खल अस को जग मांही। भुज बल जाहि जिता मै नाहीं।।

(दोहा ४० के नीचे)

एहि विधिकरत सप्रेम बिचारा। आयउ सपदि सिन्धु एहिं पारा।।

(दोहा ४२ के नीचे)

सुन्दरकाण्ड में ही दो-५८ के नीचे एक अर्द्धाली है-

'ढ+ोल गँवार शूद्र पशु नारी। सकल ताड+ना के अधिकारी।।' इसे लेकर काफी विवाद समय-समय पर होता रहता है। चूंकि यह अर्द्धाली सुन्दरकाण्ड की है। इसलिए कोई यह कहने की हिम्मत नहीं करता कि यह अर्द्धाली तुलसीदास की लिखी हुई नहीं होगी। परन्तु अगर गंभीरता से विचार करें तो यह अर्द्धाली तुलसीदास की रची हुई कदापि नहीं लगती है। यह कथन समुद्र का है। समुद्र ने अपने बचाव में यह बात कही है। इसके पहले भी उसने अपने बचाव में एक बात कही, जो इस प्रकार है- 'गगन समीर अनल जल धरनी। इन्ह कइ नाथ सहज जड+ करनी।।' समुद्र को गँवार भी नहीं कहा जा सकता, क्योंकि वह रघुकुल का गुरू है। इस तरह समुद्र का यह कथन यहां अप्रासांगिक लगता है। वैसे मानस के टीकाकारों ने इस कथन को सार्थक बनाने के लिए तरह-तरह के अर्थ किये हैं। इसके बावजूद जनमत उनसे सहमत नहीं है। ऐसा लगता है कि गोस्वामी जी द्वारा लिखी गई यह अर्द्धाली कुछ इस प्रकार होगी-'ढ+ोल गँवार छुद्र पशु रारी'। बाद में लिपिकारों ने भूलवश छुद्र की जगह शूद्र कर दिया होगा और रारी की जगह पर नारी कर दिया होगा। हाथ से लिखी हुई अर्द्धाली को अगर 'ढ+ोल गँवार छुद्र पशु रारी' मान लिया जाय तो किसी को आपत्ति नहीं होनी चाहिए। राजापुर चित्रकूट में मानस की जो हस्तलिखित पाण्डुलिपि है, उसमें 'न' आज के 'र' की तरह लिखा गया है। वैसे इस अर्द्धाली के स्थान पर कुछ लोगों ने सुझाव दिया है कि 'कपटी कुटिल

कुमति उरगारी' भी रखी जा सकती है। ये शब्द गोस्वामी जी के शब्द लगते हैं और इनके रखने से समाज के किसी वर्ग की भावना को भी ठेस नहीं पहुँचती है।

सुन्दरकाण्ड में एक विचित्र बात देखने को मिलती है। एक अर्द्धाली का दो बार प्रयोग किया गया है। दोहा-११ के नीचे 'देखि परम बिरहाकुल सीता। सो छन कपिहि कलप सम बीता।।'' यही अर्द्धाली दोहा- १३ के नीचे इस प्रकार आयी है- 'देखि परम बिरहाकुल सीता। बोला कपि मृदु बचन बिनीता।।'' अब यहां विचारणीय विषय यह है कि गोस्वामी तुलसीदास जैसा समर्थ कवि एक ही अर्द्धाली को दो बार क्यों लिखेगा ? ऐसा लगता है कि दोहा १३ के नीचे वाली तरंग में इस अर्द्धाली को बाद में किसी और कवि ने जोड+ दिया होगा। छन्दशास्त्र की दृष्टि से तो इन दोनों तरंगों में कोई दोष नहीं है, पर पुनरावृत्ति दोष दूर करने के लिए दोहा १३ के नीचे की इस चौपाई को निकाला जा सकता है'

'बचन न आव नयन भरे बारी। अहह नाथ हौ निपट बिसारी।।

देखि परम बिरहाकुल सीता। बोला कपि मृदु बचन बिनीता।।

लंकाकाण्ड

रामचरितमानस का लंकाकाण्ड बहुत महत्वपूर्ण है। इसमें कई घटनाएं वर्णित है। इस काण्ड में कुल १२१ तरंगें है। निम्नलिखित चौपाइयाँ दो अर्द्धालियों की है-

राम बचन सब के जिय भाए। मुनिबर निज निज आश्रम आए।।

(दोहा २ के नीचे)

चला कटकु प्रभु आयसु पाई। को कहि सक कपि दल बिपुलाई।।

(दोहा ४ के नीचे)

निज बिकलता बिचारि बहोरी। बिहँसि गयउ गृह करि भर भोरी।।

(दोहा ५ के नीचे)

तब रावन मयसुता उठाई। कहै लागि खल निज प्रभुताई।।

(दोहा ७ के नीचे)

हित मत तोहि न लागत कैसें। काल बिबस कहुँ भेषज जैसें।।

(दोहा ९ के नीचे)

एहि बध बेगि सुभट सब धावहु। खाहु भालु कपि जहँ जहँ पावहु।।

(दोहा ३२ के नीचे)

जगदातमा प्रानपति रामा। तासु बिमुख किमि लह बिश्रामा।।

(दोहा ३४ ख के नीचे)

सुरपति सुत जानइ बल तोरा। राखा जियत आँखि गहि फोरा।।

(दोहा ३६ के नीचे)

प्रभुपद कमल सीस तिन्ह नाए। देखि सुभट रघुपति मन भाए।।

(दोहा ४५ के नीचे)

बंधु बंस तै कीन्ह उजागर। भजेहु राम सोभा सुख सागर।।

(दोहा ६४ के ऊपर)

रोवहिं नारि हृदय हति पानी। तासु तेज बल बिपुल बखानी।।

(दोहा ७१ के नीचे)

धरू धरू मारू सुनिअ धुनि काना। तो मारइ तेहि कोउ न जाना।।

(दोहा ७२ के नीचे)

तिन्हहि ग्यान उपदेसा रावन। आपुन मंद कथा सुभ पावन।।

(दोहा ७७ के नीचे)

चले मत्त गज जूथ घनेरे। प्राबिट जलद मरूत जन प्रेरे।।

(दोहा ७८ के नीचे)

अधिक प्रीति मन भा संदेहा। बंदि चरन कह सहित सनेहा।।

(दोहा ७९ के नीचे)

मरत न मूढ+ कटेहुँ भुज सीसा। धाए कोटि भालु भट कीसा।।

(दोहा ९७ के नीचे)

ऐसेहुँ दुख जो राख मम प्राना। सोइ बिधि ताहि जिआव न आना।।

(दोहा ९८ के नीचे)

जहँ तहँ भूधर बिटप उपारी। धाए कट कटाहि भट भारी।।

(दोहा १०० के ऊपर)

धरनि परेउ द्वौ खण्ड बढ+ ाई। चापि भालु मर्कट समुदाई।।

(दोहा १०२ के नीचे)

जगत बिदित तुम्हारि प्रभुताई। सुत परिजन बल बरनि न जाई।।

(दोहा १०३ के नीचे)

सुनि प्रभु बचन भालु कपि हरषे। नभ ते सुरन्ह सुमन बहु बरषे।।

(दोहा १०८ के ऊपर)

परम सुखद चलि त्रिबिध बयारी। सागर सर सरि निर्मल बारी।।

(दोहा ११९ के ऊपर)

इसके अतिरिक्त लंकाकाण्ड में दो ऐसे प्रसंग हैं जो पूरी तरह प्रक्षिप्त हैं। पहला प्रसंग है- हनुमान जी द्वारा संजीवनी बूटी लाने का। जब हनुमान जी संजीवनी बूटी लेकर आ रहे थे और जब वे अयोध्या के ऊपर से उड+ रहे थे तो भरत ने उन्हें कोई राक्षस समझ कर अपने बाणों से मारकर नीचे गिरा दिया था। दोहा ५८ से लेकर दोहा ६० (ख) तक वर्णित यह प्रसंग, जिसमें कुल आठ चौपाइयां है, एक सोरठा है और तीन दोहे हैं, पूरी तरह प्रक्षिप्त लगता है। उत्तरकाण्ड के प्रारम्भ में जब हनुमान जी की भरत से भेंट होती है, तो ऐसा नहीं लगता कि इसके पहले भरत जी और हनुमान जी की भेंट हुई थी। इसलिए संजीवनी बूटी ले जाते समय हनुमान जी को जमीन पर गिरा देने वाला प्रसंग पूरी तरह प्रक्षिप्त लगता है।

सीता की अग्नि परीक्षा का प्रसंग भी पूरी तरह प्रक्षिप्त है। इसका चित्रण दोहा १०७ के नीचे की अंतिम अर्द्धाली- 'सीता प्रथम अनल महुँ राखी। प्रगट कीन्ह चह अंतर साखी।।' से लेकर दोहा १०९ के ऊपर तक सीता की अग्नि परीक्षा का प्रसंग पूरी तरह प्रक्षिप्त है। इस प्रसंग में भगवान राम के श्रीमुख द्वारा सीता जी के बारे में अपशब्द कहलाये गये हैं, जो संभव नहीं लगता। जिस सीता के लिए भगवान राम ने दर-दर की ठोकरें खाई, इतना बड+ ा संग्राम लड+ ा, वे ही श्रीराम सीता जी के

मुक्त हो जाने पर अपशब्द क्यों कहेंगे। ऐसा लगता है कि यह प्रसंग भारतीय समाज में स्त्रियों के बारे में मध्यकालीन विचारधारा से प्रभावित होकर किसी और कवि ने जोड+ दिया होगा। इस प्रसंग में कुल चार चौपाइयां, एक दोहा और दो श्लोक है। इन्हें निकाल देने के बाद भी रामकथा में कोई व्यवधान नहीं पड+ ता।

उत्तरकाण्ड

रामचरितमानस का उत्तरकाण्ड बहुत महत्वपूर्ण है। गोस्वामी जी ने ग्रन्थ के प्रारम्भ में ही जो निवेदन किया है कि 'नाना पुराण निगमागम सम्मत' है- रामचरितमानस। यह कथन उत्तरकाण्ड में ही वास्तव में चरितार्थ होता है। उत्तरकाण्ड में गोस्वामी जी ने गागर में सागर भर दिया है। इसमें ज्ञान और अनुभव की जितनी बातें है उन्हें कहने के लिए हजारों पृष्ठों का लेख लिखना पड+ ेगा, जबकि गोस्वामी जी ने मात्र एक सौ तीस दोहों तथा इतनी ही तरंगों में ज्ञान की वे सभी बातें कह दी हैं, जो सैकड+ ों किताबें पढ+ ने के बाद मिलेंगी।

परन्तु उत्तरकाण्ड का जो स्वरूप मानस के विभिन्न संस्करणों में वर्तमान में उपलब्ध है, उनमें पाठभेद बहुत है। ध्यान से अवलोकन करने के बाद ऐसा लगता है कि इसमें भी कुछ अंश ऐसे हैं, जिन्हें गोस्वामी जी के बाद किसी और गोस्वामी ने जोड+ दिया होगा। उत्तरकाण्ड में दो अर्द्धालियों की चौपाइयाँ निम्नलिखित है-

कृपादृष्टि रघुबीर बिलोकी। किए सकल नर नारि बिसोकी।।

(दोहा ५ के नीचे)

देखि नगर बासिन्ह कर रीती। सकल सराहहिं प्रभु पद प्रीति।।

(दोहा ७ के नीचे)

नाना भाँति सुमंगल साजे। हरिष नगर निसान बहु बाजे।।

(दोहा ८ के नीचे)

कोन्टिह बाजिमेध प्रभु कीन्हे। दान अनेक द्विजन्ह कहँ दीन्हे।।

(दोहा २३ के नीचे)

प्रनत काम सुरधेनु कलपतरू। होइ प्रसन्न दीजै प्रभु यह बरू।।

(दोहा ३४ के नीचे)

हनूमान सम नहिं बड+ भागी। नहिं कोउ राम चरन अनुरागी।।

(दोहा ४९ के नीचे)

भूसुर ससि नव बृंद बलाहक। असरन सरन दीन जन ग्राहक।।

(दोहा ५० के नीचे)

धन्य धन्य मैं धन्य पुरारी। सुनेउँ राम गुन भव भय हारी।।

(दोहा ५२ के ऊपर)

उपजइ राम चरन विस्वासा। भव निधि तर नर बिनहिं प्रयासा।।

(दोहा ५५ के ऊपर)

सादर तात सुनावहु मोहीं। बार बार बिनवउँ प्रभु तोही।।

(दोहा ६३ के नीचे)

बालक भ्रमहिं न भ्रमहिं गृहादी। कहहिं परस्पर मिथ्यावादी।।

(दोहा ७२ के नीचे)

चतुर सिरोमनि तेइ जग माहीं। जे मनि लागि सुजतन कराहीं।।

(दोहा ११९ के नीचे)

द्विज निंदक बहु नरक भोग करि। जग जनमइ बायस सरीर धरि।।

(दोहा १२० के नीचे)

हिम ते अनल प्रगट बरु होई। बिमुख राम सुख पाव न कोई।।

(दोहा १२२ के ऊपर)

दो अर्द्धालियों की इन चौपाइयों को निकाल देने से छन्द सम्बन्धी दोष दूर हो जाते है तथा कथा के प्रवाह में भी कोई बाधा नहीं पड+ ती है। उत्तरकाण्ड में निम्नलिखित चौपाई और दोहा भी है जिनके बारे में विचार करने की आवश्यकता है। इनका भावार्थ गोस्वामी तुलसीदास जी के आदर्शो से मेल नहीं खाता-

‘तिन्ह महँ द्विज द्विज महँ श्रुतिधारी। तिन्ह महँ निगम धरम अनुसारी।।’

पुनि पुनि सत्य कहेउँ तोहि पाहीं। मोहि सेवक सम प्रिय कोउ नाही।

(दोहा ८६ के ऊपर)

बादहिं सूद्र द्विजन्ह सन हम तुम्ह ते कछु घाटि।

जानइ ब्रह्म तो बिप्रबर आँखि देखावहिं डाटि।।

(दोहा ९९ ख)

बिप्र निरक्षर लोलुप कामी। निराचार सठ बृषली स्वामी।।

शूद्र करहिं जप तप व्रत नाना। बैठि बरासन कहहिं पुराना।।

(दोहा १०० के ऊपर)

दोहा ९८ (ख) के नीचे वाली तरंग में भी बहुत सी ऐसी बातें हैं जो जाति-पाति पर आधारित हैं। इनमें महिलाओं की मर्यादा के खिलाफ भी कुछ कहा गया है। गोस्वामी तुलसीदास जैसा महान व्यक्ति ऐसा कथन कभी नहीं कर सकता।

,,,,,,,,,,,,,,,,,,,

जौं पांचहि जन लागहु नीका

रामचरित मानस का सम्पादन करने से पूर्व देश के कतिपय मानस विशेषज्ञों से सलाह ली गई। उनके विचारों को ध्यान में रखकर प्रस्तावित संशोधनों पर फिर से चर्चा की गई और उसके बाद मानस का प्रकाशन किया गया।

कुछ लोगों ने पूर्वाग्रह वश, मानस में किसी भी प्रकार के संशोधन का विरोध किया। हालांकि उन्होंने अपने विरोध का कोई तार्किक आधार नहीं बताया, केवल श्रद्धा और धर्म की आड+ लेकर अपने विचार व्यक्त किये। उन्होंने इस तथ्य को एकदम नजर अंदाज कर दिया कि रामचरितमानस में पहले भी कई बार संशोधन किये जा चुके हैं, तथा यह सिद्ध हो चुका है कि मानस में कुछ अंश प्रक्षिप्त हो सकते हैं। जो भी हो, मानस के सम्पादन का कई प्रतिष्ठित व्यक्तियों और विद्वानों ने स्वागत भी किया है। गुजरात के तत्कालीन राज्यपाल नवल किशोर शर्मा, मध्य प्रदेश के तत्कालीन राज्यपाल डॉ० बलराम जाखड+ तथा मॉरीशस के राष्ट्रपति डॉ० अनिरूद्ध जगन्नाथ ने मानस के सम्पादन पर प्रसन्नता व्यक्त की और सम्पादक को बधाई दी। सुनते हैं, महात्मा गांधी ने भी कभी कहा था कि भविष्य में अगर तुलसीकृत रामायण में संशोधन कर आपत्तिजनक अंशों को निकाला जायेगा, तो मैं उसका स्वागत करूंगा।

तुलसीदास मानस प्रतिष्ठान मध्य प्रदेश, मानस भवन, श्यामला हिल्स भोपाल के कार्याध्यक्ष श्री रमाकान्त दुबे सेवानिवृत्त आई.ए.एस. ने दिनांक २०.११.२००९ के अपने पत्र में लिखा Þप्रिय भाई राम सागर जी, आपके द्वारा संपादित श्री मद रामचरितमानस की प्रति प्राप्त हुई। यह हर्ष का विषय है कि मानस के विभिन्न काण्डों पर न केवल प्रकाश डाला गया है, बल्कि विद्वानों द्वारा अत्यन्त महत्वपूर्ण लेख भी शामिल किये गये हैं। आपका यह प्रयास स्तुत्य है। बधाई एवं शुभकामनाएं। हमने आपकी प्रति मानस भवन के पण्डित राम किंकर उपाध्याय ग्रन्थालय में सम्मिलित कर ली है।ß पंजाबी विश्वविद्यालय पटियाला के हिन्दी विभाग के पूर्व अध्यक्ष डॉक्टर पुष्पपाल सिंह ने अपने पत्र दिनांक १७.०४.२००८ में लिखा Þआपकी भूमिका अत्यन्त मनोयोग से पढ+ी। आपने पाठ शोधन की अत्यन्त वैज्ञानिक प्रविधि अपनाकर मानस का जो पाठ प्रस्तुत किया है वह एक महान कार्य है। साधुवाद। यह तो निश्चित ही है कि लवकुश काण्ड तुलसी ने नहीं लिखा है। नारी विषयक अनेक चौपाइयां, जो आपने निर्दिष्ट की हैं, वे प्रक्षिप्त ही जान पड+ ती है। निश्चयपूर्वक तो आप जैसे विद्वान ही कह सकते हैं, जिन्होंने मानस के पाठ शोधन की ओर परिश्रमपूर्वक कार्य किया है।ß यदि ग्रीता प्रेस गोरखपुर से मानस को नये रूप में संपादित करने की कुछ जुगत निकाल लें, बड+ ा लोकोपकारी कार्य होगा।ß

भोपाल के डॉक्टर महावीर सिंह ने जो आकाशवाणी के निदेशक रह चुके हैं और मानस पर सतत चिन्तन करते रहते हैं एक पत्र में लिखा ßतुलसीदास की मूल कृति उपलब्ध न होने के कारण यह प्रमाणित करना कठिन होगा कि मूलपाठ क्या है, फिर भी संशोधित पाठ यदि मानस की मूलभावना को परिवर्तित नहीं करता, तो उसकी स्वीकृति में कोई बाधा नहीं आनी चाहिए।ß

Þआपका पत्र एवं प्रकाशन सामग्री का आद्योपान्त अध्ययन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। आपने रामचरितमानस की जनसुलझी गुत्थियों को सुलझाने का प्रयास किया है, यह स्तुत्य कार्य है। मानस के प्रक्षिप्त अंशों को चिन्हित करना टेढ+ी खीर है। इस निष्कर्ष में कोई सन्देह नहीं है कि तुलसीदास के परवर्ती रचनाकारों ने मानस में अनेक अंश अपने निहित स्वार्थ की पूर्ति के लिए जोड+ दिये हैं तथा कहीं कहीं इन प्रक्षेपों के कारण तुलसीदास के मत का खण्डन भी हुआ है और उनकी छवि को भी आघात लगा है। जातियों के नाम लेकर जो भी वर्णन रामायण में हैं वे तुलसीदास की मानसिकता से मेल नहीं खाते। उत्तरकाण्ड में दम्भ, अहँकार, आडम्बर आदि को लेकर अनेक उलाहने दिये हैं और फटकार भी लगायी है, लेकिन तुलसीदास की शैली शिष्ट, सकारात्मक और समत्व प्रधान शैली रही है। यद्यपि कलियुग के प्रभाव के कारण देकर इसे संतुलित किया गया है। उत्तरकाण्ड का यह प्रसंग दोहा क्रमसंख्या ९७ से लेकर १०० तक का वर्णन अतिरंजनापूर्ण है।

कलिमत ग्रसे धर्म सब, लुप्त भए सद ग्रंथ।

दंभिन्ह निज मति कल्प करि, प्रकट किए बहु पंथ।

इतना ही नहीं तुलसीदास ने कागभुसुंडि के मुख से इतना विचारोत्तेजक एवं ज्ञानसमृद्ध वक्तव्य दिलवाया है कि पाठक आश्चर्यचकित रह जाता है। यह विचारणीय है कि क्या पशु पक्षी और कीट, पतंग भी प्रवचन करने में समर्थ है। उत्तरकाण्ड का एक प्रसंग और ऐसा है जो अत्यन्त रोचक एवं वाहपूर्ण शैली में दिया गया है। यथा :-

मोह न अंध कीन्ह केहि केही, को जग काम नचावन जेही।

तृस्ना केहि न कीन्ह बौराहा, केहि के हृदय क्रोध नहीं दाहा।

चिंता सांपिनि को नहिं खाया, को जग जाहि न व्यापी माया।

कीट मनोरथ दारू शरीरा, जेहि न लाग घुन, को अस धीरा।

आपने जिन शंकाओं को उठाया है और जो समाधान दिये हैं वे सर्वथा उचित एवं तार्किक लगते हैं। इन परिवर्तनों से पाठकों को नई उर्जा मिलेगी। मानस को नये कलेवर में प्रस्तुत करने का

यह प्रयास समादृत होना चाहिए, क्योंकि यह कार्य सद्इच्छा से प्रेरित है और समाज के आधुनिक परिवेश से मेल खाता है। इस प्रयास के लिये आप साधुवाद के पात्र हैं। इति।

लखनऊ विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के पूर्व अध्यक्ष डॉक्टर सूर्यप्रसाद दीक्षित ने अपने पत्र दिनांक २५.०३.२००५ में सुझाव देते हुये लिखा कि Þपूजहिं विप्र सकल गुण हीना। सूद न गुन गन ज्ञान प्रवीनाß चौपाई उन्हें भी प्रक्षिप्त लगती है।

हिन्दी के प्रख्यात विद्वान डॉक्टर महीप सिंह ने हमारे कार्य की सराहना की। उन्होंने अपने पत्र दिनांक २९.०८.२००६ में लिखा Þप्रिय भाई, आप द्वारा सम्पादित श्रीमद्रामचरित मानस की प्रति प्राप्त हुई। आपने यह बहुत महत्वपूर्ण कार्य किया है। मेरा अभिनन्दन स्वीकार कीजिये। प्रति भेजने के लिए मेरा हार्दिक आभार। शुभकामनाओं सहितß आपका महीप सिंह।

हिन्दी के विद्वान लेखक और पत्रकार डॉक्टर गुंजेश्वरी प्रसाद ने अपने पत्र दिनांक ०६.०३. २००५ में लिखा कि उन्हें भी Þपूजहि विप्र सकल गुणहीना—चौपाई प्रक्षिप्त लगती है। उन्होंने कहा कि Þगोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित रामचरितमानस में कहीं भी किसी व्यक्ति या जाति की निन्दा नहीं की गई है। कथावाचकों ने उनकी चौपाइयों का गलत अर्थ लगाया है। सच तो यह है कि मानस को पढ+ ने की दृष्टि पाठकों के पास उतनी व्यापक नहीं है, जो होनी चाहिए। मानस में नायक राम की भाषा नारी और दलित वर्ग की प्रतिष्ठा करती है, जबकि खलनायक रावण और असुरों की भाषा नारी जाति तथा ग्रन्थों को अपमानित करती है।

राम ने न तो सीता का परित्याग किया था और न शम्बूक का वध किया था। ये सारी किंवदतियां क्षेपक के रूप में कही गई है। ऐसे ही मनुस्मृति के विषय में भी भ्रांतियां फैलायी जाती है। वास्तविकता यह है कि जितना गहरा अध्ययन होना चाहिए उतना अध्ययन नहीं हो रहा है और अब कोई जरूरत भी नहीं समझता हैं। रूपया कमाने की बंधी दौड+ में ज्ञान की बातों को भुला दिया जा रहा है।Þ

भोपाल के स्वामी गोविन्दानन्द सरस्वती ने हमें आशीर्वाद प्रदान किया-

प्रियात्मन्,

श्रीमद् जगदगुरू शंकराचार्य महाराज श्री का आशीर्वाद आप को प्राप्त हो। सम्पादक श्री राम सागर शुक्ल जी द्वारा संशोधित परमपूज्य गोस्वामी तुलसीदास कृत Þसर्वदा पूज्यनीय श्रीमद् रामचरितमानस की एक प्रति की अमूल्य भेंट सर्वत्र वन्दनीय सम्माननीय श्री डॉक्टर भगवदाचार्य

जी महाराज द्वारा सप्रेम नि:शुल्क प्राप्त हुई। इसके लिए हार्दिक आभार तथा आपके सराहनीय प्रयास के लिये कोटिश: शुभकामनायें। प्रभु श्रीराम की कृपा सदैव आप सब पर बनी रहे।ß

पुन: हार्दिक अभिनन्दन।

पी० एस० साध्वी सर्वेश्वरी देवी

आज्ञा से....

श्रीमद जगदगुरू शंकराचार्य अयोध्यापुरी पीठाधीश अनंत समलंकृत स्वामी श्री गोविन्दानन्द सरस्वती जी महाराज।

इलाहाबाद विश्वविद्यालय पुस्तकालय में रामचरितमानस की एक प्रति रख दी गई है। वर्ग संख्याजी- २३३८ से जी- ४३४०।

लखनऊ के गोमतीनगर निवासी पंजाब नेशनल बैंक एक वरिष्ठ अधिकारी मानस प्रेमी अश्विनी कुमार ने लिखा ०१.१०.२००६ कि-Þआपने बड+` ही विद्वतापूर्ण ढंग से यह सिद्ध करने का प्रयास किया है कि रामचरितमानस में कुछ अंश बाद में जोड+` गये प्रतीत होते हैं। ऐसा होना असम्भव नहीं है जैसा कि 'जय' बढ+ ते बढ+ ते 'भारत' और अन्तत: महाभारत बन गया। ठीक उसी प्रकार गोस्वामी तुलसीदास की मूलकृति में किसी अन्य कवि ने रामकथा को विस्तार दिया हो, यह कोई अचरज की बात नहीं हो सकती। परन्तु आप चाहे जितना संशोधन कर लें, मानस का विरोध करने वाले करते ही रहेंगे। संशोधन के बाद वे कोई और बिन्दु ढूंढ+ लेंगे आलोचना करने के लिए, क्योंकि उन्हें हर हाल में मानस में वर्णित मूल्यों का विरोध बराबर करना है। 'सर्व अस्वीकारवाद' और 'वामपंथी' भारतीय मूल्यों का विरोध बराबर करते रहेंगे। चूंकि इस वर्ग के लोगों ने अपने भीतर 'मनोवैज्ञानिक अवरोध' की रचना कर ली है। Þयदि इक्की दुक्की चौपाइयों को, जो संभवत: क्षेपक रूप में जोड+ दी गई हैं हटा देने से इस महान देश में सामाजिक समरसता पैदा हो सके, तो इससे तुलसीदास सहित सभी प्रात: स्मरणीय सन्तों की आत्मा परम प्रसन्न होगी। आपका यह प्रयास श्लाधनीय हैß

अश्विनी कुमार जी के पत्र से ऐसा लगता है कि उनके विचार से समाज के एक वर्ग को प्रसन्न करने के लिये मानस में संशोधन किया जा सकता है, हालांकि वे यह भी मानते हैं कि मानस में क्षेपक है। परन्तु मैं इस मत का हूँ कि रामचरितमानस से उन्हीं चौपाइयों को हटाना चाहिये, जिन्हें गोस्वामी जी ने नहीं लिखा होगा। किसी की आलोचयना या विरोध के भय से किसी भी साहित्यिक कृति में संशोधन का मैं घोर विरोधी हूँ।

गोण्डा के स्वर्गीय डॉक्टर जगन्नाथ त्रिपाठी ने दो पत्र लिखे। दिनांक १२.०४.२००५ तथा १९.०३.२००५ को लिखे दोनों ही पत्रों में उन्होंने यही सिद्ध करने की कोशिश की है कि वे मानस के अप्रतिम विद्वान हैं और उन्होंने अपने तर्को में से मुझे पराजित कर दिया। मैने उन्हें एक पत्र वाद विवाद के लिये नहीं अपितु शंका समाधान के लिये लिखा था। रही बात उनकी विद्वता की तो इसमें कोई सन्देह नहीं कि उन्होंने बहुत पढ+ ा है। उन्होंने मेरी बात स्वीकार भी कर ली। अब प्रक्षेपों की बात करें। हमारे बहुत से प्राचीन गन्थों में प्रक्षेप हुआ है। 'मानस' भी इससे अछूता नहीं, इससे कोई इन्कार नहीं कर सकता। पर लवकुश काण्ड को तुलसी रचित कोई नहीं कहता।Þ मैं भी नहीं समझता कि लवकुश काण्ड तुलसी की रचना है। मेरा तो मात्र इतना निवेदन है कि अगर एक पूरा काण्ड जोड+ ा जा सकता है तो अन्य काण्डों में प्रक्षिप्त क्यों नहीं हो सकते। त्रिपाठी जी इस तथ्य को बिल्कुल गंभीरता से नहीं लेते कि इन्हीं प्रक्षेपों के कारण सत्यार्थ प्रकाश में स्वामी दयानन्द सरस्वती जैसे ऋषि तुल्य विद्वान ने मानस को Þअपठनीय पुस्तकोंß की सूची में डाल रखा है। त्रिपाठी जी ने अपने पत्र में स्वीकार किया है कि Þमैं यह नहीं कहता कि मानस में कुछ भी प्रक्षिप्त नहीं है, यह हो सकता है। छिटपुट यहां वहांß इतना स्वीकार करने के बाद भी उनका दृढ+ मत है कि रामचरितमानस में किसी प्रकार का कोई संशोधन नहीं किया जाना चाहिये।

मैने एक पत्र उ०प्र० के पूर्व राज्यपाल स्वर्गीय सूरजभान जी को भी भेजा था। उन्होंने मेरे पत्र का उत्तर तो नहीं दिया किन्तु अगले दिन पत्रकार वार्ता करके रामचरितमानस और मनुस्मृति में संशोधन करने की मांग रख दी। उन्होंने पत्रकारों को बताया कि श्रृंगेरी के शंकराचार्य ने धर्मग्रन्थों में संशोधन के बारे में सहयोग देने का आश्वासन दिया है। इसके साथ ही विश्व शूद्र महासभा के अध्यक्ष जगदीश पटेल और अयोध्या के आचार्य जुगल किशोर शास्त्री ने भी २२.४.२००६ को लखनऊ में एक पत्रकार वार्ता में कहा कि मनुस्मृति और रामचरितमानस में शूद्रों और स्त्रियों का अपमान किया गया है। उन्होंने कहा कि अगर इन ग्रन्थों के प्रकाशन पर रोक नहीं लगी तो स्थिति खराब होगी।

स्वर्गीय सूरजभान के वक्तव्य की प्रतिक्रिया में १०.१०.२००५ को नई दिल्ली में आयोजित पत्रकार वार्ता में ज्योतिपीठ के शंकराचार्य और काशी विद्वत् परिषद के महामंत्री बटुक प्रसाद शर्मा शास्त्री ने चेतावनी दी कि हिन्दू धर्म ग्रन्थों में संशोधन का पुरजोर विरोध किया जायेगा। गुंजेश्वरी प्रसाद का यह कथन सही लगता है कि हम लोग सत्य का साक्षात्कार करना नहीं चाहते। बहुत कम लोगों ने गोस्वामी तुलसीदास जैसे महामानव और उनकी रचना रामचरितमास को गंभीरता से लेने की कोशिश की है। मानस को एक धार्मिक कृति बनाकर उसकी समालोचना करने का भी मार्ग बन्द

कर दिया है। इसी से कुछ लोगों को लाभ मिलता है, भले ही इससे समाज, गोस्वामी तुलसीदास और मानव का नुकसान होता है।

संस्कृत के प्रख्यात विद्वान डॉ० वंशीधर त्रिपाठी ने स्वामी रामानन्द की जयन्ती पर एक लेख जागरण में प्रकाशित किया (२९.०१.२००८)। उन्होंने लिखा कि Þस्वामी रामानन्द ने भाषा के क्षेत्र में भी क्रांति का बीजरोपण किया। उनके पहले तक धर्माचार्य, लेखन- भाषण सारा कुछ देवभाषा संस्कृत में ही करते थे। मातृभाषा होते हुए भी हिन्दी उपेक्षित सी थी... आगे चलकर गोस्वामी तुलसीदास ने स्वामी रामानन्द की भाषा विषयक इसी क्रांतिप्रियता का अनुसरण करके रामचरितमानस जैसे अद्भुत ग्रंथ का प्रणयन हिन्दी भाषा में कियाß। तुलसीदास के इस साहित्यिक क्रांतिकारी कदम का मूल्यांकन होना चाहिए।

भारतीय पुलिस सेवा के एक वरिष्ठ अधिकारी डॉ० सत्यपाल सिंह ने भगवान राम की ऐतिहासिकता के बारे में एक बड+ ा विद्वतापूर्ण लेख लिखा है। उन्होंने लिखा है कि अज्ञानता और अंधविश्वास (आस्था नहीं) के कारण हमने रामकथा में स्वयं बहुत सारे परिवर्तन कर लिये-Þश्रीराम व रामायण को अनैतिहासिक असत्य और कल्पना की उड+ ान बताने वाले विदेशी तथा उनके देशी उच्छिष्ट भोजी जितने जिम्मेदार हैं, हमारे अपने ही रामचरितमानस पर लिखने वाले कवि तथा दूसरे विद्वान उससे कम जिम्मेदार नहीं है। रही सही कसर आज Þरामकथाß करने वाले और रामलीला करने-करवाने वाले लोगों ने पूरी कर दी है। वाल्मीकि ने तो राम को मनुष्य ही माना था, एक श्रेष्ठ पुरूष, मर्यादा पुरुषोत्तम जानकर अपने ही समय में (समकालीन होते हुये) रामकथा लिखी थी। राम में मनुष्योचित भावनायें भी दर्शायी थीं। उपन्यास की तराह कल्पित पात्र बनाकर तथा रामायण के मनुष्य पात्रों को पशु, पक्षी बताकर हमने स्वयं श्रीराम व रामायण की ऐतिहासिकता पर प्रश्नचिन्ह लगा दिये।Þ

Þहम तो यहां पर भी रुके नहीं, हमने तो श्रीराम को कलंकित करने के लिये कुछ कथायें गढ+ लीं। राम ने कभी भी सीता का परित्याग कर, उन्हें गर्भवती अवस्था में वन में न भेजा था और न वाल्मीकि ने ऐसा लिखा है। हमने तो तपस्या करते हुये ऋषि शम्बूक का वध भी राम से करा दिया। शम्बूक को शूद्र बताया गया, वाल्मीकि ने ऐसा कहीं नहीं लिखा। कोई भी विद्वान तपस्वी ऋषि कभी शूद्र नहीं होता। पर वर्तमान में उपलब्ध रामायण में ऐसा प्रेक्षप करके हमने श्रीराम को, मर्यादा पुरुषोत्तम को, स्त्रियों व शूद्रों पर अत्याचार करने वाला बना दिया। वाल्मीकि के राम तो नरों में नरश्रेष्ठ है, पर नारायण नहीं। पुरुषों में पुरुषोत्तम हैं परमेश्वर नहीं।ß

वर्तमान में हम लोग अपने-अपने ढंग से रामकथा की व्याख्या कर रहे हैं। तार्किकता और वैज्ञानिकता की परवाह किये बिना, धर्म और आस्था का भय दिखा कर, अपना अपना उल्लू सीधा करा रहे हैं।

मैने एक पत्र वाराणसी के एक विद्वान सम्पादक, जो हनुमान जी के परम भक्त हैं को भी लिखा था। उन्होंने पत्र का उत्तर तो नहीं दिया, परन्तु अपने समाचार पत्र में लगातार दो दिनों तक सम्पादकीय लिखकर मेरी निन्दा की। मेरे प्रयास को उन्होंने प्रमाद और अज्ञानता की संज्ञा दी। मैं वैसे भी अपने को विद्वान होने का दावा नहीं करता हूँ। प्रमाद भी कर सकता हूँ। परन्तु उनका सम्पादकीय पढ+ ने के बाद भी मुझे मेरी शंकाओं का समाधान नहीं मिला। सम्पादकीय में वही पुरानी बातें- आस्था और धार्मिक भावना की दुहाई दी गई थी। अत: मैं इस सम्पादकीय का उल्लेख करना उचित नहीं समझता हूँ। वैसे भी अब वे स्वर्गवासी हो गये हैं। अत: उनके बारे में मैं केवल श्रद्धा और सम्मान व्यक्त करना चाहता हूँ।

मैने एक पत्र गीता प्रेस गोरखपुर को भी लिखा था। बहुत दिनों तक तो उन्होंने उसका उत्तर नहीं दिया। परन्तु उत्तर प्रदेश के पूर्व राज्यपाल स्व० सूरजभान ने जब यह मामला शंकराचार्य से उठाया तो गीताप्रेस की तरफ से मुझे एक पत्र मिला।

(पत्र संलग्नक)

आपका १३ फरवरी २००५ का एक पत्र यथासमय प्राप्त हुआ था, उसका उत्तर श्रीमान संपादक महोदय ने उन दिनों लिखा दिया था, परन्तु कुछ कारणों से वह पत्र समय पर आपके पास नहीं भेजा जा सका। इसके लिए कृपया क्षमा करेंगे।

(भवदीय कृते सम्पादक) सम्पादक जी का पत्र निम्नवत् है-

प्रिय महोदय,

सप्रेम, हरिस्मरण,

आपका पत्र दिनांक १३ फरवरी २००५ प्राप्त हुआ था। आपने गोस्वामी तुलसीदास महाराज द्वारा रचित रामचरित मानस में संशोधन करने से संबंधित अपने विचार लिखे हैं। भारतीय संस्कृति और सनातनधर्म में अपने यहां चार वेद, उनके अंग उपांग के रूप में ब्राह्मण, आरण्यक तथा कितने ही उपनिषद प्राप्त हैं। इन्हीं का विस्तार स्मृतियों तथा अष्टादश पुराणों और उपपुराणों में भी हुआ है। इसके साथ ही श्रीमद्भागवत, महाभारत एवं वाल्मीकि रामायण आदि विशिष्ट ग्रंथ भी उपलब्ध है। ये सब के सब ग्रंथ शास्त्र के रूप में प्रमाण माने जाते हैं।

Þश्रीरामचरितमानसß सनातन धर्म का एक सारग्रंथ है, जिसमें अपने शास्त्रों के सभी ग्रंथों का सारांश समन्वित है। यह सनातन धर्म का एक ऐसा ग्रंथ है, जिसे पढ+ कर भारतीय संस्कृति का पूर्ण ज्ञान हो सकता है।

आपने पत्र में संशोधन का सुझाव लिखा। इस संबंध में पूर्व में आधुनिक मनीषियों तथा विद्वानों ने काफी चिन्तन किया है, परन्तु निष्कर्ष रूप में यह बात सामने आती है कि मानव को अपनी सीमित बुद्धि के अन्तर्गत अपनी शिक्षा और संस्कार के अनुसार जो बात कम अच्छी लगती है, उसे निकालने का विचार करते हैं, जबकि सभी मत और विचार एक जैसे नहीं होते। आपने साहित्यिक दृष्टि से कुछ भूलें रामचरितमानस में इंगित कीं। इस संबंध में कुछ दिनों पूर्व आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने रामचरितमानस में भाषा आदि का भी विस्तृत रूप से संशोधन किया, जिसे Þकाशिराज ट्रस्टß ने प्रकाशित भी किया, परन्तु इस पुस्तक का भी विद्वानों तथा मानस-मर्मज्ञों ने विरोध किया और यह जनता-जनादर्न में स्वीकृत भी नहीं हुई। जहां तक इन ग्रंथों में अशुद्धियों की बात है, महाकवि कालिदास तथा शेक्सपियर के ग्रंथों में भी व्याकरण की अशुद्धियां प्राप्त होती हैं, पर उसे विद्वान दोष न मानकर कवित्व का गुण ही मानते हैं।

गोस्वामी तुलसीदास जी ने रामचरितमानस की रचना के प्रारंभ में ही यह लिख दिया है-Þनानापुराणनिगमागमसम्मतं यद् रामायणे निगदितं कचिदन्यतोअपिß। भारतीय संस्कृति और सनातन धर्म की यह मान्यता है कि अपने वेद-शास्त्र अपौरूषेय हैं तथा पुराण और स्मृतियां भी ऋतम्भरा प्रज्ञा से युक्त ऋषियों के द्वारा प्रणीत हैं। युग के अनुसार शास्त्र में कोई संशोधन नहीं किया जा सकता। श्रीमद्भागवत् तथा श्रीरामचरितमानस में कलियुग का वर्णन विस्तार से हुआ है। इसलिये युग के अनुसार जो जनमानस होना है, उसका वर्णन इन मनीषियों ने पहले ही कर दिया है। अत: रामचरितमानस की किसी पंक्ति पर आक्षेप करना समीचीन नहीं है।

गीताप्रेस द्वारा जब यह ग्रंथ प्रकाशित हुआ, तब रामचरितमानस की सभी प्राचीन प्रतियों का अन्वेषण करके प्रामाणिक रूप से इसे ग्रंथित किया गया। आशा है आप भी इससे सहमत होंगे। शेष प्रभु कृपा। भवदीय-राधेश्याम खेमका। मैने इसके उत्तर में खेमका जी को एक पत्र लिखा जो इस प्रकार है।

प्रात: स्मरणीय पूज्यपाद गोस्वामी तुलसीदास जी महाराज द्वारा रचित श्रीमद्रामचरितमानस के बारे में अपने पत्र क्रमांक १८२ दिनांक आषाढ+ शु० ९. संवत् २०६२/फाल्गुन शु० ४, संवत् २०६१ का संदर्भ लेने की कृपा करें।

पत्रोत्तर के लिए धन्यवाद।

आपका पत्र पढ+ ने के बाद मुझे ऐसा लगता है कि मैं अपनी बात आपको समझा नहीं सका। गोस्वामी तुलसीदास रचित रामचरितमानस में संशोधन करने की क्षमता किसी मनुष्य में तो नहीं है, फिर मैं ऐसी हिमाकत कैसे कर सकता हूँ। वास्तव में मेरा निवेदन मात्र इतना है, कि गोस्वामी तुलसीदास रचित रामचरित मानस के नाम पर जितने ग्रंथ इस समय उपलब्ध हैं, उनमें कुछ ऐसी पंक्तियां है, जो निश्चित रूप से गोस्वामी जी द्वारा रचित नहीं लगती हैं।

रामचरितमानस में पहले भी कई बार संशोधन और संपादन हो चुका है। जहां तक मुझे याद है, कि गीताप्रेस ने सबसे पहले रामचरितमानस को विशेषांक के रूप में प्रकाशित किया था। उस रामचरितमानस में और आज गीताप्रेस द्वारा प्रकाशित रामचरितमानस में ही बहुत अन्तर पाया जाता है। हिन्दी के परम उद्भट विद्वान आचार्य विश्वनाथ मिश्र ने काशिराज संस्करण संपादित किया। इस ग्रंथ में भी उन्होंने स्पष्ट रूप से लिखा कि उस समय प्रचलित रामचरितमानस में बहुत से अंश ऐसे हैं, जो पूज्य गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित नहीं लगते हैं। इसके बाद इलाहाबाद विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष डॉ० माता प्रसाद गुप्त ने रामचरित मानस का मानक पाठ प्रकाशित किया और उन्होंने भी स्पष्ट शब्दों में कहा कि प्रचलित रामचरित मानस में ऐसे बहुत से अंश हैं, जिन्हें गोस्वामी तुलसीदास जी ने नहीं लिखा होगा। अभी हाल ही में चित्रकूट के प्रख्यात मानस विशेषज्ञ स्वामी रामभद्राचार्य ने भी मानस का संपादन किया है। उन्होंने लगभग तीन हजार शब्दों को बदल दिया है। आजकल बाजार में रामचरितमानस के कई संस्करण मिलते हैं। उनमें काफी पाठभेद है। इसीलिये, इतना तो तय है, कि रामचरितमानस में ऐसे कुछ अंश हैं, जिन्हें गोस्वामी तुलसीदास जी ने नहीं लिखा होगा।

गोस्वामी तुलसीदास जी महाराज महान संत और कवि थे। उनके जैसा कवि न तो आज तक हुआ है, न कोई है, ओर न ही होने की उम्मीद है। ऐसे महान कवि की रचना में भी, गीताप्रेस द्वारा प्रकाशित रामचरितमानस में असावधानीवश कुछ ऐसी त्रुटियां हो गई हैं, जिनसे गोस्वामी जी की महिमा कम होती है। उदाहरणके तौर पर सुन्दरकाण्ड तथा अन्य काण्डों में कुछ अर्द्धालियां है, जिन्हें दोहराया गया है। सुन्दरकाण्ड दोहा संख्या- १२ के ऊपर Þदेखि परम बिरहाकुल सीताß अर्द्धाली है, यही अर्द्धाली दोहा संख्या- १४ के ऊपर भी दोहरायी गई है। अन्य प्रकाशकों द्वारा प्रकाशित सुन्दरकाण्ड में यह पुनरोक्ति-दोष नहीं है। कुछ ऐसी अर्द्धालियां है, जिनमें पिंगल शास्त्र की दृष्टि से छन्द-दोष है। आखिर गोस्वामी जी जैसा समर्थकवि ऐसा क्यों करेगा ? ध्यान देने की बात यह है कि इस प्रकार की त्रुटियां अन्य प्रकाशकों द्वारा प्रकाशित रामायण या रामचरितमानस में नहीं मिलती हैं।

विद्वानों ने रामचरितमानस के जो मानक पाठ तैयार किये हैं, उनका आधार आज से लगभग साठ वर्ष पहले उपलब्ध और ज्ञात हस्तलिखित प्रतियां ही हैं। परन्तु इन बीते वर्षो में कई स्थानों पर

मानस की हस्तलिखित प्रतियां उपलब्ध हुई हैं। इनमें गोण्डा जिले के परसपुर में स्वामी नरहरिदास के आश्रम में उपलब्ध प्रति का उल्लेख महत्वपूर्ण है। इसी प्रकार नेपाल के धनुषा जिले में भी सुन्दरकाण्ड की एक बहुत प्राचीन हस्तलिखित प्रति मुझे देखने को मिली। इन साक्ष्यों का अध्ययन करने के बाद मैं इस निष्कर्ष पर पहुंचा हूँ, कि गीताप्रेस द्वारा प्रकाशित रामचरितमानस में जो अंश शूद्रों, महिलाओं और ब्राह्मणों को अपमानित करने वाले हैं, उन्हें तुलसीदास जी ने कदापि नहीं लिखा होगा। इस बात का प्रमाण रामचरितमानस में भी है। इन्हीं बातों को ध्यान में रखकर हमने रामचरितमानस का एक मानक पाठ तैयार किया है। आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि हिन्दी के प्रख्यात विद्वान आचार्य सूर्य प्रसाद दीक्षित, डॉ० रामदरश मिश्र, डॉ० महावीर सिंह, डॉ० रामचन्द्र तिवारी आदि विद्वानों ने मेरे प्रयास का समर्थन किया है। यही नहीं, मध्य प्रदेश के राज्यपाल महामहिम डॉ० बलराम जाखड+ और गुजरात के राज्यपाल महामहिम पंडित नवल किशोर शर्मा ने भी हमारे कार्य की सराहना की है। भोपाल के मानस मर्मज्ञ शंकराचार्य जी ने भी हमें आशीर्वाद दिया है।

मैं आपको इस विवाद में नहीं घसीटना चाहता हूँ कि रामचरितमानस का कौन सा अंश प्रक्षिप्त है। लेकिन मै आपसे निवेदन करता हूँ कि अगले संस्करणों में निम्नलिखित प्रसंगों को संशोधित कर दें, तो यह सनातन धर्म और राष्ट्र के व्यापक हित में होगा। उदाहरण के तौर पर सुन्दरकाण्ड में Þढोल गंवार शूद्र पशु नारीß अर्द्धाली को Þढोल गंवार छुद्र पशु रारीß कर देना ही उचित होगा। इस तरह का पाठ कई प्राचीन हस्तलिखित प्रतियों में मिलता है। इसी प्रकार बालकाण्ड में Þजदपि जोषिता नहिं अधिकारीß(बालकाण्ड दोहा- १०९ के नीचे) को Þजदपि नाथ मै नहिं अधिकारीß कर देने तथा लंकाकाण्ड के मन्दोदरी-रावण संवाद के प्रसंग में Þनारि स्वभाव सत्य सब कहहींÞ(लंकाकाण्ड दोहा- १५-ख के नीचे) के स्थान पर Þमूढ+ स्वभाव सत्य सब कहहींß लिखना ही अधिक उचित है।

अरण्यकाण्ड में Þपूजहि विप्र सकल गुणहीना। शूद्र न गुन गन ग्यान प्रबीनाß तथा Þसापत ताड+ त परूष कहंता। विप्र पूज्य गावहिं सब संता।।Þ(अरण्यकाण्ड दोहा- ३३ के नीचे) को निकाल देना ही उचित होगा, क्योंकि ये पंक्तियां गोस्वामी तुलसीदास जी की लिखी नहीं लगतीं। इसी प्रकार अनुसुइया और सीता के संवाद में Þवृद्ध रोगबस जड+ धनहीनाß से लेकर दोहा-५(क) तक (Þबिनु श्रम नारि परम गति लहई। पति व्रत धर्म छाडि+ छलß को छोड+ कर) कुछ ऐसी चौपाइयां है, जो गोस्वामी जी की लिखी हुई नहीं लगतीं।

सीता की अग्नि परीक्षा (दोहा-१०८ के ऊपर की दो अर्द्धालियों से लेकर दोहा १०९ (क) के ऊपर तक की) और भगवान राम द्वारा वटवृक्ष की ओट से बालि का वध करना भी गोस्वामी जी द्वारा रचित नहीं लगते हैं। इसका प्रमाण रामचरितमानस में ही उपलब्ध है।

मेरी आपसे करबद्ध प्रार्थना है कि आप मेरे सुझाव पर विचार करें और तद्नुसार रामचरितमानस का प्रकाशन करें। अतीत में भी आपने छोटे-मोटे संशोधन किये हैं।

मेरा व्यक्तिगत मत यह है कि किसी कवि की रचना में किसी प्रकार का सुधार करने का अधिकार किसी को भी नहीं है। परन्तु उसके साथ ही, यह बात भी उतनी ही महत्वपूर्ण है कि कोई ऐसी रचना किसी के नाम से प्रकाशित या प्रचारित नहीं होनी चाहिए, जिसे उसने लिखा ही नहीं हो।

अतं में मैं आपका ध्यान भारतीय दण्ड विधान संहिता की धारा-१५३ (ए) की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ, जिसमें स्पष्ट उल्लेख है कि हम किसी ऐसे साहित्य का प्रचार प्रसार नहीं कर सकते, जिसकी वजह से जातीय विद्वेष फैलने की आंशका हो। समय बदल रहा है, लोग अपने अधिकारों को समझ रहे हैं, हमें उन्हें ध्यान में रखना होगा। गोस्वामी तुलसीदास जी महाराज जन-जन के कवि हैं, किसी एक वर्ग के नहीं। अगर हमने न्याय नहीं किया तो गोस्वामी तुलसीदास का रामचरितमानस केवल पुस्तकालय की शोभा बढ+ाने वाला ही रह जायेगा। रामकथा को तो कोई समाप्त नहीं कर सकता, वह तो हम सभी की श्वांस में बसी हुई है, लेकिन अगर रामकथा के बहाने हम समाज में विष बोने का काम करेंगे, तो वह हमारे लिए घातक होगा। इस संबंध में अगर आप और कुछ चर्चा करना चाहते हैं, तो मुझे आपसे बातचीत करके बड+ी खुशी होगी।

जय सिया राम, भवदीय, राम सागर शुक्ल

लखनऊ दिनांक ०८.०९.२००६

मैने उनके पत्र के उत्तर में निवेदन किया कि चूंकि ज्यादातर लोग गीताप्रेस की प्रति पढ+ते हैं, अत: अच्छा होगा आप थोड+ा बहुत संशोधन कर लें, क्योंकि अब यह तय हो गया है कि इन अंशों को गोस्वामी जी ने नहीं लिखा है।

मुझे गीता प्रेस के उत्तर की प्रतीक्षा है।

नई दिल्ली से प्रकाशित जनसत्ता (०२.०२.२००६) में एक समाचार प्रकाशित हुआ। यह समाचार, समाचार एजेंसी भाषा के लखनऊ के ब्यूरो प्रमुख पंडित प्रमोद गोस्वामी द्वारा भेजी गई रिपोर्ट पर आधारित है। पाठकों की सुविधा के लिये इसे अविकल उद्धृत किया जा रहा है।

रामचरितमानस के संबंध में किये गये एक शोध से यह रहस्य खुला है कि Þढोल गंवार, शूद्र पशु नारी, ये सब ताड+ न के अधिकारीß जैसी अर्द्धालियां रामचरितमानस के रचयिता तुलसीदास की रचनाधार्मिता से बिल्कुल मेल नहीं खातीं। ऐसा लगता है कि उनके विरोधियों और आलोचकों ने कालांतर में यह जोड+ ा।

यह निष्कर्ष उस शोध निबंध का है, जो मानस के दो सौ वरिष्ठ समालोचकों और पिंगल शास्त्र के विद्वानों के विचार मंथन पर आधारित है। प्रसार भारती के पूर्व अपर महानिदेशक और रामचरितमानस के अध्येता राम सागर शुक्ल ने वे वजहें जताई हैं, जिनसे यह लगता है कि रामचरितमानस के मूल पाठ में समय-समय पर कुछ अंशों को जोड+ ा गया होगा। उनके मुताबिक विभिन्न प्रकाशकों से मिले मानस के संस्करणों में सैकड+ों की संख्या में पाठ भेद है। अधिकांश संस्करणों में मानस के आठ काण्ड हैं, जबकि कुछ संस्करणों में से लवकुश काण्ड को निकाल दिया गया है। ऐसे में मानस का शुद्ध और मानक पाठ क्या है, यह तय कर पाना कठिन है।

उनका मानना है कि रामचरितमानस एक कालजयी रचना है, पर इसका तात्पर्य यह नहीं कि मानस में अगर बाद में किसी ने कुछ जोड+ दिया हो, तो उसे भी कालजयी मान लिया जाये। उन्होंने रामचरितमानस में बाद में भी कुछ जोड+ -घटाव की आंशका को रेखांकित करते हुए कुछ चौपाइयों का भी उल्लेख किया, जिसमें अरण्यकाण्ड की Þपूजहि विप्र सकल गुण हीना। सूद्र न गुन गन ज्ञान प्रवीना। विप्र निरक्षर लोलुप कामी। निराचर सठ वृषली स्वामी। यदपि जोषिता नहि अधिकारी। अवगुन आठ सदा उर रहहीं, आदि हैं।

शुक्ल का कहना है Þगोस्वामी की हस्तलिखित कोई प्रति उपलब्ध नहीं है। उस काल में रचनाकार अपनी रचना तैयार कर लेते थे और बाद में प्रतिलिपिकार उनकी प्रतियां बनाते थे। इस प्रक्रिया में कुछ छूटना, कुछ जुड+ ना या कुछ बदल जाना असंभव नहीं लगता। पाठ भेद की यह एक प्रमुख वजह है।

शुक्ल का कहना है कि रामचरितमानस में कुछ भी प्रक्षिप्त नहीं है, यह कहना तर्क संगत नहीं लगता। जब ‘‘लव कुश काण्ड’’ जैसा पूरा काण्ड प्रक्षिप्त हो सकता है, तो शेष के सात काण्डों में कुछ अर्धालियां प्रक्षिप्त हों, तो इसमें कोई आश्चर्य नहीं होना चाहिए।

उन्होंने अपने दावे को सही ठहराते हुए, पिंगल शास्त्र के विद्वान डॉक्टर जगदीश प्रसाद कौशिक के ‘‘काव्य दर्पण’’ का उदाहरण देते हुए कहा कि चौपाई चार चरणों का छन्द है। प्रत्येक चरण में १६ मात्रायें होती हैं। मानस में १०३ चौपाइयां, केवल दो अर्धालियों की हैं। गोस्वामी जी जैसा

समर्थ कवि दो अर्धालियों की चौपाई लिख कर छन्द भंगिता की भयंकर भूल कैसे कर सकता है। स्पष्ट है कि प्रतिलिपिकार की स्मृति से शेष अर्धालियां विस्मृति के गर्त में चली गईं, जिसमें बाद में किसी ने अपने हिसाब से कुछ जोड+ दिया है।

रामचरितमानस के पाठ निर्धारण में काशिराज संस्करण का योगदान अमूल्य माना गया है। इसके सम्पादक विश्वनाथ मिश्र ने पाठ भेदों और प्रक्षिप्त अंशों के संदर्भ में अपने विश्लेषण में माना है कि मानस में ''प्रक्षिप्त अंश'' लिखने की परम्परा गोस्वामी के अवसान के बाद ही शुरू हो गई थी। इसमें आश्चर्य नहीं कि उसी अवधि में कुछ ऐसे अंश जोड+ दिये गये हों, जो गोस्वामी जी के विचारों से बिल्कुल ही मेल नहीं खाते।

इसी सन्दर्भ में एक व्यंग्य कविता का उल्लेख समीचीन लगता है।

'राम का देश निकाला'

आज सुबह,

अखबारों में खबर छपी थी-

Þराम का दूसरा वनवासß

खबर पढ+ कर,

पक्षिराज गरूड+ चकराए,

आवेश में,

सुनहले पंखों को फैलाए,

उत्तेजित होकर टेलीफोन का चोंगा उठाया

तेजी से एक नम्बर लगाया-

हलो ! कागभुसुंडी जी !

आपने तो मुझे खूब बेवकूफ बनाया।

आपने कहा था- भगवान सरयू में समा गए,

अयोध्या में राम-राज्य हो गया।

पर आज अखबारों में कोई और रामायण छपी है।

कहानी सच ही लगती है,

क्योंकि बहुत प्रतिष्ठित शायर ने लिखी है।

पक्षिराज ने अपना कथन जारी रखा-

भुसुंडी जी, आपने जब कथा सुनायी थी

उसी समय मुझे शक हुआ था।

वह राम-राज्य कैसा ?

जहां जीवन के अन्तिम क्षणों में,

भगवान को भी नदी में विलीन होना पड+ा।

परन्तु, कथा चूंकि आपने सुनायी थी,

मैं विवश था- विश्वास करने के लिए।

सुनकर कागभुसुंडी ने कहा-

अच्छा तो अब आपको भी शंका हो गई,

अभी तो मैं जरा जल्दी में हूँ,

कभी मिलिए, सब कुछ विस्तार से बताऊँगा

कुछ भी नहीं छिपाऊँगा

आपको असली रामायण सुनाऊँगा।

हे खगराज ! बुरा मत मानिये,

मेरा इरादा कतई आप से छल करना नहीं था।

यह धंधे का उसूल है,

जनता जो कुछ सुनना चाहती है,

वही सुनाना पड+ता है।

अखबार में छपी खबर के बारे में

कुछ टिप्पणी नहीं करना ही ठीक है।

प्रगतिशील लेखकों की मजबूरी है,

उनकी सोच रेल की एक ही पटरी पर चलती है।

उन्हें यह तो दिखायी देता है-

Þपाथर पूजे, जो हरि मिलें, तो मैं पूजूं पहाड+ ß,

परन्तु उन्हें यह नहीं दिखायी देता कि-

Þकंकड+ पत्थर जोड+ कर, मस्जिद लिया बनाय

ता चढि+ मुल्ला बांग दे, क्या बहिरा हुआ खुदायß

हे पन्नगारि ! आप ही बताइये,

वृक्षों, लताओं, पशु-पक्षियों से,

सीता का पता पूछने वाले,

जानकी की खोज में,

गिरि कन्दराओं और वन-वन भटकने वाले राम,

कभी सीता को निर्वासित भी कर सकते हैं ?

परन्तु ऐसा हुआ है,

यह सच है।

हे खगराज ! क्या आपको नहीं लगता कि

राम-राज्य की नींव सीता की अग्नि-परीक्षा पर रखी गई ?

हे विहंगवर ! आपको याद होगा,

भगवान राम वनवास के बाद

जब लंका से लौट रहे थे

उनका विमान गंगा तट पर उतरा था,

माता जानकी गंगा पूजन के लिए चली गईं,

और भगवान राम भारद्वाज आश्रम गये

इससे पहले उन्होंने हनुमान से कहा

हे पवनसुत ! भेष बदल कर

जरा अयोध्या जाओ,

वहां हालात कैसे हैं, पता कर आओ।

गरूड+ जी यहां तक तो कहानी ठीक-ठाक चलती है,

पर परेशानी यहीं से शुरू होती है।

अयोध्या से लौट कर

हनुमान ने जो खुफिया रिपोर्ट दी

वह आश्चर्यजनक थी।

कुछ लोगों का ख्याल है कि

भगवान राम लौटकर अयोध्या गये ही नहीं।

पर कथाकरों की भी मजबूरी है

लोगों को दु:खान्त नहीं

सु:खान्त कथा ही अच्छी लगती है

और वे लगातार वही रामायण सुना रहे हैं

जो हमें अच्छी लगती है।

मित्रों मैं जो कुछ भी कह रहा हूँ

एकदम गप्प नहीं है

आप सहमत हों,

यह जरूरी नहीं है।

हे पक्षिराज !

आपको याद होगा चित्रकूट से पहले

भगवान राम ने महर्षि वाल्मीकि से पूछा था-

Þमैं कहाँ रहूँ ?ß

उत्तर में महर्षि वाल्मीकि ने पहले

उन भवनों का उल्लेख किया था

जहां राम रह सकते है-

Þकाम कोह मद मान न मोहा

लोभ न छोभ न राग न द्रोहा

जिनके कपट दम्भ नहिं माया

तिनके हृदय बसहु रघुराया।

येहि विधि मुनिवर भवन दिखायेÞ।

इसके बाद महर्षि ने राम को आदेश दिया कि-

वे आश्रम में जाकर रहें-

Þकह मुनि सुनहु भानुकुल नायक,

आश्रमों में निवास करने के बाद

क्या आपको नहीं लगता कि

भगवान राम महर्षि वाल्मीकि द्वारा बताये गये

भवनों को ढूंढ रहे हैं

वैसे तो आप जानते ही हैं

राम जन-जन में रहते हैं

राम मन्दिर में रहते हैं

राम मस्जिद में रहते हैं

राम गुरूद्वारा और चर्चा में रहते हैं

राम रोटी में रहते हैं

राम मिट्टी में रहते हैं

मित्रों क्या आपको नहीं लगता कि

रामकथा के ये सूत्र लुप्त हो गये हैं ?

हम अपनी-अपनी सुविधा की रामकथा जी रहे हैं ?

निष्कर्ष

रामचरितमानस के निर्मलीकरण का अभियान केवल एक बौद्धिक व्यायाम नहीं है। एक शोध के अनुसार लगभग दस लाख लोग सुन्दरकाण्ड का पाठ करते हैं, हनुमान जी को प्रसन्न करने के लिये। जैसा कि पहले कहा जा चुका हैं। मानस की चौपाइयां मंत्रों की तरह हैं। सुन्दरकाण्ड का पाठ करने वाले हनुमान जी को प्रसन्न करने के लिए पाठ करते है, उसमें से सबकी मनोकामना देर सबेर पूरी होती है। परन्तु इसके साथ ही पाठ करने वाले Þढोल गंवार सूद, पशु, नारी, सकल ताड+ ना के अधिकारी, का भी पाठ करते हैं। दस लाख लोग प्रतिदिन इस चौपाई को पढ+ ते हैं। इसका सामूहिक प्रभाव समाज और राष्ट्र पर पड+ ता है। पहले की तुलना में अब अधिक लोग सुन्दरकाण्ड पढ+ ने लगे हैं। इसका परिणाम यह हो रहा है Þढोलß अर्थात भारतीय संगीत, दिन प्रतिदिन कर्ण कटु होता जा रहा है। Þगंवारß अर्थात सीधे सादे गांव के लोगों की जिन्दगी नरक बनती जा रही है। शूद्र अर्थात दलितों की रक्षा के लिए कितने उपाय किये जा रहे है, परन्तु उनके खिलाफ अत्याचार की घटनायें बढ+ ती जा रही हैं। पशुओं का महत्व विशेषकर दूधारू पशु हमारी निर्दयता के शिकार हो रहे हैं। नारियों का सम्मान दिन-प्रतिदिन कम होता जा रहा है। इन सबको रोकने के लिये इस चौपाई का पाठ बन्द करना होगा।

हिन्दी के प्रख्यात साहित्यकार राजेन्द्र यादव का एक साक्षात्कार लखनऊ से प्रकाशित Þदैनिक जागरणß में प्रकाशित हुआ था। उन्होंने कहा था कि गांगेय प्रदेशों का विकास तब तक नहीं हो सकता, जब तक यहां गंगा और रामचरितमानस विद्यमान है। मैने इन दोनों प्रतीकों की दुर्दशा पर उनको पत्र लिखा था और कहा था कि उनकी इच्छा, उनके इसी जन्म में पूरी हो जायेगी। गंगा प्रदूषित हो रही है और पर्यावरण के विशेषज्ञों की भविष्यवाणी है कि यह अगले ही कुछ वर्षो में सूख जायेगी। यही हाल रामचरितमानस का है। रामकथा तो अमर है, परन्तु रामचरितमानस नहीं। अब समाज का एक बहुत बड+ ा वर्ग राम की भक्ति तो करता है, परन्तु रामचरितमानस से कट रहा है। इसका एकमात्र कारण मानस में विद्यमान प्रक्षिप्त अंश हैं।

गंगा कार्ययोजना के तहत गंगा को राष्ट्रीय नदी घोषित कर दिया गया है। इसके निर्मलीकरण पर अरबों रूपये खर्च किये जा चुके हैं और असीमित धनराशि खर्च करने की योजना बन रही है। यह अलग बात है कि गंगा कार्ययोजना का कोई खास प्रभाव नहीं दिखाई दे रहा है। अगर गंगा राष्ट्रीय नदी घोषित हो सकती है, तो रामचरितमानस भी राष्ट्रीय ग्रन्थ घोषित हो सकता है। परन्तु जब तक उसमें अवांछित प्रक्षिप्त अंश विद्यमान हैं, मानस को राष्ट्रीय ग्रन्थ घोषित करने का पुरजोर विरोध किया जायेगा। इसीलिए रामचरितमानस निर्मलीकरण अभियान चलाने की आवश्यकता है। मानस से अवांछनीय प्रक्षिप्त अंशों को निकाल कर शुद्ध करके, इसे राष्ट्रीय ग्रन्थ घोषित किया जा सकता है। इसमें किसी को आपत्ति नहीं होनी चाहिए। अगर कवीन्द्र रवीन्द्र नाथ ठाकुर के गीत Þजनगण मनß के अंश को राष्ट्रगान घोषित किया जा सकता है, अगर शरत चन्द्र चट्टोपाध्याय के वन्देमातरम् में संशोधन करके उसे राष्ट्रीय गीत का दर्जा दिया जा सकता है, तो भारतीय संस्कृति के सारग्रन्थ रामचरितमानस को भी राष्ट्रीय ग्रन्थ घोषित करना सर्वथा उचित होगा। इसी उद्देश्य से मानस के प्रक्षिप्त अंशों को अलग करके यह अभियान चलाया गया है। इसी में गोस्वामी तुलसीदास के सम्मान की रक्षा होगी तथा समाज का कल्याण होगा।

,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,

तुलसी भक्त कामिल बुल्के

फादर कामिल बुल्के को सबसे पहले मैने इलाहाबाद विश्वविद्यालय में देखा था। उन दिनों (१९५९ से १९६५ तक) मैं विश्वविद्यालय का छात्र था। चूंकि मैने बी.ए. में हिन्दी भी ले रखी थी, अत: प्रतिदिन हिन्दी विभाग में जाना पड+ ता था। जहां फादर बुल्के अक्सर आया करते थे। वे रामकथा के बारे में शोध कर रहे थे। उस समय फादर बुल्के के व्यक्तित्व का आकलन करने की न तो मेरी क्षमता थी और न ही मेरी रूचि। बाद में रामकथा और रामचरित के अध्ययन के दौरान उनकी पुस्तक Þरामकथाß का उद्भव और विकासß पढ+ ने का अवसर मिला। उद्भुत ग्रन्थ है। पुस्तक पढ+ ने से ही यह पता लगता है कि फादर बुल्के ने यह ग्रन्थ लिखने में कितना परिश्रम किया होगा। रामकथा के बारे में इतनी प्रमाणिक पुस्तक अन्य कोई नहीं है। फादर बुल्के की Þरामकथाß पढ+ ने के बाद मेरे लिये वे श्रद्धा के पात्र हो गये।

लगभग १५ वर्षो बाद पुन: फादर कामिल बुल्के से मिलने और बात करने का सौभाग्य १९७९ में रांची में मिला। तुलसी जयन्ती का आयोजन था। उस अवसर पर फादर कामिल बुल्के ने कहा कि Þमैं तो ईसाई हूँ, अत: हिन्दू धर्म के आराध्य भगवान राम को केवल महापुरूष मानता हूँ। परन्तु मैं तुलसीदास को भगवान के बराबर मानता हूँ। तुलसीदास को भगवान के बराबर मानने वाला व्यक्ति भारत में मुझे अभी तक नहीं मिला। हाँ इधर बलिया के एक सज्जन ने एक प्रबंध काव्य की रचना की है। उन्होंने तुलसीदास को भगवान राम का अवतार माना है।

फादर बुल्के की रामकथा से यह तथ्य उजागर होता है कि भगवान राम ने बालि को छिप कर नहीं मारा था, बल्कि द्वन्द्व युद्ध में पराजित किया था। इतना ही नहीं, फादर बुल्के ने अपने शोध से यह भी सिद्ध किया है कि सीता की अग्नि परीक्षा नहीं हुई थी। वे रामचरितमानस में इन घटनाओं से संबंधित वर्णन को प्रक्षिप्त मानते थे। धन्य थे कामिल बुल्के। हम हैं कि लकीर के फकीर बने हुए है। सीता की अग्नि-परीक्षा और बालि वध से संबंधित अंशों को जिन्हें बाद में लोगों ने रामचरितमानस में जोड+ दिया था प्रक्षिप्त मानने के लिए तैयार नहीं है। इस तरह के वर्णन से भगवान राम के चरित्र पर तो कलंक लगता ही है, तुलसीदास के यश पर भी धब्बा लगता है। हमें उसकी भी परवाह नहीं है।

हमें विश्वास है कि भविष्य में कोई बुल्के शोध करके रामचरितमनास का निर्मल पाठ प्रस्तुत अवश्य करेगा। वह समय भगवान राम और तुलसीदास दोनों के लिए शापमुक्ति का समय होगा। आज तो यह कहने वालों को सूली पर चढ+ ाने की घोषणा कर दी जाती है कि रामचरितमानस में कुछ अंश है, जिन्हें तुलसीदास ने नहीं रचा था।

,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,

मानस प्रेमी- अलक्सेई बारान्निकोव

अलक्सेई बारान्निकोव रामचरितमानस के अनुपम प्रेमी थे। एक साम्यवादी देश रूस का नागरिक होते हुए भी उन्होंने मानस की जो अलख अपने देश में जगाई, उसके समान अन्य कोई उदाहरण नहीं मिलता है। वे महान हिन्दी प्रेमी और भारत के हितैषी थे। उन्होंने रामचरितमानस का पद्यानुवाद रूसी भाषा में किया है। उनकी महानता को देखते हुए १९९० में उनकी जन्मशती भारत में भी मनाई गई। इसी सिलसिले में ७ अक्टूबर १९९१ को कानपुर में मानस संगम द्वारा तुलसी उपवन में अलक्सेई बारान्निकोव की एक प्रतिमा स्थापित की गई। इसका अनावरण उत्तर प्रदेश के तत्कालीन राज्यपाल बी.सत्यनारायण रेड्डी ने किया। इस कार्य के लिए मानस संगम के संयोजक पं० बद्रीनारायण तिवारी की जितनी प्रंशसा की जाय कम है।

अलेक्सेई बारान्निकोव का जन्म २१ मार्च १८९० में रूस के यूक्रेन नगर के जोलोतोनोशा में एक साधारण मजदूर परिवार में हुआ था। किसी तरह अपनी लगन से उन्होंने १९१४ में स्नातक की उपाधि प्राप्त की। उनके माता-पिता पहले गो-पालन का धंधा करते थे, परन्तु बाद में वे बढ+ ईगिरी से अपनी जीविका चलाते थे।

४.१२.१९५२ को ६२ वर्ष की उम्र में बारान्निकोवका देहावसान हो गया। उन्हें लेनिनग्राद रेलवे स्टेशन से लगभग ८० किलोमीटर दूर कोयारो स्टेशन के पास दफनाया गया। उनकी समाधि पर देव नागरी लिपि में लिखा है-Þभलो भलाइहि पै लहईß बारान्निकोव कभी भारत नहीं आये थे, हालांकि सागर मध्य प्रदेश के एक प्रमुख हिन्दी विद्वान डॉ० लक्ष्मीनारायण दुबे ने मानस, संगम (२३.११.१९९०) में प्रकाशित अपने लेख में कहा है कि बारान्निकोव ने जबलपुर में पं० कामता प्रसाद गुरू से भेंट की थी। परन्तु इस पत्रिका में प्रकाशित राजगोस्वामी के लेख के अनुसार बारान्निकोव के पुत्र पी.बारान्निकोव जो १९९० में भारत आये थे, ने बताया कि उनके पिता को भारत आने का अवसर कभी नहीं मिला, परन्तु वे भारतीय संस्कृति से पूरी तरह परिचित थे।

एलेक्सई बारान्निकोव ने रामचरितमानस का अनुवाद रूसी भाषा में दोहा और चौपाई, छन्दों में ही किया है। वे संस्कृत, हिन्दी, उर्दू, बंगला और अवधी भी अच्छी तरह जानते थे। उन्होंने रूसी हिन्दी-शब्दकोश की भी रचना की है।

बारान्निकोव ने बाबू श्यामसुन्दरदास द्वारा सम्पादित और १९२२ में प्रयाग से प्रकाशित रामचरितमानस का रूसी भाषा में अनुवाद किया। इसका प्रकाशन १९४८ में ही हो गया था। बारान्निकोव ने मानस के अनुवाद के अतिरिक्त तुलसीदास और रामायण के बारे में भी कई लेख लिखे हैं। Þहिन्दी साहित्य का संक्षिप्त विवरण,ß प्रेम सागर और उसके रचयिता प्रेमचन्द्र का सप्त

सरोज, तुलसीदास और उनका युगß उनकी कुछ अन्य प्रमुख रचनाएं हैं। बारान्निकोव ने अनुवाद करते समय, भारतीय काव्य शास्त्र के सिद्धान्तों को पूरा ध्यान में रखा। इसका परिणाम यह हुआ है कि अलंकारो, मुहावरों आदि का अनुवाद करते समय अर्थ का अनर्थ नहीं हुआ है। उन्होंने मानस की भूमिका में लिखा कि तुलसी ने समाज का हित ध्यान में रखकर उस समय प्रचलित कई धार्मिक पन्थों की निंदा की। उन्होंने विदेशी आक्रमणों से परास्त और निराशाग्रस्त भारतीय समाज को नई दिशा दी। उन्होंने लिखा कि गोस्वामी तुलसीदास को गरीबी और दरिद्रता का बड+ा कटु अनुभव था। मानस के इस रूसी अनुवाद की भूमिका का हिन्दी में रूपान्तर लखनऊ विश्वविद्यालय के तत्कालीन हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ० केसरी नारायण शुक्ल ने १९५५ में प्रकाशित किया।

बारान्निकोव के अनुसार तुलसी ने जिस आदर्श राजा का चित्र उपस्थित किया, उसमें उसकी जनता के प्रति व्यापक सहानुभूति प्रस्फुटित हुई। ऐसे साहित्य मनीषी और भारत प्रेमी एलेक्सेइ बारान्निकोव को शत... शत... प्रमाण।

,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,

सन्दर्भ- सामग्री

(१) वाल्मीकि रामायण- प्रकाशक-गीता प्रेस, गोरखपुर

(२) रामचरितमानस- तुलसीदास कृत- गीता प्रेस, गोरखपुर

(३) रामायण- प्रकाशक- नवन किशोर प्रिटिंग प्रेस, लखनऊ

(४) रामचरितमानस- सम्पादक-स्वामी रामभद्राचार्य, चित्रकूट

(५) रामचरितमानस की पाण्डुलिपियां- राजापुर (चित्रकूट), पसका नरहरिदास आश्रम जिला गोण्डा और पाण्डुलिपि कार्यालय, इलाहाबाद

(६) रामवन गमन स्थलों की यात्रा और स्थानीय लोगों से विचार विमर्श से प्राप्त सामग्री।

(७) अंखियन देखी अयोध्या लेखक-सरनाम सिंह सूर्यवंशी, लखनऊ।

(८) राम पथ के मन्दिर- लेखक- एस०गुरूमूर्ति

(९) छत्तीसगढ+ अस्मिता संस्थान द्वारा प्रकाशित छत्तीसगढ+ की रामायण।

(१०) रामावतार शर्मा कृत- जहं जहं राम चरन चलि जाहीं।

(११) २०० पत्र पत्रिकायें

(१२) तेलुगु रंगनाथ रामायण-हिन्दी अनुवाद- प्रकाशक-बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना।

(१३) कंब रामायण- हिन्दी अनुवाद- प्रकाशक-बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना।

(१४) चन्द्राकर ग्रन्थावली- लेखक- डॉ० चन्द्राकर, लखनऊ।

(१५) रामचरितमानस- प्रकाशक- राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, दिल्ली।

(१६) राम कौन- लेखक- श्रीराम मेहरोत्रा, लखनऊ।

(१७) श्रीरामचरितमानस- सम्पादक- पंडित राम किशोर शुक्ल, अयोध्या।

(१८) रघुवंशम्- कालिदास- प्रकाशक चौखंभा प्रकाशन, वाराणसी।

(१९) महाभारत- प्रकाशक, गीता प्रेस, गोरखपुर।

(२०) रामायण आनन्द प्रकाश- मुद्रक-लक्ष्मी नारायण प्रेस, मुरादाबाद। (सौजन्य- श्री प्रदीप मेहरोत्रा, लखन)

,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,